ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

जुलाई-अगस्त 2021, वर्ष 5, अंक 5

विशेष आभार

अशोक श्रीवास्तव

(संरक्षक – भोजपुरी साहित्य सरिता)

डायरेक्टर	—	अशोक श्रीवास्तव एसोसिएट्स प्रा०लि०
अध्यक्ष	—	पूर्वांचल भोजपुरी महासभा
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	—	अखिल भारतीय कायस्थ महासभा
मुख्य सम्पादक	—	अशोक प्रहरी
प्रेरक	—	पूर्वांचल-बिहार राजनीतिक मंच
संस्थापक	—	आर०डी०मेमोरियल पब्लिक स्कूल
संरक्षक	—	सुभाष युवा मोर्चा
अध्यक्ष	—	विश्व भोजपुरी सम्मलेन (गा०इकाई)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	—	सुभाषवादी भारतीय समाजवादी पार्टी
संरक्षक	—	लेबर लॉ एडवाइजर एसोसिएसन उ० प्र०
संस्थापक	—	पूर्वांचल सेना
कारपोरेट कार्यालय	—	552-ए, मेन रोड घूकना, पार्वती धर्मशाला के पास, मेरठ रोड, गाजियाबाद मो०-9811102743

विशेष आभार

अनामिका वर्मा

(संरक्षक, भोजपुरी साहित्य सरिता)

लोक गायिका
संकलनकर्ता, कोहबर काव्य
संचालिका, सुर सखी

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)
डी के सिंह (पटना)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' /6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

अघोर पंथ– सामान्य परिचय – डॉ. जयकान्त सिंह 'जय' /7–9
भोजपुरी समीक्षा के बढ़त डेग– डॉ. सुनील कुमार पाठक /18–19
आपन लइकाई – तारकेश्वर राय 'तारक' /28
कजरी कहीं इतिहास न बन जाओऽ– अखिलेश अरुण /30–31
वीर पुत्र आजाद– विकास मिश्रा /32
भोजपुरी काव्य में सौन्दर्य बोध के दिशा विस्तार– हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' /39–43

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

परवा कुल बरहुँआ क कवि पंडित हरनाम बाबा क स्मृति शेष रचना – हीरालाल द्विवेदी 'लाल' /10–12
बतकूचन–सौरभ पाण्डेय /13–14
आपदा में अवसर –जियाउल हक /14
उपर से ठाट बाट– बिम्मी कुँवर सिंह /15
विरन आ कंटहा पंडित–डॉ रजनी रंजन /19–21

• कविता/गीत/गजल

वारि जाऊँ ए सखी – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /9
गजल–संगीत सुभाष /12
गजल–विद्या शंकर विद्यार्थी /16
दुआरी के अंदर नाचता मोर–सारिका भूषण /16

• कविता/गीत/गजल

बचावे के पड़ी– विनोद पाण्डेय /17
नया सवेरा– विमल कुमार /17
प्रेम के बन्हन– संजय कुमार ओझा /22
नेह नाता– सुरेश कांटक /22
माई– राजेश कुमार जैसवारा /23
संस्कार देखअ– कुमार मंगलम रणवीर /25
गीत – सन्नी भारद्वाज /29
लतखिंचुअन के पंजरी – आकाश महेशपुरी /29
सावन भांदो फेल भइल ह– रत्नेश तिवारी 'चंचल' /32
तुलने नइखे– दिलीप पैनाली /33
समय नाही फिर दोहराई– डी के सिंह गीतकार /33
गीत– योगेन्द्र शर्मा 'योगी' /34
गीत– कुमार जीवन सिंह /34
गीत– निर्भय नीर /44

• अनूदित साहित्य

चाणक्य नीति– दिनेश पाण्डेय /24–25
शिखरन से आगे– अशोक लव /26–27
कुबेर के सराप– डॉ उमेश प्रसाद सिंह /35–38

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

बेचैन 'भाई क प्यार'– डॉ अवधेश कुमार अवध /23

• असि गंग के तीर

बंगड़ गुरु के मिलली नानी– डॉ. सुमन सिंह /45–46

• एह अंक के चित्रकार : सुमन पाण्डेय /34

साहित्यकार के माने–मतलब

साहित्य एगो अइसन शब्द ह जवना के लिखित आ मौखिक रूप में बोले जाये वाली बतियन के देस आ समाज के हित खाति उपयोग कइल जाला। ई कल्पना आ सोच–विचार के रचनात्मक भाव–भूमि देवेला। साहित्य सिरजे वाले लोगन के साहित्यकार कहल जाला आ समाज आ देस अइसन लोगन के बड़ सम्मान के दीठि से देखबो करेला। समय के संगे एहु में झोल–झाल लउके लागल बा। बाकि एह घरी कुछ साहित्यकार लो एगो फैसन के गिरफ्त में अझुरा गइल बाड़न। एह फैसन के असर साहित्यिक क्षेत्र में ढेर गहिराह बले भइल बा। अइसनका लो दोसरा के समान के आपन बोले में जरिको देर ना करेला। उनुका चेला लो साहित्यो में ढेर बा। पछिला छव महीना से एह लोगन के मिरगी के दउरा परि रहल बा आ ई लो अपना देश, आपन भाषा आ अपनही लोगन के गरियावे में अझुराइल बा। एक जने त भोंपू लगा के कुछ लोगन के जुटा के एगो पुरनिया के इजत के छीछालेदर कइलें आ खुद कतना मौलिक हवें इहो सभे के पते बा। ओह जुटलका लोगन में कुछ लो अइसनो रहे जेकर खुदो के कमीज पर कम दाग नइखे लागल आ उ लो रिन सुप्रीम से खूब रगर–रगर के धोवलो बा बाकि दगिया के रंग अबहियों चटके देखाता। कुछ दिन पहिला रोटी–पानी लेके अइसने काम के बचाव करत देखइने, ओही काम के वकालत जेकरा ला भोंपू लगा के गरियावत रहलें। मने बिरोधों मुँह देख–देख के, जात देख–देख के, छेत्र देख–देख के।

एह घरी कुछ अंतरराष्ट्रीय टाइप के शायर लोगन के एह फैसन के गहिराह असर भइल बुझाता। बुद्धू बकसवा में आपन चउखटा उघार के अपनही देश के उलटा–सीधा बोले में जरिको नइखे सरमात। पानी पी–पी के उलटा सीधा बोल रहल बाड़ें। बुझता इनका के प्रवक्ता के नोकरी भेंटा गइल बा। अब मति कहब लोगिन कि उनुका उपर बोले भा लिखे क हमार ओकत नइखे। भुलाई जनि, उनुको से उनके मौलिकता के साटिक–फिटिक माँगल जा सकेला। का पता दोसरा के रचना के दू–चार शबद भा एक–दू लाइन एने–ओने क के आपन नाँव लिख देले होखें भा गूगल बाबा के खजाने पर हाथ साफ कइले होखें, कुछो बिसवास का संगे कहल नइखे जा सकत। इहो हो सकता कि दोसरा के डायरी भा फाइले उड़ा देले होखे, एह फैसन परस्तन खाति कुछो असंभव नइखे।

अइसन फैसन परस्तन के एगो बेमारी जरूर रहेले जवना के नाँव ह अभिव्यक्ति के स्वतन्त्रता। ई पता ना कि बेमारी ह भा कवच, फट ओढ़ लेवे ला लो। अइसन लोगन के 'जय श्री राम' के बोल सुनाते डर लागे लगेला। कुछ लो अइसन साहित्यकार भा शायर लोगन बाउरो बाति पर कम्मल ओढ़ि के सुत जाला, बोलला पर मंच से छुट्टी होखे के डरे। मने जयचंद आ विभीषण अथिराह बले देश के सनमान पलीता लगा रहल बाड़े। कुछ लो त भोरही से दना–पानी लेके अपना देश भा समाज के कोसे में जुटल देखा जाला। अइसन लोगन के पर–पलिवार के लोग कतौ आ केहुओ के जर–जोरू–जमीन पर हाथ साफ करत भेंटा जाला। फेर जब कबों सरकारी चाबुक चलेला त अइसनका लो कुछ अउरो खटराग अलापे लागेला। जवना के इहाँ समरसता भा धरमनिरपेक्षता के नाँव दीहल गइल बा। अइसना में केहुओ के ई मन परल कि 'उ करें त रासलीला आ हम करें त करेक्टर ढीला' बाउर ना कहल जा सकेला।

अइसन कुल्हि अझुरहट के बादो देर–सबेर सही भगवान ओह लोगन के बुद्धि–शुद्धि के खाति कुछ न कुछ त जरूर करिहें। एही देर सबेर का चलते ई अंको पछुआ गइल बाकि उछाह कम नइखे भइल। उमेद बा कि हलिए सब कुछ सझुरा जाई। भोजपुरी साहित्य सरिता के चाल आपन सोभाविक गति ध लीही।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

भागवत-रस

वेद-सुरतरु में पकल लटकल फल,
सुकदेव मुहवाँ से अमृत बहल बा।
ऋषिमुनि सुत सनकादि के विचार एमे,
राजा महराजा भूत प्रेत के टहल बा।।
देवी देव दनुज मनुज गुरु ज्ञानी मानी,
सगरो भरल भगवान के कहल बा।
भागवत रस के पिअ हो भाई झुकिमिलि,
पिअ हो कुबेर बेर बेर ई लहल बा।।
पेंड़वा की जरी से पुलुइया ले रस होला,
फलवा के अलगा इज्जति कुछु अउरे।
दुधवा की भितरे भरल बाटे सव रस,
घिउवा के अलगा इज्जति कुछु अउरे ।
उखिया की पोर पोर भरल मधुर रस,
मिठवा के अलगा इज्जति कुछु अठरे।
वेद आ पुरान में भरल बाटे सब रस,
भागवत-रस के इज्जति कुछु अउरे।।

■■

कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

जन्म : 21 जून 1935

मृत्यु : 25 फरवरी 2019

जन्म–स्थान
भिंडा मिश्र, भाटपार रानी
देवरिया (उ.प्र.)

अघोर पंथ : सामान्य परिचय

डॉ जयकान्त सिंह 'जय'

सनातनी हिन्दू धर्म समय, समाज आ साधक लोग के ज्ञानानुभूति अउर तप–साधना के प्रभाव वश कई गो पंथ अथवा सम्प्रदाय के रूप में आकार लेत आइल बा। एकरा में 'पंथ' मतलब साधक भा सिद्ध संत लोग के बतावल साधना के मार्ग आ सम्प्रदाय मतलब ओह मार्ग का प्रवर्तक आ अनुयायी समूह द्वारा जन मानस खातिर सही मार्ग सुझावे वाला धार्मिक अथवा आध्यात्मिक संस्था। ई अघोर पंथ भा सम्प्रदाय भी सनातनी हिन्दू धर्म का एगो खास तरह के तप–साधना के माध्यम से जीवन, जगत आ मृत्यु का रहस्य के भेद जाने आ मोक्ष पावे वाला साधकन के शाखा ह।

'अघोर पंथ' के साधक भा सिद्ध लोग के 'अघोरी' भा 'औघड़' कहल जाला। एह अघोरी लोग के अनुसार एह पंथ के प्रवर्तक भगवान शिव हवें। एकर संबंध शैवमत का पाशुपत भा कालामुख सम्प्रदाय से बतावल जाला। भगवान शिव के आ उनका अवतार के मानेवाला अनुयायी लोग शैव कहाला आ एह शैव मत के मानेवाला लोग के चार गो प्रमुख सम्प्रदाय–शैव, पाशुपत, कापालिक आ कालामुख में पाशुपत सबसे पुरान शाखा ह। उहँवे कालामुख सम्प्रदाय के अनुयायी लोग महाव्रतधारी कहल जालें। ई लोग नर–कपाल में ही भोजन, पानी, मदिरा आदि सबके सेवन करेलें।देह पर चिता का भस्म के लेप लगावेलें। एह शैवमत के मूल रूप ऋग्वेद में रूद्र के आराधना में बा। अथर्ववेद में शिव के भव, शर्व, पशुपति, भूपति आदि कहल गइल बा। वामन पुराण (पाशुपत, कापालिक, कालामुख आ लिंगायत शाखा), बसव पुराण आदि में शैव मत, ओ. करा एह शाखा आ उप–शाखा–शाक्त, नाथ, दसनामी, भाग आदि के उल्लेख मिलेला। शैव साधु लोग के नाथ, अघोरी, औघड़, अवधूत, योगी, सिद्ध आदि कहे के पुरान परम्परा बा। शैव लोग खातिर बार–बार अघोरी भा औघड़ शब्द के प्रयोग आ अघोर पंथी लोग के शैव साधु लोग का संस्कारन से खात मेल एक दोसरा से जोड़ेला। एकरा में मुख्य संस्कार बा– एकेश्वरवादी भइल, सिर पर जटा धारन कइल, रात्रि आ निर्जन– अस्मसान में तांत्रिक अनुष्ठान कइल, हाथ में कमंडल, त्रिशूल भा चिमटा लिहल, देह पर चिता के भस्म रमावल आदि। शैव ग्रंथ 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' में रूद्र का मूर्ति के 'अघोरा' कहल गइल बा।

'अघोर पंथ' के 'अघोर' शब्द 'घोर' शब्द में 'अ' उपसर्ग लगवला से बनल बा। 'घोर' के अर्थ होला– कठिन, अटल, असहज, जकड़ल आदि आ ओकरा में अ उपसर्ग जुड़ला से ओकर अर्थ हो जाला–सहज, सरल, आसान, स्वाभाविक,आदि। एह तरह से अघोर पंथ तप–साधना के स्वाभाविक, सहज आ सरल मार्ग वाला सम्प्रदाय ह। अघोर पंथी साधक लोग के अनुसार हर आदमी प्रकृति से सहज सरल होला। बालक जइसे जइसे सेयान होला ओकरा दुनियादारी से जुड़ल नीमन बेंजाय, अच्छा बुरा आ सही गलत में फरक करे सहजे आ जाला। बाकिर काया आ माया से जुड़ल भंवजाल में अझुराते ओकरा भीतर तरह तरह के विकार पैदा होखे लागेला आ तब ऊ सहज सरल आ स्वाभा. विक ना रह के असहज, कठिन, अस्वाभाविक मतलब 'घोर' रूप में आ जाला। ओकर मूल प्रकृति अघोर मतलब सहज सरल ना रह जाए। अइसन स्थिति में सिद्ध अघोरी अपना तप साधना के जरिए फेर अघोर अवस्था के प्राप्त करेलें। जवन साधना मुख्य रूप से निर्जन स्थान, अस्मसान घाट पर, शव साधना के एगो खास क्रिया के जरिए कइल जाला। जवना के माध्यम से स्वयं का मूल अस्तित्व के भिन्न–भिन्न चरन का प्रतीकात्मक रूप में अनुभव कइल जाला।

कुछ विद्वान लोग के मत बा अघोर पंथ नाथ सम्प्रदाय का पहिले से अस्तित्व में रहे। बाकिर यूरोपीय विद्वान हेनरी बालफोर के अनुसार एह पंथ के प्रवर्तक योगी गोरखनाथ रहलें आ उनकर शिष्य मोतीनाथ एकरा प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभवलें। उहँवे विलियम क्रुक अघोर पंथ के सबसे पहिले राजपुताना राजस्थान के आबु पर्वत पर प्रवर्तित आ प्रचलित भइल फेर

गुजरात, नेपाल आ समरकंद जइसन जगह तक फइलल। एह अघोर पंथ के अघोरी साधु शव साधना करेलें, मुर्दा के मांस खालें। मुर्दा का खोपड़ी में खाना खालें आ पानी–मदिरा पीयेलें। जवन इनका के शैव मत के कालामुख आ कापालिक लोग का परम्परा से जोड़ेला। एक ओर जहाँ भगवान शिव के अघोर पंथ के प्रवर्तक बतावल जाला उहँवे अवधूत दत्तात्रेय के शिव के अवतार मानल जाला जे अघोर पंथ के सिद्ध गुरु रहलें। बल्कि उनका के शिव सहित ब्रह्मा आ विष्णु के संयुक्त अवतार बतावल जाला। अघोर पंथी कीनाराम के अनुसार शिव स्वयं में सम्पूर्ण हवें आ समस्त जड़ चेतन में व्याप्त बाड़ें। एह देह आ मन के साध के जड़ चेतन आ सब स्थितियन के अनुभव क के मोक्ष पावल जा सकऽता।

अघोर मत के प्रचार–प्रसार में बाबा कीनाराम के बहुत बड़ भूमिका बा। एह से उनका बारे में विस्तार से चर्चा कइल जरूरी बा। कीनाराम के जनम बनारस जिला के चंदौली तहसील का रामगढ़ गाँव के क्षत्रिय रघुवंशी परिवार में संवत् 1684 विक्रमाब्द में भइल रहे। बचपन से ही उनकर रूचि धार्मिक रहे। जहाँ रहस राम नाम के जप करत रहस। बारह बरिस के उमिर में उनकर बिआह हो गइल रहे। जहिया उनकर गवना होखे के रहे ओकरा एक दिन पहिले ऊ घर के लोग से दूध भात खाए के मँगलें। तब घर के लोग एकरा के अशुभ बतावल।तबो ऊ दूधे भात लेके खइलें आ कुछे छन बाद उनका पत्नी का मरे के खबर पहुँचल। एकरा बाद ऊ विरक्त होके घर से चलके गाजीपुर में रहे वाला रामानुज संप्रदाय के महात्मा शिवाराम जी के सेवा टहल में लाग के उपदेश देवे के आग्रह कइलें। शिवाराम जी गंगा नहाये चललें कीनाराम के आपन बाघाम्बर आ पूजा–पाठ के सामग्री देके आगे बढ़े के कहलें। कीनाराम गंगा किनारे पहुँच के गंगा जी के आगू आपन माथ नववलें त गंगा जी उनका पांव के पास पहुँच गइली। ई सब शिवाराम जी दूर से ही देखत रहलें। उनका समुझत देर ना लागल कि ई कीनाराम जनमजात महात्मा बा। ऊ कीनाराम के आपन गुरुमंत्र दिहलें। कुछ दिन के बाद शिवाराम जी का पत्नी के देहांत हो गइल आ ऊ दोसर बिआह करे के तय कइलें। एही बात पर उनकर कीनाराम से मतभेद हो गइल। फेर कीनाराम उहाँ से चल दिहलें। जब ऊ नैगडीह गाँव पहुँचले त उहाँ देखलें कि जमींदार के सिपाही गाँव के एगो गरीब बुढ़िया का बेटा के मामूली अपराध खातिर कैद करके कैदखाना में डाल दिहले बाड़ें। उनका के साधु–महात्मा जान के बुढ़िया अपना बेटा के छोड़वावे खातिर मिनती करे लागल।एह कीनाराम अपना तेज आ चमत्कार से प्रभावित करके ओह लरिका के जमींदार का कैद से मुक्त करा दिहलें। ओह बुढ़ औरत का खुशी के ठेकाना ना रहल आ ऊ अपना बेटा के कीनाराम के हवाले कर दिहल,जे बाद उनकर शिष्य अवधूत बिजाराम के नाम से जानल जालें।

एक बेर कीनाराम बिजाराम के नीचे रहे के कहके अपने गिरनार पर्वत पर तप करे चल गइलें। जहाँ उनका दत्तात्रेय जी से भेंट कालूराम के रूप में भइल। कीनाराम अपना ग्रंथ 'विवेक साथ' में एह चीज के उल्लेख कइले बाड़न। एकरा बाद कीनाराम आ बिजाराम जूनागढ़ पहुँचल लोग। कीनाराम बिजाराम से नगर में जाके भिक्षा माँग ले आवे के कहलें आ अपने बाहर आसन लगा के ध्यान में बइठ गइलें। जूनागढ़ के शासक मुसलमान रहलें। उनकर सिपाही नगर में घुसते बिजाराम के पकड़ के जेल में डाल दिहल। जब कीनाराम गइलें त उनको के जेल में डाल दिहल गइल आ सजाय के रूप में चक्की चलावे के मिल. ल। ऊ अपना डंटा से चक्की के मारत चले के कहलें आ चक्की अपने चले लागल। एह बात के जानकारी मिलते उहाँ के शासक कीनाराम से माफी माँगत दूनो जना के छोड़ दिहलें आ उपहार के रूप में काफी हीरा–जवाहरात भेंट कइलें। कीनाराम कुछ हीरा जवाहरात मुँह में डाल के थूकरत कहलें कि ई ना त मीठे लागऽता आ ना खट्टे लागऽता। फेर ई कवना काम के? तूं हम साधु के खाए खातिर ढ़ाई पाव पिसान दे दे। ई घटना संभवतः विक्रम संवत 1724 के ह।

कीनाराम जूनागढ़ से बनारस के अघोरी कालूराम से मिले उनका मठ केदारनाथ अस्मसान घाट पहुँचलें। कालूराम मुर्दा का खोपड़ी सब के बोला के चना खिआवत रहलें। ऊ कीनाराम से आपन परिचय देवे के कहलें त ऊ कालूराम का एह काम के रोक दिहलें। अब मुर्दा के कवनो खोपड़ी चना खाए अइबे ना करे। तब कालूराम ध्यान लगा के जान गइलें कि कीनाराम हवें। ऊ कीनाराम से मछरी मँगले आ कीनाराम गंगा से मछरी मँगलें। मछरी पानी से बाहर किनार पर आ गइल। तीनों जना मछरी पकाके खइलन।

फेर एकरा बाद ऊ कालूराम के कहला पर नदी में दाहात एगो लास के जिन्दा कर दिहलें। जे आगे चलके उनकर शिष्य राम जिआवन राम भइलें। एह घटना के समय वि. स.1754 बतावल जाला। एह तरह के कई गो परीक्षा पास कइला के बाद कालूराम कीनाराम के अघोर पंथ के गुरुमंत्र दिहलें आ अपने लुप्त हो गइलें। अघोर पंथ में ई विस्वास जतावल जाला कि खुद भगवान दत्तात्रेय कालूराम बनके कीनाराम के अघोर पंथ के गुरुमंत्र दिहलें। कालूराम के द्वारा कीनाराम के गुरुमंत्र देके लुप्त हो जाए के संकेत विद्वान लोग एह बानी से बतावेला –

'कीना कीना सब कहे, कालू कहे ना कोय।
कालू कीना एक भये, राम करे से होय।।'

एकरा बाद कीनाराम कासी के कृमिकुंड में रह के तपस्या करे लगलें आ कबो कबो रामगढ़ जास। भगवान दत्तात्रेय के बाद कीनाराम अघोर पंथ के आगे बढ़वलें। छंदशास्त्र के जानकार कीनाराम के चार गो प्रमुख पुस्तक बा– विवेक सार, राम गीता, राम रसाल आ गीतावली। ऊ विवेक सार के रचना उज्जैन के क्षिप्रा नदी के किनारे कइले रहलें जवना में ऊ आत्माराम के वंदना आ आत्मानुभव के चर्चा कइले बाड़न। उनका अनुसार सत्य भा निरंजन सर्वव्यापक आ सहज रूप अस्तित्व में बाड़ें। विवेक सार में ओह सब अंग के भी चर्चा बा जवना में से पहिला तीन गो में सृष्टि रहस्य, काया परिचय, पिंड ब्रह्मांड, अनाहत नाद आ निरंजन के चर्चा बा। अगिला तीन गो में योग, साधना, निरावलंब के अवस्था, आत्म विचार, सहज समाधि आदि के उल्लेख बा आ बाकी दूगो में सउँसे विश्व के आत्म स्वरूप होखे आ आत्म स्थिति खातिर दया, विवेक आदि के अनुसार चले का बारे में बतावल गइल बा। कीनाराम के मृत्यु सन् 1826ई. में भइल रहे।

कीनाराम के शिष्य परम्परा में आवे वाला शिष्यन में प्रमुख नांव बा – जय नारायण राम, बिजाराम, राम स्वरूप राम, राम जिआवन राम आदि। जूनागढ़ में कीनाराम के दोसर मठ बा। इनका मत में अलख पंथी, नागा संन्यासी आ नागा अवधूतिन भी होखेली। इनका मत में मदिरा के प्रयोग ना होत रहे। एकरा अलावे इनकर आउर कई गो मठ बनल बा। निरबानी आ घरबारी जीवन शैली के आधार पर अघोर पंथ के दू भाग हो गइल। जे आपन घर–परिवार ना बसा के अपना तप साधना में रत रहत रहे ऊ निरबानी कहाइल आ जे गिरहस्त रूप में घर–परिवार के बीच रह के साधना के बदौलत सिद्धि पवलस ऊ घरबारी कहाइल। बतावल जाला कि कीनाराम आ भिनक राम निरबानी संत रहे लोग।

विद्वान लोग के अनुसार अघोर पंथ के तीन गो शाखा बँट गइल– अघोर, घुर आ सरभंग सम्प्रदाय। एकरा में सरभंग सम्प्रदाय के प्रमुख केन्द्र बिहार के चम्पारन, सारन, मुजफ्फरपुर आ नेपाल के तराई क्षेत्र बा।

❑❑

❍ प्रताप भवन, महाराणा प्रताप नगर, मार्ग सं.–1(सी), भिखनपुरा, मुजफ्फरपुर (बिहार)

वारि जाऊँ ए सखी

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

वारि जाऊँ ए सखी, हो बबुअवा निरखि
वारि जाऊँ ए सखी।।

सुघर–सुघर हाथ–गोड़, सुघर नयनवाँ
सुनि लागै बोलिया, बोलत मयनवाँ
अचके मुसुकी परखि, वारि जाऊँ ए सखी।
हो बबुअवा निरखि, वारि जाऊँ ए सखी।।

बिहँसेला बाबू, झलके दंतुलिया
बेर–बेर मुँहवा, डारत अंगुलिया
कबों धऊरे लपकि, वारि जाऊँ ए सखी।
हो बबुअवा निरखि, वारि जाऊँ ए सखी।।

कबों चले घुसुकी आ कबहुँ बकइयाँ
अँगुरी पकड़ि के चलत पइयाँ–पइयाँ
कबों पउवाँ थिरकि, वारि जाऊँ ए सखी।
हो बबुअवा निरखि, वारि जाऊँ ए सखी।।

❑❑

❍ बरहुआं, चकिया, चंदौली

परवा कुल बरहुँआ क कवि पंडित हरनाम बाबा क स्मृति शेष रचना

हीरालाल द्विवेदी 'लाल'

सारस्वत वैभव गुरु कृपा क फल होखे।कवित्व कला न जाने कतने जनम के साधना से मिलेला। इहाँ क धरती संस्कार आउर संस्कृति क जननी बा। माई सुरसती क किरिपा पहिलइ से बरस रहल बाटे। अजुवो हमरा आ अनुज जयशंकर बाबू का ऊपर माई आपन करुणा बरसाइ रहल बाड़ी। बंश परंपरा में हमनी क बारहवीं पीढ़ी बाटे।ऊपर खानि पाँचवी पीढ़ी में दूबे श्री हरनाम बाबा भइल रहलीं, जवन भोजपुरी में कवितई करत रहनी। उनुका रचना सइहार के त कतो राखल नइखे। उनका रचना क थोड़ बहुत अंश बाप दादा से सुनले बाटी ओहि के उकेरल आपन धरम समुझत बानीं। बंशानुगत श्रुति परंपरा में सुनल उनका कृति जवन हमरा जेहन में बा ओसे हम कृतकृत्य बानी आ चाहत बानी कि अगहूँ एकर उल्लेख धरोहर के रूप में संजोयल जाव जवना से कि आगे आवे वाली पीढ़ी जाने,समुझे कि कइसन–कइसन लोग हमरा खानदान में भइल रहलें, आ अगहूँ ओकर अनुशरण लोग करें।

रम्य बनस्थली आउर विन्ध्य पर्वत माला के उपत्यका में पौराणिक नदी कुकर्मनाशा के पूर्वी तटीय क्षेत्र में स्थित हमनी क बरहुँआ गॉव चन्दौली जिला के चकिया तहसील में पड़ेला।चकिया से 4 कि0 मी0 पूरब पक्की सड़क पर स्थित इहाँ क प्राकृतिक सौंदर्य क चित्रण बाबा के रचना में देखीं सभे–

दक्खिन विन्ध्य पहाड़ क ताज
बिराजत ब्रह्मपुरी सिर सोहे।
नार नदी बन कंदर मंदर
बाग बगीचा अति मन मोहे।।
फूलल बा परिजात क फूल
गोलवा देउरी दू पहाड़ खड़ा बा।
कोइन खूब खिलइ बलुआ में
दुनउ बीच तलाब बड़ा बा।।

ब्रह्मपुर 'बरहुँआ' क दूबान बंश क कीरति बखानत बाबा बहुत कुछ कहले बाड़ें। बंश केतना महान बाटे, एकर परमान बाबा क बनावल कविता मा देखीं सभे–

राजा महाराजा जमींदारन के पुरोहित हम,
ब्रह्मपुर के द्विजकुल ऋषि कश्यप संतान हैं।
दो सौ बीघा माफी का मालिक हमार कुल,
मौजा चमारीपुर दायम दियो दान है।।
विद्या के दाता ज्ञाता वेद आ पुरानन के,
अन्न वस्त्र दानन में कर्ण के समान है।
उत्तम कुल परवा दूबान गोत्र कश्यप है,
अपना खानदान विप्र बंश में महान है।।

पस–पड़ोस के गाँवन के बाँभन कइसन बाटे इहो कहले बाटे बाकी ओकर उल्लेख कइल आजु उचित नइखीं।एक बेरी बाबा क मन ससुरार जाये क भइल।उनका ससुराल होरिला गॉव में रहल, जवन चाँद (आजु के बिहार प्रदेश) के पास पड़ेला। तब न कवनो रसता रहल, न साधन।लोग छौरा आ पगडंडी पकड़ि के पैदल–पैदल आवत जात रहलें। मुकवा पहाड़ लाँघि के जाए के रहल। अब त मुकवा पहाड़ के तोड़ के रास्ता बना दिहल गइल बा। बाबा, भुक्खल नाँव क कहार रहे ओकरा संगे लिहलें आ पहाड़ चढ़ि के ससुरारी चल दीहलें।ओकर वर्णन अपना कविता में कइले रहलें, देखीं सभे–

चढ़ पहाड़ चले ससुरार
हरदी हलरै हरनाम भनैया।
आगे आगे विप्रानन्द चले
ओकरा पाछे भुक्खल कम्हैया।।
पहुँचे ससुरार हुलास भरे
स्वागत पूछी के आसन दीन्हें।
पैर पखारि परात के पानी मे
घर आँगन बीच सिंचावन कीन्हें।।
चूड़ा दही संग गुड़ मिलाइके
मीठे मीठे जलपान कराये।
विप्र जमात लजात रहे पर
भुक्खल खूब सराहि के खाये।।
दाल भात रोटी तरकारी
सुरही गाय क घीव परोसल।
विप्र त मुँह जुठारी रहे
भुक्खल भोजन खूब भकोसल।।
भोर बिदाई कराइ चले
धोती गमछा नगदी कछु दीन्हें।
भुक्खल गाँठि निछावर बाँधिके
चाउर के गठरी धरि लीन्हें।।

होत सबै ससुरार पियार
नीक लगइ उहाँ सरहज सारी।
सास के दुल्लम होत दमाद
ससुर के लागत हैं ग्रह भारी।।

अजुवो ''जामाता दशमो ग्रहः'' दमाद दशवा ग्रह होला ई कहावत मशहूर बा। छंद में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग खूब कइल गइल बा। एहमें बाबा क विद्वत्ता खूब झलकत बा। ससुराल मे दमाद कइसे लजाला एकर व्यंग भी देखात बाटे।सिवान में हरदी नाम क धान लहरात रहे ओहू क चित्रण बा।बाबा के सिवान में खेती देखल आ घूमलो नीक लागत रहे, उनका प्रकृति से कतना लगाव रहे,एह भाव क दर्शन रउवा नीचे के रचना में देखीं–

फूलल बा सरसों सगरों
रंग बसंती सिवान मा छाइल।
ओढ़ी धरा हरियाली क चादर
सुघर चैती बा गदराइल।।
भा बरसात फुले परिजात
गोलवा देउरी परबत अति सोहे।
बादल चोटी पे छाई रह्यो
झरना झर झर झरता मन मोहे।।

सिवान के चारि ओर जवन पोखर ताल बाटे ओहमाँ झांकि के कइसन सुघराई क दर्शन कइले बाटे नीचे देखीं–

श्याम पुर में श्याम रंग जोहिया मे जूही।
बलुआ में कुन्दकला देखत मन मोही।।

जोहिया जवना क नाम जनकपुर मौजा बाटे, पहिले इहँवा से जनकपुर माइनर ना निकलल रहल त बरसात क पानी जंगल खानी आ के इहाँ भर जात रहे, एसे तलैया क रूप रहल।पानी क जाह जवना मा जूही खिलत रहे, एहि से एकर नाम जोहिया पड़ल। श्यामपुर क पोखरी खूब गहीर रहे एही से ओकर पानी जमुना जी के तरह श्याम रंग क देखाय, अब त कुलिये पटाय गइल बा।बलुआ मा अजुवो कोइन क फूल खिलते बा। केतना सुघर चित्रण बाबा कइले बानी।

जोहिया से जुड़ल एगो आउर अचरज भरल घटना हम श्री रामसखा बाबा से सुनले बानी जवन याद आवेला त रोमांच हो जाला।पहिले सिवान में मचान गाड़ के लोग फसल अगोरत रहलें। एक बेरी रामस खा बाबा क कवनो पुरखा मचान पर सुतल रहे, उनका रात में शौच लागल, उतर के शौच कइलें आ पानी क तलाश करे लगलें। चैत क महीना रहल, उनका परेशान देखि के हमरे कुल क ब्रह्म बाबा पंडित श्री रामगुलाम दुबे आ उनका पत्नी जोखना मैया जिनका चौरी अजुवो उहाँ बिराजत बा। अपना स्थान से निकल के उहाँ अइलें आ कहले कि चला पानी छुइला, अइसे शौच कइके ना घूमल जाला। उनका जोहिया में पानी छुआ के घर तक पहुँचवलें आ कहलें कि कोई से बताया मति कि बरम बाबा मिलल रहल।तनिको डेरइया मति। बाकि उनुका से ई बाति ना पचल आ उ कहिए दिहलें आ कुछ दिन बाद मरियो गइलें।ब्रह्म बाबा बड़ा जागृत हउवें, उहाँ पीपर क बहुते पुरान पेड़ बाटे, जवना में एगो भारी साँप रहेला, कभी कभार पूजा करत के बेरा देखाय जाला, बाकि केहु के कवनो नुकसान ना पहुँचावेला। धान में पानी चढ़ावत के बेरी हमहूँ के दर्शन भइल रहे, मगर सरक के पीपर मे समा गइल। ओही पीढ़ी क बरम बाबा श्री रामभंजन दुबे बानी जिनका चउरा गाँव का गोइडे बाटे।जय शंकर बाबू उनका चबूतरा आउर फेरी रचिके पहिले बनवा दिहलें बड़ा सुघर फाटक भी लाग गइल। तत्काल उनका फल मिलल ऊ भोजपुरी सम्मान से नवाजल गइलें, आ इनाम मा नगद पुरस्कर मिलल।

सावन क महीना में नाग पंचमी होखेला जवना के पचौया कहल जाला। ओही दिन अ खाड़ा में कुश्ती प्रतियोगिता होला। जयनाथ बाबा आउर बाबुनन्दन बाबा बड़ पहलवान रहलें। एक बेरी रौना गाँव जवन मोगलसराय के पास बाटे, उहाँ से एगो गाँवे क सार लागत रहलें, तिवारी जी आयल रहलें आ ऊ कुश्ती क ताल ठोंक दीहलें। कौतुहल खातिर उनका से एगो चमार से लड़ावे क खेल विप्र समाज ठान लीहलस। एह प्रसंग में हरनाम बाबा एगो रोचक कविता रचले रहलें जवना के रउआ सभे देंखी–

रावनपुर 'रौना' से राक्षस आया,
सावन मास में साहस कीन्हों।
विप्र समाज कियो बड़ कौतुक
सिंह के पाग सियार को दीन्हो।।
बहिना सुनली बिरना से मोरे
गउवाँ क चमार लड़ावल जाई।
भाई बुलाई कहीं समुझाइ के
लड़बा जौं काल्हि त होखि हंसाई।।
होत सबेर अबेर न होखे
रौना बदे होई जइहा रवाना।
भैया के जाब जरूरी भइल

कइसो कवनो हम करबो बहाना।।

ऊ भाई के भगा दीहलीं। एही कथानक क जवन कछु अंश हम सुनले बाटी ओकर उल्लेख कइल गइल। वर्णनात्मक शैली क केतना सुघर प्रयोग एह कविता में कइल गइल ह, सराहे जोग बा। हिंदी भोजपुरी क्षेत्रज भाषा के हर विधा में रचना क सुघर प्रयोग बाबा कइले बानीं। हम प्रयास कइ रहल बानी, कइसों कहीं खानि आउर कुछ मिले त ओके हम उजागर करी।आगे जइसन बाबा क किरिपा होइ ओइसन फिनो लिखे क प्रयास कइल जाई, जवना से उनका याद सदा बनल रहे।

बाबा श्री हरनाम दूबे क विवाह भइल रहे, ई त उनका कविता बताइ रहल बा, बाबा क संतान ना भइलें।ऊ तीन भाई रहलें, बाकी दू जाने से बंश आगे बढल।उनका हक हिस्सा हमनी क पूरा खानदान हबे खत बाटे।श्री ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर में जवन अरघा में शिवलिंग बाबूजी स्थापित करवले बानीं उनका बगल में एकही साथे तीन गो पाषान क लिंग बाटे, ऊ उनका जमाने क बाटे जवन मड़ई में पहिले से रहल, स्थापना का समय मंदिर मा पधरावल गइल। श्रीहनुमान जी क छोटकी मूर्ति भी ओहि मड़ई में रहल। ध्यान से देखल जाय त बड़की मूर्ति बिल्कुले ओहि क प्रतिरूप बा जवन बाद में गढ़ाइल। एकर परमान उनका दोहा में नीचे देखीं–

मड़हा बीच बिराजते शिव त्रय लिंग ललाम।
विप्र सदा पूजन करें,दरस करत ''हरनाम।''।
अवढर दानी के कृपा से बनते सब काम।
हर हर हर हर रात दिन जपत रहत ''हरनाम''।।

सुने में आवेला कि मड़ई में बइठ के खूब रामायन क गवनई होखे।एहि से बाबा पर तुलसी बाबा के दोहा क प्रभाव देखाई पड़ रहल बा।

ओह जमाने मे एगो किस्सा सुने में आवत रहे कि ''अंधेर पुर नगरी चौपट राजा,टका सेर भांजी टका सेर खाजा'' 'ई कहावत बाबा अक्सरहाँ सुनावत रहलें। ई नगरी आउर कहीं ना बलुक इहे रहल।मंगरौर से लइके मुंसाखाड़ तक बसल रहे, जवना मा एक्के रात मे एक सौ एक दुलहन क शादी भइल रहे। अजुवो जंगल में खपड़ा, लाह क चूड़ी, पत्थर क डोकी, बरतन आदि खोदाई में मिलल करेला जवन ओह नगरी क परमान बाटे। हमनी क परगना केरा मंगरौर पट्टी लेहरा कहल जात रहे। मंगरौर में मारीच क किला रहे जवने क टीला अजुवो परमान बाटे। देवकीनंदन खत्री के उपन्यास चंद्रकांता में एकर जिकिर भइल बा। आखिर में बाबा श्री हरनाम दूबे के चरण में माथ झुका के परनाम करत बानी,उनका स्मृति में सुनल सुनावल बातिन क उल्लेख कइला में जाने अनजाने जवन भूल भइल हो ओके ऊ क्षमा करिहैं, आपन आशीर्वाद हमरा आ अपना कुल खानदान पर बनवले रहिहें।।

❑❑

❍ बरहुआं, चकिया, चंदौली

गजल

संगीत सुभाष

हाल जिनिगी के' समुझल बहुत बा कठिन
कब, कहाँ, कौन डगरी चली, ना चली।
मुँह घुमा के चुरा के लुका के भगी
प्रीत नजरी से' नजरी पली, ना पली।

काल्हि अधलब रहल, आजु पूरा भरल
केहु तरसल इहाँ केहु पीयत मरल
आजु चिरुआ भरल ना नदी घाट पर
का पता काल्हि गगरी ढली, ना ढली।

चीरि फाटल करेजा के' सीयत रहीं
मानि लिहनीं ह जिनिगी त जीयत रहीं
नाम अजुए बताइबि छिपाइब ना' हम
घोर संकट के' गठरी टली ना टली।

चान तरइन की' दुनियाँ में' सुख से रहै
दुख दरद के' अन्हरिया कबो ना सहै
जिंदगी बंदगी अब भइल यार के
का फिकिर फिनु कि सँसरी चली ना चली।

हर जगह ना झुकवनीं कबो माथ के
जो झुकवनीं निभवनीं सदा साथ के
प्राथना हम करीं ऊ सुने ना सुने
सुर में' 'संगीत' लहरी ढली ना ढली।

❍ प्रधान सम्पादक, सिरिजन/ भोरे, गोपालगंज (बिहार)

बतकूचन

सौरभ पाण्डेय

का कबो सुनले बा केहू जे कवनो जियतार देह, माने कवनो देही, आपन मन में सहेजल अनुभव के अनेरिये जियान होखे देले ? ना ! काहें जे, अइसना अनुभवे के बल आ बिस्तार प कवनो मनई आपन तर्क गढ़ेला। आपन बात के मर्म जता सकेला। आपन अर्जित अनुभवे के सान प केहू के विवेक प पानी चढ़ेला। कवनो मनई के विवेक के आगा फेरु ओकर आपन शिक्षा सहेजेले। शिक्षा माने ग्यान आ बिचार में गठन के तरीका। एही कारन, निकहा शिक्षित मनई के अपना अर्जित अनुभव आ ओह अनुभव के अधार प आपन बिचार आ तर्क प मन के सभ तरहा के भाव के संप्रेषित क सके में समर्थ मानल जाला। बाकिर, एगो अउरी बात, शिक्षा कबो सर्टिफिकेट–संग्रह के वाइस ना हो सके।

ई सभ बात कहे के हमरा लगे आपन कौ गो कारन बा। अइसन 'शिक्षित' लोगन के समाज में कवनो कमी नइखे जे अपना शिक्षा के दायरा आपन बटोरल सर्टिफिकेटन के नमूना के तौर प देखा सकेला लोग। बाकिर विवेक आ तर्क के अधार प जवन उनका से अपेक्षित बा, ऊ लोग ऊ ना देखा सके। अनुभव, बात के मर्म, विवेक, तर्क सभ धइले रह जाला। एही से, अइसना पढ़ल–लिखल, जनकार कहात लोगन से गाँव–गिरान के ऊ मनई ढेर आदरजोग बा जवन आपन जियतार अनुभव से पगल बा। एह कारन अपना तर्क से सधल बा। अपना विवेक से चोख बा। एही से कवनो गाँव–परिवार खातिर अइसन मनई लोग एगो शान होला, एगो मान होला। कुछ बरिस पहिले ले अइसना अनुभवपगल लोगन से दुआर आ गाँव के के कहे, जवार के जवार भरल लउकत रहे। अइसना लोगन के गाँव के ढाला प, बगइचा में, चौपाल में, चाह के गुमटी प जमघट भइल करे। ओह लोगन के लाम–लाम चर्चा आ बतकही सङे बइठल लइकन, जवानन के सोच के गहीर होत भइला के कारन भइल करे। आ चर्चओ त का, कुछ मन के, त कुछ जन के, कुछ जिला के, कुछ जवार के, त गाँव के, परिवार के, देस के, बिदेस के, परदेस के सनेस के ! गउरा के, गनेस के, धनी के, धनेस के ! त, कबो गोड़े लागल ठेस के, त कबो उधियात–फहिरल केस के ! माने कवनो रोक ना, कवनो सीमा ना। कहँवाँ के डाढ़ि प कवना के खोंत, तनिके के दिठार प जाने कतना अलोत! जाने कवन–कवन काथा, कइसन–कइसन गाथा! खिस्सा बोलउअल, कहाउत कहउअल... तनिके में चुटकऽही, तनिके में बुझउअल! चुटकी में साटा, त चटके में घुमउअल !

बाकिर आजु अइसना लोगन से जवार खाली भइल लउक रहल बा। आजु अकसरहाँ बतकहियन में रस ना, अजुबे सहम बा। खबर में सफाई ना, बनावट बा, भरम बा। ना बड़न खातिर सरधा बा, ना लहानन खातिर दुलार बा। निर्मोही भइल आङन बा, त दुअरो उलार बा। कारन का बा? ई कूल्हि का हो गइल? अचके में भइल, आकि तवीले भइल? बाकिर ई भ का गइल? जाने ई कवना बुद्धी के जोर हऽ? ई कहँवाँ से उठल सोर हऽ? जदी ईहे ह पढ़ाई, त फेरु काहें के पढ़ाई? उमिरियो जियान भइल, अनेरिये में जाई। कुछ बुझिहऽ हो भाई !

का रुचे आ का ना रुचे, ई बड़ गझिन बहस–चर्चा के बिसै हऽ। जवन रुचेला ओकर अनुभव आक्सरहाँ लोग अपना इन्द्री से महसूसेला। जवन कुछ करत, बोलत, देखत, सुनत, सहत रुचेला ओकर भोक्ता एगो देही होला। एही देही के जमात–जुटान से बसेला गाँव, उजियार होला जवार आ सजेला संसार। सभके आपन–आपन सोच होले, त ओही रङ ओकर संसार होला। सभे के संसार दोसरा के संसार से एका ना होखे। संसार आपन–आपन होला। सभ केहू के संसार, अपना अनुभव, अपना विवेक आ आपन तर्क से सजेला। कढ़ेला। आ बढ़ेला। हँ, बढ़ेला। छोटमन के संसार, बड़मन के संसार से बड़ ना होखे। त कवनो छोट के आस्ते–आस्ते उमिरन बड़ होत गइल ओकर संसार के बढ़ला के निसानी हऽ। त, हर मनई के संसार के आकार आ बिस्तार, फेर से ऊहे, ओकर अर्जित कइल अनुभव, ओकर बातन के मर्म, सवचला में विवेक आ बोलला में तर्क से जनाला। ईहे कारन बा, जे चटकल बतकही कवनो सचेत समाज के जियतार भइला के कसौटी हऽ। आ देखीं, त एही कसौटिया प जाने कवना–कवना कोना से चोट हो रहल बा। आङन

दुआर, ढाला, बगइचा, चौपाल, चाह के गुमटी के वजूद प चोट हो रहल बा। हो का रहल बा, बेतुके चोट हो चुकल बा। गाँव गाँव नइखे रहि गइल। जवार आ मउजा छितर रहल बाड़न सऽ। जन के जन से संपर्क नइखे रहि गइल। मन के मन से कतहीं हाल्दे एका नइखे बुझात। बिचार के उद्‌गार से जवार के बेवहार में सम्हार होखो त कइसे होखो ?

लोग कहि रहल बा, जे आजु दस–पनरह बरिस से सोशल–मीडिया लोगन के आधुनिक तकनीकी जीवन में निकहा एगो मंच मुहैया करा रहल बा। हमहूँ मान लिहनीं, ई साँच बा। बाकिर, मन के एका के, भा ना मनला प टेका के एजुगा संस्कार के दीही? कइसे दीही? आ तवना प मानी के ? एह सोशल–मीडिया प एह बात के लेके बड़हन जिम्मेवारी बा। ई जिम्मेवारी सस्ते में नइखे निबहे के। जवन कुछ हो रहल बा, भा जवन लउक रहल बा, ऊ बहुते भरोसा नइखे देत। तबहूँ आजुके आधुनिक आ तकनीकी जीवन के केहू नकार भा बिसार ना सके। हम कइसे बिसार सकेनीं ? त चलीं, हमहूँ ना नकारबि। ना बिसारबि। हम बनल बानीं, बनल रहबि। माने, एह पत्रिका के मंच से हम हर महीनवे रउआ सोझे आइबि। रउआ से बतियाइबि। आपन सवाचल उचारबि। उचरल्का पुकारबि। बुझाई त बढ़बि। आ ना.. त पूछबि। बिचारबि। खलसा राउर नेह चाहीं। राउर असीस चाहीं। सुनला के होस चाहीं। सुनवला के भरोस चाहीं। रउआ हमरा के सँकारीं, हम रउआ के सँकारबि। कवनो मुद्दा के सोर धरत ओकरा फुनगी ले नाहियों त का हऽ, निकहा कोंढ़ी–फूल, बीया–फल के चर्चा होखी। राउर धेयान रही, हमार पर्चा होखी।

जय–जय...

❑❑

❍ एम–2/ ए–17, पी०डी०ए० कालोनी, नैनी, प्रयागराज–211008

आपदा में अवसर

जियाउल हक

प्रकृति के लीला भी गजब बा, कबो गरमी में कोरोना महामारी त कबो जड़ा में बलामुआ प्यारा लागे वाला भोजपुरिया महामारी ekus मलेरिया डेंगू चाहे फिर बरसात में बाढ़ काहे ना होखे। एक आपदा से उबरे के पहिले दूसरा सिर पर सवार रहत बा आ ओकर हिलोरा सोशलमीडिया पर जइसे गोरी के करहैंया हिलोर मारे वैसे मारत रहत बा। जइसे हर आपदा में कुछ लोग आपन पर परिवार के साथ सतर्क आउर सावधान रहे के चाहत बा ठीक वैसे ही कुछ झुंड ई आपदा के अवसर में बदले खातिर साम, दाम, दंड भेद लगइले रहत बा. अब चाहे ओकरा आक्सीजन सिलिंडर से लेके पेट रोके वाला दवाई लिमोफेन के कलाबाजी काहें ना करे के पड़े.।

बिहार के दियारा क्षेत्र में आचानक से गंगा नदी के जल स्तर बढ़त देख के कुछ लोग आपन परिवार के साथ सावधान सर्तक होखे वाला बा त कुछ लोग भादो के बेंग नियन ई आपदा के भी अवसर में बदले के प्रयास में जी जान लगाके जुटल होई. सांसद, विधायक, मुखिया, प्रधान, क्षेत्रिय नेता, बड़ छोट सरकारी बाबू अफसर लोग एतना श्रेणी के लोग के आखिर कल्याण होई त कइसे होई।

बाढ़ सुखार जइसन आपदा आई जइसे हर साल आवेला तबे त हर साल के भांति केंद्र सरकार आ राज्य सरकार के कोषागार से बजट पास होई जइसे हर साल होखेला। आ ऊ बजट धीरे धीरे ठुमकी चाल में चलत चलत स्टेप बाई स्टेप दियारा के जमीनी स्तर पर पहुंची.

अब भले ही ऊ श्री बजट मियाँ दिल्ली के पार्लियामेंट से निरोग स्वस्थ हो के निकलस बाकी दियारा क्षेत्र में पहुँच पहुँच ऊ विकलांग काहें ना हो जास। ऊ का हऽ दिल्ली से पैदल ठुमकी चाल में चलत चलत बिहार आवत आवत पैर हाथ में छाला त पड़िए नू जाई जइसे प्रवासी मजदूर लोग के कुछ दिन पहिले पैर हाथ में छाला पड़ रहल हा आ ऊपर से सांसद, विधायक, मुखिया, प्रधान, क्षेत्रिय नेता, बड़ छोट अधिकारी लोग के ट्रैफिक में कहीं ऊ श्री बजट मियाँ बेचारा दब दबा गइल त विकलांग होईए नू जाई जइसे हर साल होखेला। ❑❑

❍ छपरा, बिहार

ऊपर से ठाट बाट

बिम्मी कुँवर

'मिसेज गोलाटी कतना चुस्त दुरुस्त मेहरारू हई!! बा कि ना..' भोर भिनसहरे के चाह के सवाद लेत दिनेश अपना धरमपत्नी के रिगवले।

ममता बेमन से चाह सुड़ुकत हामी भर देली, हं जी केहू केहू के देह के माटी अइसन होला जे कतनो खाए प चाम ना चढ़े, हम त छूछें पानी पी ही ना त बेदाम लेखा काम करे!!

ओह सोसायटी में मिसेज गोलाटी के फिजा खूब चऊचक रहे। देह धज्जा एकदम बीस साल के छऊड़ी लेखा। दया धरम में पइसा कौड़ी पानी लेखा खरच देत रहली। अस्पताल आ स्टेशन प जा जा के दवाई आ कम्मर, सूइटर खूब बाटस।

किरिन फूटला से पहिलही से उ अपना पोसल कुकुर संगे पार्क में टहरे लागस, फेर अपना लान में रोपल फूल पत्ती के जरी उग आइल घास पात नोच नोच के साफ सुथरा करस। सोसाइटी में कवनो चौ. रिटी शो होखत रहे त उ ओईजा चीफ गेस्ट बनावल जात रहली, उनकरा दया धरम के चरचा खूबे रहल।

गोलाटी साहब बड़का बिजनेसमैन रहूअन त ढेर घड़ी बहरी टूर टार प ही रहस, विधवा महतारी गोलाटी बो संगे रहत रहली बाकिर अड़ोस पड़ोस के लोग कबो देखले ना रहूअन, दाई लऊड़ी से पता चल जात रहे कि गोलाटी साहब के बूढ़ महतारी घर ही में रहेली। दू गो बच्चा रहूअन आ दूनो बचपने से शिमला के कवनो इसकूल के हास्टल में रह के पढ़त रहे लोग।

ओह कालोनी के मय मरदाना लोग अपना मेहरारू के गाभी मारस जा कि खा खा के भइसा बनल बाड़ू आ एगो गोलाटी बो के देख ल, मन होला कि देखते रही जा। कतना नीमन उनकर देह धज्जा बा, कतना रस लेखा चभुला चभुला के बतिआवे ली।

सोसायटी के मेहरारूअन के करेजा में खूब हूक उठे आ फेरा में रहस जा कि कइसे गोलाटी बो से सुनर बनी जा, बाकिर घर परिवार के काम काज से कहां फुरसत रहे।

एह बार बुला दस दिन से गोलाटी बो सोसायटी में लउकत ना रहली। हरमेसा कतहूँ जात रहली त कुकुर घरहीं में रहत रहे आ एक से दू दिन में आ जात रहली बाकिर एह बार कुकुरो संगे गइल रहे ।

भोरे–भोरे सोसायटी के मरदाना लोगन के अखबार संगे नयन सुख ना मिलत रहे ऐह से क जाना परसान रहूअन जा, बाकिर केहू पूछे केकरा से। मेहरारूअन के त धीकल करेजा में शीतलहर चलत रहे कि भला राम जी के कि गइली एहींजा से, ना त रोज रोज के बिख लेखा ताना सुने के पड़त रहे।

एकदीन सांझ खा बहारन बीगे वाली हल्ला कइलस कि गोलाटी बो के घर में से बड़ा बाउर बसना उठल बा, बाकिर बहरी त ताला मारल रहे फिर कवन चीज भीतर से मूअल लेखा हतना बसाता। बसना जब बरदास्त से बाहर हो गइल त आनन फानन में पोलिस आ दमकल के खबर विदा करावल गइल। दमकल वाला जब केवाड़ी तूर ता लोग त भीतर के नजारा देख के लोगलन के आँख फाटल के फाटल रह गइल!! बहारन बीगे वाली मऊगी त बाथा से चिचिआ उठल, काहे से कि क बेर घर के बहारन इहे बहरी राखत रहली आ बहारन वाली के देख के मुस्कियां भी देत रहली।

सोफा में धसल कवनो बीस भा पच्चीस किलो के बूढ़ मेहरारू के मुंह आ आंख बवाईल रहे। चाम के भीतरी से उजर हाड़ एकदम साफ लउकत रहे। सगरी देह प चीऊटी आ काकरोच रेंगत रहे।

घर के आबोहवा देख के आज सोसायटी के लोगबाग गोलाटी बो के फिटफाट आ दया –धरमी होखला के असली राज जान पवले।

❑❑

❍ सिलीगुड़ी

गजल

विद्या शंकर विद्यार्थी

घोंघा के जिनिगी गुजार रहलीं हम
घर केहू के तऽ उजार रहलीं हम

आँसू तिकलीं थाह आँख के लेके
मतलब में कौनो किनार ढहलीं हम

दरपन तऽ लेके इहाँ सियासत बा
माठा लेखा तऽ इयार महलीं हम

पेहम होला सुख हँसी खुशी में जे
रंगल तऽ कवनो सियार रहलीं हम

जाने के जनलीं हुलस रहे दिल में
लोहा के लमहर त फार रहलीं हम ।

❑❑

❍ सासाराम, बिहार

दुआरी के अंदर नाचता मोर

सारिका भूषण

ना हा–हा, ना ही–ही
ना गीत, ना गाजा–बाजा के शोर
ना मड़वा में भीड़
ना नादिया तीरे मटकोर
अरे ! कइसन बियाह
कइसन हरदी के होड़
अजी आग लागे कोरोनवा के
कि आदमी भइल आदमी से चोर।

अंगूरी पर गिना ता
और अंगूरी पर छटा ता
कि केकरा जन के बुलाईं
और केकरा दिहिं छोड़
ना हलुवाई बुलाव
ना नाऊआ के
ना गीत गावे बुलाव
ना लगाव घर में भीड़
अरे ! कइसे करीं बियाह अम्मा
सखी–सहेली सभन के छोड़।

के गुदगुदाइहें के चिरकैइहें
के दुपट्टा से पोछिहें लोर
हम ना करब बिआह अम्मा
कि ना घोड़ी पर बलम आइहें
ना गली–मुहल्ला में होई भोर
अजी आग लागे कोरोनवा के
कि न बाड़ी न खेत में
दुआरी के अंदर नाच ता मोर।

❑❑

❍ राँची, झारखंड

बचावे के पड़ी

विनोद पाण्डेय

बिन मिलइले हाथ सीधे दिल मिलावअ के पड़ी
के कभो सोचले रहल की मुँह छुपावअ के पड़ी

जब से आइल बा कोरोना डर रहल बा आदमी
अपने घर में ही लुका के रह रहल बा आदमी
काम धंधा राम जी के ही भरोसे बा चलत
आजकल बस घर सफाई में लगल बा आदमी

भूल से मेहमान घरे आ गयेन त हे प्रभु
का रहल मालूम की ओनके भगावअ के पड़ी ।।

टल गईल शादी–तिलक लड़कन क चेहरा बा गिरल
मिल न पावत हयन दुनो लॉकडाउन बा लगल
कुछ बहादुर मस्त हउअन खा के बस सुतत हयन
रंग गोरा हो गयल बा पेट जा निकलल जा रहल

दूर मोबाईल से लड़कन के रखत रहलअ मगर
आज लड़कन के मोबाईल से पढ़ावअ के पड़ी ।।

ई जमाना आ गयल बा बाप लावारिस मरल
केहू ना आपन देखइलेस रह गइल अर्थी धरल
डाक्टरन क रूप में भगवान भी अइलेन नजर
कुछ कहीं त डाक्टर शैतान भी अइलेन नजर

फेल सिस्टम हो गयल सरकार बस देखत रहल
बुझ ना पइली की बस आँसू बहावअ के पड़ी ।।

फैक्टरी सब बंद बा मजदुर सब रोअत हयन
अउर मालिक कान में रुई घुसा सोअत हयन
लोग हउवन मर रहल ना मिल सकत बाटै दवा
मौत के व्यापार में अब बिक रहल बाटै हवा

देत बा न काम रुपिया साथ बस परिवार बा
खुद बचा के अपने लोगन के बचावअ के पड़ी ।।

❑❑

❍ गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

नया सबेरा

विमल कुमार

दुख के बदरी ढाह ढूह के
नया सबेरा आई।
फूल खिली महकी फुलवारी,
याद बलुक रह जाई।

खुसी उमंग रही आँखन में,
ओठन पर गीत रही।
रही प्यार खाली आँचर में,
मुट्ठी में जीत रही।
हर पैरन में चक्का लागी,
दउर दउर अगराई।
दुख के बदरी ढाह ढूह के,
नया सबेरा आई।

दूर अन्हरिया भागी सर से,
हर जेहन दिया जरी।
सभे कमाई खाई छक के,
भूखे केहू न मरी।
फेर दिलों के मेला लागी,
सभ किनाई बिकाई।
दुख के बदरी ढाह ढूह के,
नया सबेरा आई।

ढोल नगाड़ा बाजी सगरी,
सजी फेर से डोली,
मिल–जुल के मनाई लोगवा,
फेर दिवाली होली।
रहीं आस अँजोरिया धइले,
मिट जाई तनहाई,
दुख के बदरी ढाह ढूह के,
नया सबेरा आई।

❍ जमुआँव भोजपुर बिहार

भोजपुरी समीक्षा के बढ़त डेग

सुनील कुमार पाठक

2021 के जून महीना भोजपुरी समीक्षा खातिर बढ़िया रहल। दूगो महत्वपूर्ण किताब सर्वभाषा ट्रस्ट, दिल्ली से छपल। प्रो.बलभद्र के एगो किताब – 'भोजपुरी साहित्य : हाल फिलहाल' आ डॉ. ब्रज भूषण मिश्र के किताब 'भोजपुरी साहित्य : परंपरा आ परख' सामने आइल। एह दूनू किताबन से भोजपुरी के सृजनशीलता के पता चली। एकनीं में संकलित आले खन में कवनो–न–कवनो एगो खास भोजपुरी रचना भा रचनाकार के वैशिष्ट्य आ रचनाशीलता पर विचार भइल बा। एकनी से कवनों समालोचनात्मक दृष्टिकोण भा विचार–स्थापना के क्रम में समग्र विश्लेषण के आस भा उमेद लगावल ना त उचित होई ना एह किताबन के ऊ अभीष्टे बा। एकनी के अधिकतर लेख कवनो ना कवनो किताब के भूमिका भा ओपर लिखल–छपल समी क्षा के संगिरहा बाड़े सं। ई आलेख सब एगो किताब में संकलित होके भोजपुरी के सर्जनात्मक साहित्य के बारे में परिचय पावे के इच्छुक पाठकन खातिर बहुत उपयोगी हो गइल बाड़े सं।

बलभद्र जी के भोजपुरी विषयन पर हिन्दी में लिखल किताब–'भोजपुरी साहित्य :देश के देस का' के बाद 'भोजपुरी साहित्य : हाल–फिलहाल' में उनकर 25 गो समय–समय पर कहीं–कहीं लिखल आलेखन के संकलित कइल गइल बा। भोजपुरी में आदिकवि कबीर के मानल जाला। कुछलोग सिद्धनाथ साहित्य आ गोरखनाथ जी के रचननो में भोजपुरी के पइसार के बात कइले बा। एह सब के अगर विरासते मानल जाव तभियो ई सच्चाई बा कि भोजपुरी कविता के शिष्ट रूप आजादी के आंदोलन के दौरान मजिगर रूप में सामने आ गइल रहे।'बटोहिया' 1911में 'बंदे मातरम' (1882) आ 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'(1905) के सोझा खड़ा हो चुकल रहे। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के 'जन गण मन' ते 1912 में रचाइल। बाकिर आश्चर्य होई कि भोजपुरी के पहिलका उपन्यास 'बिंदिया' (रामनाथ पांडेय) 1956 में छपल। छिटफुट गद्य रचना मिल जइहें सं बाकिर उपन्यास जवन कि गद्य के मनोमुकुट मानल जाला ओकरा लिखाये में 45 बरिस के देरी हो गइल। अइसने विलम्ब भोजपुरी समालोचनो में हो रहल बा। आज ले ना कवनो भोजपुरी साहित्य के इतिहास सुबहित ढंग से सामने आइल ना कवनो सम्यक समीक्षा के ग्रंथ। किताब के समीक्षा भा कवनो कवि भा कथाकार पर लिखल टिप्पणी भा आलेख समग्र समीक्षा के कमी नइखे पूरा कर सकत। भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखा गइल बहुत जरुरी बा। चैप्टर बांट के लिखवा दिआव आ दू आदमी मिल के संपादित कर देव त भोजपुरी के विद्यार्थी–शोधार्थी आ पाठकन के बहुत कल्यान हो जाइत। डॉ.नगेन्द्र के संपादित ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' एह दिसाईं मार्गदर्शन कर सकत बा। आजो कृष्णदेव उपाध्याय, दुर्गाशंकर सिंह आ उदयनारायण तिवारी जी के किताब भोजपुरी भाषा आ साहित्य के परंपरा आ प्रगति के समझे खातिर अपरिहार्य बाड़ी सं।

बलभद्र जी में समीक्षा के एगो साफ–सूथर दृष्टिकोण आ लेखन–शैली विकसित हो चुकल बिया।कवनो विषय पर कइसे सोचे के बा, का–का विचारे के बा, एगो सम्यक विश्लेषण आ विवेचन कइसे हो सकत बा–एह पर पूरा धेयान उनकर बा।कहीं के ईंट कहीं के रोड़ा जोगाड़ करके ऊ भानुमति के कुनबा नइखन खड़ा कइले। कवनों बात कहे के उनकर एगो आपन ढंग बा,तौर–तरीका बा। अपने कवनों एगो लेख के स्थापना के दोसरा में खंडित करत ऊ नइखन दिखत।रहल बात हाल–फिलहाल के रचनन पर विचार के त एहपर सभकर आपन आपन मत हो सकत बा। हाल–फिलहाल बलभद्र के एह किताब में केतना ले बा एह ले ज्यादा जरूरी बा कि ओह पर हाल–फिलहाल वाला नजरिया से विचार भइल बा कि पुरनके ढुआ–ढच्चा आ पारंपरिक मन–मिजाज आ तौर–तरीका से–ई देखल जाव। हाल–फिलहाल वाला नजरिया तबे विकसित होई जब कम–से–कम हिन्दी भा इतर भारतीय भाषा से संपर्क बनल रही। बलभद्र जी जेतना भोजपुरी में सक्रिय बाड़ें ओतने हिन्दियो में। एह से उनका समीक्षा में हाल–फिलहाल वाला नजरिया त जरूर देखे के मिलत बा। दोसरा ओरि ब्रज भूषण जी के किताब में सूचनात्मक बहुत कुछ नया देखे–पढ़े

लायक बा।

आम तौर पर निष्पक्ष समीक्षा के मतलब मानल जाला कि ऊ कवनो रचना भा रचनाकार के शक्ति आ सीमा दूनू बताई। निष्पक्ष समीक्षा के आपन कवनो जुबा. ने ना होई, ऊ खाली तथ्यन के प्रस्तुति भर होई– अइसन बात नइखे। निष्पक्ष समीक्षा अगर केहू के पक्षे में ना होई, त एकर मतलब बा कि ना ओकर कवनों जमीन होई ना कवनों आसमान। ओकरा पक्षधर होखे के पड़ी आम जन के, ओकरा संघर्ष के आ ओकरा सपना के।समीक्षा एह मुक्तिकामी सोच आ जन–पक्षधरता से अगर कटल चली त ऊ बेमतलब आ बेमानी हो जाई। बलभद्र के समीक्षा में पूरा शिद्दत के साथे आम भोजपुरिया मनई के चुनौती, संघर्ष आ सपनन के शिनाख्ते भर नइखे बलुक ओकरा के रूप आ रचाव मिलल बा।

ब्रजभूषण मिश्र के किताब उनकरा 28 गो ओह आलेखन के संग्रह बा जवन ऊ कवनो किताब के भूमिका भा साहित्यकार के बारे में लिखले बाड़ें। भूमिका लिखत समय केहू भूमिका–लेखक कवनो कृति के समर्थने आ पक्षे में लिखेला ओकरा कमियन के स्वाभाविक तौर पर नजरंदाज कर देला। एह से एह तरे के आलेखन के ओही नजरिया से एह किताब में पढ़ल जाये के चाहीं।हं जवना आलेखन में कवनों कवनो रचना भा रचनाकार पर स्व. तंत्र रूप से विचार भइल बा ओजवा सम्यक समालोचना के रूप जरूर सामने आइल बा।

आज त एह किताबन पर परिचयात्मक रूप से समिलाते बाकिर जरूरत बुझाई त अलगो से विचार होखी।

ई दूनू किताब भोजपुरी समालोचना के बढ़त डेग आ आगे के संभावना भरल डगर का ओर इसारा करे खातिर काफी बाड़ी सं। स्वागत होखे के चाहीं एह दूनू किताबन के। एकबार फेर साधुवाद के अधिकारी बा समहर रूप से सर्वभाषा ट्रस्ट परिवार भोजपुरी के बढ़न्ती में अपना सहयोग खातिर। ❑❑

❍ **पुनाई चौक, पटना, बिहार**

बीरन आ कंटहा पंडित

डॉ रजनी रंजन

सात बरीस के बीरन आपन बाबूजी के आग दे के अंगिआ ओढलन। खूब खुश होके घर आवते माई के देख के चिलऽइलस– माई देख! हमरो आज लूंगी गमछा मिलल ह। बाबूजी चाचा के कह के गइलन ह कि हमरा के ई खरीद देहस। आ सुन! बाबूजी अब हवा बन गइल बाड़न। ना लउकीहें तऽ हवा के देख के बुझ जइह कि उ आइल बारन। तेरह दिन बाद तरेंगन बन जइहें। फेर ऊ चमक चमक के हमनी से बतीअइहें। संझा समय जब ढेर तरेंगन निकलेला... देखले बाड़ू नू? ऊ सभ...केहु ना केहु के घर के लोग हऽ। हमरो बाबूजी एकदिन तरेंगन बन के चमचमइहें। बुझलू? एकटक से मनहरी लइका के निहारत रहली।का कहस कुछ बुझात ना रहे। तबहियें फेर बीरन कहलस– ई हम नाऽ। ई सब बात बड़का बाबा कहनी ह। बुझलू? साँचो! पूछ लऽ हमरा बात पर बिसवास नइखे तऽ!

माई बेटा के बात सुन के, पछाड़ खा के गिर पड़ली आ मन दुख के लहर में समा गइल। ई लइका के का कहीं! माई मत रोवऽ। तहरा हमार लूंगी गमछा ठीक नइखे लागत तऽ हम खोल देतानी। रुन्हल कंठ से लइका के हाथ पकड़ के राधी कहली– ना बेटा! हम तहरा से नाराज नइखीं। भगवान तहरा बाबूजी के हवा बना देहलन ई ठीक ना कइलन।

माई के बात बीरन के ना बुझाइल बाकिर माई के तनी चुप देख के ओकरो मन थिर भइल। दोसरका दिन भोरे भोरे बीरन के जबरी उठा के नहाये खातिर भेज दिहल गइल।साथे सब गोतिया– दायाद गइलन। बीरन आपना बड़का बाबा के आदेश पालन करत रहलन। नहा के पीपर में जल देहलन। ओही घ ारी बीरन पूछ देहलन– पहिले त जल ना दियात रहे तऽ आज काहे? बाबा कहलन– ई पानी तहरा बाबूजी के पियास बुझाई।

कइसे? बीरन फेर पुछलस। नरीमन चाचा ओ. हिजे ठार रहलन। बड़का बाबा के आँख पोछत देखके आगे अइलन आ कहलन– ए बबुआ! जब ले तेरह दिन ना होई तहार बाबूजी एही पीपर गाछ पर रहीहें। लउकत नइखन ऊ तऽ?– एने ओने ताकत बीरन कहलस।

नरीमन चाचा – हवा लउकेला का? बुड़बक हउवऽ? बीरन के मुँह पर तनिक थिरता आ गइल। ओहीघरी नरीमन चाचा कहलन– घरे जाके कथा होई। ऊ सुनके तहार बाबूजी के आतमा के शांति मिल जाई आ ऊ भगवान के लगे पहुँच जइहें। कथा ना होई तऽ हउवे बन के एने ओने भटकिहें।मन से सुनीहऽ। 'हँ' कहके आपना बाबा के हाथ ध के बीरन घरे लवटलन। कंटहा पड़ित गरूड़ पुराण बाँचे के शुरु कइलन। बीरन बड़ धेयान लगा के कथा सुनत रहे।आखिर ओकरा बाबूजी के सवाल रहे। सुनत सुनत अचानक पंडित से पूछ देहलस– ई कथा हमनी के सुनऽतानी सन बाकिर बाबूजी तऽ पीपर गाछ पर बारन। उनका कइसे सुनाई? पंडित कहलन– सब सुनाई काहे कि ई कथा सुने के खातिर उहां के रउरे साथे अइनी ह जे। ओही घड़ी खिड़की तनी डगडगाइल। बीरन देख के कहलस– बाबूजी खिड़की पर बारन पंडी जी। अभिये हिलल ह। रउरा देखनी हनु। 'हँ' 'हँ' बचवा। रउरो मन से सुनीं। कथा सुनत सुनत बीरन फेर पूछ देहलस– ए पंडी जी! हमरा बाबूजी के जमदूत लोग ना नू मरीहें। ना हो ! देखलऽ ना लकड़ी से झाँप से रख देहल गइल ऊपर से आग लगा देहल गइल। आग लगे डरे केहु ना जाई– पंडी जी फेर बालमन के भरमा के ओकर मन थिर करेके कोशिश कइले।

बीरन के मन उथल–पुथल होत रहे। जे होत रहे बुझात ना रहे आ गढात रहे ऊ साफा लउकत ना रहे। पंडी जी आ घर के बड़–बुजुर्ग लइका के फुसलावत–फुसलावत केतना बात गढ देले इ बीरन के सवाल से साफे बुझात रहे। बाकिर ऊ बड़–बजुर्ग लोग इ बात भुला गइल रहन। बीरन के मुख पर दुख ना आवे इहे सोचत–सोचत एगो नवका सपनमहल रचा गइल जवना के बुनियाद झूठ पर गढाइल रहे।

रोज इहे होखे। बीरन के सैकड़ो सवाल के जवाब पंडी जी आ ओकरा घर–परिवार वालन के देवे के पड़त रहे। दस दिन बीतल ।गरूड़ पुराण ओरा गइल। नोह–केश हो गइल। पिंडा दिया गइल। पानी दिया गइल। सब धीरे–धीरे पूरन भइल। तेरहवां दिन सराध भइल। नयका कुरता पेन्ह के बीरन खूब हर खाइल। सबके लगे जा–जा के देखवलस। सब विधि–बिधान के बाद जब पगड़ी के बात आइल तबो भयाद लोग बीरने के आगे कइलस। ओकर चाचा कहबो कइलन– हम पगड़ी बन्हाएब।बाकिर ओकर दादा कहलन– जब सब इहे कइलस तऽ इहो करी। तू लोग एकर सहजोग करीह। ओकरा खातिर कवनो रोक थोड़हीं बा।बाकिर जब भन्सार अलग बा तऽ पगड़ी एकरे के बान्हल उचित होई। उहाँ एकट्ठा सब भयाद लोग इहे बात के ठीक मनलस।

पगड़ी बन्हाये घड़ी बीरन के जब पगड़ी ओकर दादा बन्हलन तऽ मनहरी के छाती फाटे लागल। एतना छोट लइका के बिधना के लगे दया नइखे। पछाड़ खाके ओहिजे माथा पटक के रोवे लगली। पगड़ी बन्हा के बीरन सभका से असीरबाद लेवे लगलन। जसहीं अपना माई लगे पहुँचल ओकर माई ओकरा के अँकवारी में भर लेहली। आँख से गंगा जमुना हिलोर मारत निकस पइसली। अचानक बीरन बड़ हो गइल रहे। इहो बिधना के एगो अउर खेल लागल । ऊ आपन माई के चुप करावत कहलस– हम बानी नू। हम बाबूजी के सब भार अपना हाथे लेब। तू काहे रोवतारू। हम सभ कर लेब। हम कवनो छोट बानी। हम बड़ हो गइल बानी। देखऽ तहरो से बड़...! माई के मन के हजार टूक भ गइल बचवा के बात सुनके, बाकिर ऊ जे नाप के माई से अप. ना के बड़ देखवलस , माहौल के तनी हलुक कऽ देहलस।

पंडी जी सब कर करा के जब जाये लगलन तऽ बीरना कहलस– ए बाबा! हमार बाबूजी आज तऽ तरेंगन बन के लऊकब ? पंडी जी खाली मुड़ी हिलवलन आ उहां से चल देहलन।

रस्ता भर उनकर मन खूब बिचलित भइल। इ लइका के एतना मानसिक बोझ?? करमकाण्ड के अनबूझ किरिया करम तऽ बुढाड़ी भइलो पर हम खुदहीं ना बुझनी तऽ ऊ लइका के करमकाण्ड करा के एतना सवाल हमनिये के नु देहनी सन।मन उनकर ग्लानि से भर गइल। आपन ज्ञान उनका छोट बुझाये लागल। बार–बार लागे कि बीरन हँसऽता आ कहऽता– तहरा से तऽ ढेर हम जानऽतानी। पंडी जी के झूठ पर बीरना के साँच बुझल के परभाव अब पंडित के मन के बेचौन कर देहलस। ऊ ओहिजे एगो पाथर पर बइठ गइले। अब उनका आपन ज्ञान आ करमकाण्ड दुनो ओछ लागे लागल। बीरन के

अनघन सवाल के जवाब अब उनसे खुदही पूछे लागल– का सचहूँ मरला पर लोग हवा हो जाला? का सचहूँ दस दिन ले कर्मकाण्ड के बिधिबिधान कइला से लोग तरेंगन बन जाला? का गरुड़ पुराण मन के बान्ह दी? का पगड़ी बान्हल लइका बोझ संभारे लायक हो जाला भा संभारेला? संभार ली? का? का? का? हतना सवाल? एगो छोटहन अनबुझ के? ई का हो गइल?

पंडी जी सोचे लगलन– एकरा पहिले त केतना सराध करवनी बाकिर कवनो लइका अइसन ना मिलल! ई बीरना तऽ सवालन के गाछ बा। पतई लेखा एकक गो उग के सवाल के गाछ कब बन गइल पंडी अब बुझे के कोशिश करत रहलन। तेरह दिन में गाछ बन गइल ई तऽ बुझलन बाकिर साँच???

झटपट उठले आ वापस ल्उट अइले– देखले कि बीरन सभ लइकन संगे खात रहे। इंतजार कइलन। पर ऊ तऽ अचानक उठल आ आपना संघतिया सभ के संघे खेले खातिर भाग गइल। पंडी जी फेर ओकरा पीछे दउड़लन। बीरन के बाबा पूछबो कइलन– का भइल पंडी जी? कवनो बात? ना।.....ना ....ना कहऽते बीरन के पीछे दउड़लन। पर खोज ना पवलन। थक हार के घरे चल गइलन बाकिर रातभर सुत ना सकलन। फेर भोरे पंडी जी बीरन के घरे आ धमकलन। का हो? कंटहा पंडित के केहु के दुआरे जाये के कवन दिन ठीक होला इहो तहरा के बतावे के पड़ी का? तहन लोग के पंडी जी का कह दियाइल सचहूँ अपना के पंडित बुझे लगऽलऽ। ऊ तऽ हम बड़ले बानी! हुंह .....काम परे तऽ पंडी जी आ सेराते कंटहाऽऽ...! बाकिर जातानी हमरा अभी बहस करे के मन नइखे। जे भी बा हम रऊरा से ऊपर बड़ले बानी। तनी रिसिअइले पंडी जी कहले।बखत पर बाप आ बखत पर साँप ई राउर बिचार बा! हम तऽ जे करऽतानी ऊ सभे जानऽता।

चलऽतानी परनाम! कहत ऊ फेर तेजी से निकल गइलन। असहीं कय दिन बीत गइल बाकिर पंडी जी के बीरन से बतिआवे के मौका ना मिलल। सभ गोतिया भयाद के संघे ऊ घरहीं मे रहत रहे। जब सभ लोग अपना अप. ना घरे लवट गइल आ सभ लोग आपन रोजी रोटी के जुगाड़ में लाग गइल तब बीरन अकेले हो गइल। अब ओकरा फेर आपन बगइचा, इनार आ सिवान इयाद पड़ल। ऊ आपना माई से कहलस– बगइचा जातानी तनी खेत में पानी निरा दीं। हूँम्म.....मनहरी के कहते ऊ तेजी से निकल गइल। मनहरी माथ पर हाथ धऽ लेहली– ओह! बतियो पूरा न सुनलस...।का जाने ओकरा के कहलसऽ पानी निरावे खातिर।तबो जोर से चिलइली– अन्हार होखे से पहिले आ जईह.....ई त्ऽ अपना मन के ढाढस देहली बाकिर उनुको पता रहे कि ऊ कुछो ना सुनलस।

गाँव के सभे लोग बीरन के खूब दुलार करस आ ओकरा बुद्धि के बड़ाई करस। ओह घरी मनहरी के मन के खूब सुख मिले। ऊ अपना लइका के मने मन थुकथुका देव आ भगवान के खूब मनावे कि ओकर लइका मान मरजाद के साथे समाज में आगे बढे। बीरन के दिन खूब नीमन कटे लागल।

एकदिन ऊ अकेलहीं जात रहे तऽ पंडी जी के देखऽते चिलऽइलस– ए पंडी जी! पंडी जी के खुशी के ठिकाना ना । दउड़ के अइलन ।का हो? का हाल बा? ठीक बाड़ऽ नू?

अरेऽ हम तऽ ठीक बानी। बाकिर हमार बाबूजी एको दिन हमरा के देख के ना चमचमइलन?

पंडी जी कहलन–ए बीरन! एगो बात कहीं? हँऽ–जबाब देहलस। हमनी के तहरा के जे सब बात कहनी सन ऊ कहल सुनल खाली बात हऽ। साँच बा कि ना कहल मुसकिल बा।बात बीचहीं में काटत बीरन पूछे लागल–तऽ रउरो पता नइखे ऊ चमकिहें कि ना? ना हो? अइसन बात नइखे । तरेंगन तऽ चमकी।बा. किर तहार बाबूजी कवन होइहें तू चमकत तारा देख के मान लीहऽ।हमनियो के इहे करीला सन। सुनल सुनावल बात में साँच खोजल जाला। जे विश्वास से मिलेला। तुहूँ मान लीह। विश्वास करीहऽ तऽ सब साँच होई बाकिर साँच ह कि ना ई तऽ हमहूँ नइखी जानत। केहु नइखे जानत।

अब बीरन आउर भरमित हो गइल। ओकरा खातिर पंडी जी वाला पहिलका ज्ञान सब बेकारहो गइल। ऊ अब नया तरीका से सोचे खातिर विवश भइल। जब पंडी के नइखे पता तब के बताई। बाकिर पंडी जी मन हलकान भइल। ऊ ओहिजे संकल्प लेहले कि अब आगे से कवनो लइका के भरमित ना करीहें। पूजा पाठ आ कर्मकाण्ड के बिधान बता दीहें बाकिर जबरदस्ती ओमे नून मिरचाई लगा के ना बरगऽलइहें।

जाये घड़ी बीरन के खूब असीसले आ चल देहले। अब उनकर मन शांत रहे।

बीरन दउड़ के अपना घरे आइल आ पंडी जी के बात आपना बाबा के कहलस। ई सब सुन के ओकर दादा सोचलन– बात तऽ ठीके बा! हमनियो के ई एतहन छोट लइका के का का बुझा देहनी सन। ई सब सोच के कि ना बुझी। पर एसे तऽ ढेरे कुछ बुझे के पड़ गइल एकरा। बीरन के दादा के अपना गलती के एहसास भइल।बाकिर पगड़ी बन्हान के असली ध ारम त बीरने निभवलस। सभका के आपन बात से जगा देहलस। सभकर भरम टूटल। आज कय गो मन के मुक्ति मिलल जे अंधविश्वास आ समाज के बनावल बेमतलब रीति रिवाज से छोट बड़ सभका के कष्ट देत रहे। गरुड़ पुराण के असली मकसद पूरल।

घाटशिला, झारखंड

प्रेम के बन्हन

संजय कुमार ओझा

ई प्रेम के बन्हन ह, खोलीं जन,
तनी ऊंच नीच सहीं, बोलीं जन।।

ठीक बा कि भाई, पटिदार होला,
धन दउलत के हिस्सेदार होला,
आन का उसकवले, डोलीं जन,
ई प्रेम के बन्हन ह, खोलीं जन।।

चिड़ई खोंता लगावे ले खिड़की में,
संबंध दरक जाला एगो झीड़की में,
बात के कबहूं मारीं, गोली जन,
ई प्रेम के बन्हन ह, खोलीं जन।।

केहू का धन दउलत अपार होला,
केहू का लगे नीमन बेवहार होला,
दूनों के एक तरजुई से तोलीं जन,
ई प्रेम के बन्हन ह, खोलीं जन।।

का फायदा बा रोज का तकरार से,
मुदई त मर जाला मिठको बेवहार से,
तींत बात प धरीं केहूके, फफेली जन,
ई प्रेम के बन्हन ह, खोलीं जन।।

प्यार बाँटब तऽ रउरो मिली प्यार,
ई नगद सउदा ह, ना चले उधार,
मन हलूक करीं, बनाईं पहेली जन,
ई प्रेम के बन्हन ह, खोलीं जन।।

❍ धनगड़हां छपरा, बिहार

नेह नाता

सुरेश कांटक

रुसि जाइला त हमके मनावे बालमा
हो मनावे बालमा !
मीठी बतिया से मोहे फुसुलावे बालमा !
मारि बोलिया के गोली
पिया करेलें ठिठोली
नाहिं अइसन चोन्हाइल
चढ़ि के अइनी जबसे डोली
नाहिं हँसीला त हमके गुदगुदावे बालमा
हो मनावे बालमा !
ई ह कइसन नेह नाता
जोरि दिहलें बिधाता
बोलि दीहींला कबो त
नाहिं चले देबे पाता
खूबे लूका–छीपी क के भरमावे बालमा
हो मनावे बालमा !
राति नीनि नाहीं आवे
जबले घरे नाहिं आवें
जिया धुकुर धुकुर करे
उनुके याद तड़पावे
चोला चिरईं बेकल कइसे पावे बालमा
हो मनावे बालमा !
कबो अँखिया देखावे
कबो झुलुहा झुलावे
कबो सपना देखावे
कबो फूल गमकावे
कबो सुतले में अचके जगावे बालमा
हो मनावे बालमा !
आँखि आँखि से मिलेले
खीसि गते से उड़ेले
एगो मुसुकी प जाने
कइसे अमरित झरेले
कांटक झट देना छाती से लगावे बालमा
हो मनावे बालमा !

❍ आरा, बिहार

माई

राजेश कुमार जैसवारा

माई अस संसार में, नइखे केहू होत ।
माई सागर नेह के, जीवन के बा स्रोत ।।

2. माई के अँचरा बहे, जीवन के रसधार ।
जीवन जेसे पा रहल, ई सउँसे संसार ।।

3. माई माथा चूम के, लेलीं बला उतार ।
माई के आशीष से, सुखी सकल परिवार ।।

4. माई के मुँह देखि के, होला मन उजियार ।
माई में जिनगी बसे, माई घर संसार ।।

6. माई तहरा पाँव पे, रोज झुकाईं शीष ।
जनमी तहरे कोंख से, अतने दीं आशीष ।।

7. माई के दुख देखि के, रोवत बा मन मोर ।
दुख के बदरी कब छटी, होखी सुख के भोर।।

8. माई बा ममतामयी, क्षमा नेह के खान ।
माई से बढ़िके इहाँ, ना कउनो भगवान ।।

9. माई तहरा बिन भइल, सूना ई संसार ।
माई जइसन के करी, जग में प्यार दुलार ।।

10. माई बाबू सोच के, बाड़न बहुत उदास ।
लड़िका हाथे से गइल, आगे केकर आस ।।

झूँसी, प्रयागराज (उ. प्र.)

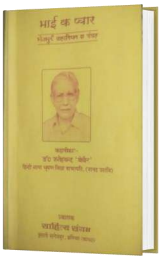

बेचैन 'भाई क प्यार'

डॉ. अवधेश कुमार अवध

किस्सा – कहानी त हमरा देस अरु समाज में बहुत पुरान तरीका बाड़े अपना हिरदै क बात दूसरा तक पहुँचावै खातिर। ई समझै अउर समझावय बदे सबसे सरल तरीका बाड़े। सत्नरायन बाबा क कथा, जिउतिया माई क कथा, गोधना कुटाई क कथा, गउरा–संकर के बियाह क कथा, राजा–रानी आ परी लोगन क कथा जन–जन में लोकपिरिय बा। सारंगा– सदाबिरिछ, लैला–मजनू क कहनी भी कम परसिध ना बा। दादी आ नानी क रिसता नाती–पोता से कथा–कहानी–किस्सा के कारन भी इयाद कयल जाला। एहि पुरातन बिधान क पालन करत बानी डॉ फतेहचन्द बेचौन जी अपना लिखल कहानी क पुस्तक 'भाई क प्यार' में।

27 छोट–छोट भोजपुरी कहानियन क इ संग्रह बा 'भाई क प्यार'। उत्तर परदेश क बलिया निवासी ७२ बरिस क लेखक डॉ फतेहचन्द बेचौन सचमुच क बहुतै बेचौन बाड़ें समाज के समसिया के ले के। रिसता बिकात बा कागद क मोल। विसवास छलात बा अपने लोगन से। नंगापन सबके आँखिन क पानी सुखा देले बा। अनजान मनई क देख के मन में डर समात बा। राहगीर के रस्तो बतावै में मन डेरात बा। लइकिन क जिनगी पहिलहूँ से खराब होत बा। सिक्छा अउर असिक्छा में कउनों भेद ना जनात बा। एहि सब से बचे खातिर इ लेखक जी अपने गाँव–गिराँव में जानल सूनल बूझल किस्सा कहानी द्वारा आपस में भाईचारा सिखावै क परयास करत बाड़ें। नीमन सीख– सिक्छा सिखावत बाड़ें। अतिथि सेवा, सोझबक देहाती, ऊ अनजान राही, दहेज अपराध आ भाई क प्यार एह पुस्तक क खास कहानी बा। भोजपुरिया भासा के परचार–परसार में साहित्य संगम, बलिया से परकासित इ किताब क खास जगह बा।

बड़ भाई बेचौन जी से हमार मुलाकात उज्जैन में एक कारकरम में दो बरिस पहिले भइल रहे। उनके माथे के सफेदी में उनकर अनुभव चमकत रहे। हमार अरु उनकर साथ बहुतै अपनापन क रहै। ऊ अपने पबित्तर हाथ से हमके 'भाई क प्यार' क सवगात देले रहलीं। उनका के सुभाय अउर गियान दुनु बहुतै गहरा रहे। हमार ईसवर से प्राथना बा कि 'भाई क प्यार' सगरी धरती के आपन घर–परिवार अउर सबन लोगन के भाई–भाई बने में मदत करी।

चंदौली, उत्तर प्रदेश

चाणक्य नीति

ई चाणक्य नीति में श्री दिनेश पाण्डेय जी द्वारा लिखल सरल आ रोचक ढंग से काव्यात्मक भावानुवाद प्रस्तुत कइल जाई। एकर मूल उद्देश्य अपना भाषा के लोकप्रियता बढ़ावे खातिर कइल उद्यम आ साहित्य के समृद्धि बा।

दिनेश पाण्डेय

पनरहवाँ अध्याय

जेकर चित्त पसीज बहे करुना तरल।
सकल जीव पर नेह छोह हिरदे भरल।
कथी ग्यान निरबान सरिस साधन बिसम?
जटाजूट बिन्यास कथी लेपन भसम? 1

एके आखर बोध मिले गुरु के सरन।
देवे जोग न कोउ धरा प्रतिदान धन। 2

दुइबिधि कंटक दुस्ट दुहूँ करिहऽ समन।
दे पनहिन मुँह थूर या कि सुदूर तजन। 3

भुक्खड़ कुचइल, मइल दाँत, निठुरे बयन।
गधबेरे जे सोय तजे लछिमी रमन। 4

तजे मीत हित भृत्य नार रिक्तन सहज।
होत धनागम जुटत फेरु धन हित महज। 5

धन अरजल अनरीति फरे दसिए बरस।
होत गियारह साल सोरि सहिते जरस। 6

बेढंगापन बड़न केरि बढ़िया कहत।
उतिमों गुन नीचन पले निंदा करत।
पी अमरीत के राहु करल मिरतू बरन।
नीलकंठ बिख पी बनले तारन तरन। 7

से सुभोज जे बिप्र बाद बाँचल रहल।
भइल आन सन नेह उहे साँचा कहल।
तबे विद्वता जब न करे निरघिन करम।
जब न होय जिअ दंभ उहे उत्तिम धरम। 8

लुढ़के ठोकर खाय कबो मनि पाँव तर।
ईहो संभव काँच कनी चढ़ राव सर।
कीने–बेंचे बेरि किंतु कीमत खुलत।
काँच काँच मनि तुल्य मूल्य मनि ही तुलत। 9

अगनित सास्त्र बिद्या बहुत अरजल कठिन।
जिनिगी बाटे तनीमनी बहुते बिघिन।
ए से चतुर हमेस सार तत के गहत।
जइसे जल से दूध बिलग हंसन करत। 10
घर अइले चलि दूर थकल बिरथा पथिक।
आवभगत बिन भखे तवन पामर बधिक। 11

चतुर लोग बहु भाँति पढ़े आगम बिपुल।
कलछुल अस अनजान रहे रस आत्म तुल। 12

जीवन ह इक नाव तरत भवसिंधु जल।
दिज गुरुजन मल्लाह धरत मारग कुसल।
नीके उतरे पार गहे आधार तल।
जे बइठल मस्तूल गिरे सहजे अतल। 13

ई अमरित के खानि धवर सुंदर बदन।
औसधिनायक, कांतियुक्त ससि मनहरन।
इनको आभा खीन जबे सूरज उगल।
दोसर के घर जाइ न के लघुता गहल। 14

पुरइन दल पर रीझ मधुप नियरे फिरत।
पिअत गंध मकरंद अलस जग से निरत।
बिधि बस परे बिदेस बलम उनमन रहत।
पुहुप कुरैया पा सेहू बहुते गनत। 15

घोंखे पितु करि रोस, पिया लातनि दलत।
बैरिनिया मुँहलगी तेहि हियरे धरत।
मोर बास नित तोड़ करत सी' के बिनय।
एही से मन खिन्न तजीं दिज के निलय। 16

बंध बहुत दृढ़ प्रीतिबंध सबसे पृथक।
काठ छेद सक तवन मधुप कोरक निसक। 17

चंदन तरु नहिं गंध तजत भल छत–बिछत।
नर हस्ती नहिं बूढ़ होइ लीला बिरत।
कोल्हू पेरे ऊख तजे नहिं मीठपन।
हीन होइ कुलवंत खोइ नहिं सीलधन। 18

कठिन सब्दन के अर्थ–

पसीजल– द्रवीभूत भइल। धरा– धरती। प्रतिदान धन– बदले में दीहल धन। भृत्य– सेवक। रिक्तन– खाली हाथ, दरिद्र। अनरीति– गलत तरीका से। सोरि– मूल। बेढंगापन– बेतरतीबी, असहज आचरन। पामर– दुष्ट। बिपुल– अथाह, अधिक। अतल– गहराई में। मधुप– भौंरा। मकरंद– पराग। निलय– घर।,

संदर्भ कथा (क्रमांक 16):–

लछिमी के शिकायत ह– ''पिता सागर के पी लिहले (अगस्त्य), पति के लाते मरले (भृगु), बैरिन (सरस्वती) के हृदय में धारण करेले, हमार वास (कमल) के तूरि के शिव के अर्पित क देले, एही से मन खिन्न रहेला आ हम विप्र घर के घरे ना रहीं।''

छंद संकेतः– रासावलय। मात्रा 14.–7 (।।।),

संस्कार देखअ

कुमार मंगलम रणवीर

पेड़न के चटक हरियाली में गांव के सिंगार देखअ..
मौसम जे भी हो इहवाँ फुहार संगे तू बहार देखअ।
आम–जामुनयधान–गेंहू संगे मक्कई के बाल देखअ
साठ बरस के बुढवो आरी फाने फूर्ति हाल देखअ।
भय के मारे न भागीयअड़ल छोरा के मिजाज देखअ
नदी छोरे प्यार के चासनी में डूबल तू देवदास देखअ।
विपत्ति में कई मिलिहन इहवाँ हाथ पकड़े वालन..
बचल–खुचल जग के तनि खानदानी संस्कार देखअ।

❑❑

❍ **वाराणसी (उत्तरप्रदेश)**

शिखरन से आगे

श्री अशोक लव हिंदी साहित्य खातिर एगो सुपरिचित नाम हईं। हिंदी साहित्य के समृद्धि के कहानी बिना ऊहाँ के नाम के जिक्र के पूरा नइखे हो सकत। शैक्षणिक आ साहित्यिक कृतियन के रूप में अब ले लगभग 150 रचना–ग्रंथ प्रकाशित हो चुकल बा। ईहाँ प्रस्तुत बा ऊहाँ के सबसे अधिका चर्चित उपन्यास 'शिखरों से आगे' के भोजपुरी अनुवाद 'शिखरन से आगे' के कुछ अंश। ई धारावाहिक पाठकगण के सोझा

अब आगे के कहानी...

मूल उपन्यासकार
अशोक लव

''आपो कुछू–ना–कुछू करते होखब, तबे त उनके करंट लागत रहेला।''

''हमार विभागाध्यक्ष हवें। उनुके मक्खन त लगावही के पड़ेला, नाहीं त हमार सी0आर0 खराब क दिहें।''

''सी0आर0 खराब भइला पर आप पर का प्रभाव पड़ी? आपके नोकरी के कवन गरज बा? मिस्टर नंदा एतना बड़का कंपनी चलवत बानी। सी0आर0 के चिंता त हमनी जइसन लोग के करे के चाहीं। आजु नोकरी चल गइल त सीधे फुटपाथ पर बइठे के पड़ जाई।''

''अरे, आपके के हिला सकत बा? प्रिंसिपल आपके मुट्ठी में बाड़े। हमरो पापी पेटवे खातिर नोकरी करे के पड़ेला। ताऊ जी के मसका लगावे के पड़ेला। कुल्लू–मनाली वाला ट्रिप में ई हमरा साथे गइल रहलें। ओहिजा त ई हद कऽ दिहले। एह तरे व्यवहार करत रहले कि जइसे हमरा साथे हनीमून पर आइल होखस। का कविता सुनवले रहले। – चनरमा आसमान में बा। ओहके का देखीं समनवे जब चान बा।'' पता ना का–का बकबकात जात रहलें। अपना पतिदेव के त हम चान जइसन लउकनी ना, इनहीं के चान लागे के रहनी। जानत बानी कि हम इनसे का कहले रहनी? हम कहनी– 'सर! रउआ दादा बने के मिठाई ना खिअवनी। हमनी के बतइबो ले ना कइनी।''

विनोद आपन हँसी रोक ना पवले।

''हमार बाति सुनि के ताऊ जी ओहिजा से खिसक गइले। ओह दिने त इश्क के भूत उतरल रहे। अगिला दिने फेर उहे इश्क सवार हो गइल। हम लॉन में कुर्सी बिछा के बइठल रहनी। लगहीं आ के बइठ गइले। कहे लगले– मिसेज़ नंदा, हम रउआ के रउआ नाँव से बोलावल करीं त रउआ बाउर त ना मानेब नू?'' हम जवाब में कहनी– ''बाउर काहें मानेब! आपसे छोट बानी। आप हमार नाँव ले सकेनी।''

श्रीमती नंदा तनी रुक गइली, फेर बतावे लगली, ताऊ जी कहे लगले – ''तहार नाँव केतना पवित्र बा। अर्चना! माने वंदना, माने पूजा। ई मिसेज़ नंदा – मिसेज़ नंदा कहल हमके आछा ना लागेला। पति के जाति से महिला लोग के आपन अस्तित्व मेटा जाला।'' हम सोचनी कि इनकर खिंचाई करे के पड़ी, त तनी जम के करीं। हम सोचनी कि इनकर खिंचाई करे के पड़ी, त तनी जम के करीं। हम कहनी– ''सर! आप त कबो मुड़ी में मेंहदी लगा के आवेनी, कबो केसियों ना रँगेनी।एह तरे आछा ना लागेला। आपके आपन पर्सनैलिटी बना के राखे के चाहीं। आपके रंग केतना साफ़ बा। आप ब्लैक डाई लगावल करीं। गोदरेज के ब्लैक डाई आपके बड़ा सूट करी। विनोद तूँ देखले बाड़ न! अब बुढ़वा डाई क के आवे लागल बा। अइसन–अइसन डायलॉग मारेला कि सुनि के शरम आवेला। अरे, नाती–पोता हो गइल। बेटा बिअहलऽ, बेटी बिहआइल, दोसरकी बेटी के अलगे इश्क चलत बा। शायद तहके पता नइखे। इहे बतवले रहलें, लइका इंजी. नियर ह, मित्तल जाति ह। ताऊ जी कहेला, बनियन से बिआह ना करेब। छँउड़ी ओही से बिआह करे पर अड़ल बा आ ताऊ जी हमरा इश्क में पागल भइल बाड़ें।'' श्रीमती नंदा हँसते–हँसत कहली।

विनोद के हँसी रुकत ना रहे। ऊ क्लास से बहरी आ गइले। ऊ बड़ा कठिनाई से हँसी रोकत कहले– ''आप त कमाल कर रहल बानी। बेचारा के काहें पागल बना दिहले बानी?''

''अबहिन पागल कहाँ बनवले बानी, पागल त अब बनाएब। ई हमरा के तीन साल ले केतना परेशान कइले बाड़े, ऊ हमहीं जानत बानी। डायरी साइन करावे ले जाईं त बेमतलब के गलती निकाले लगीहें। प्रश्न–पत्र बना के दीं त ओहू में बिना मतलब के गलती निकाल दे। एक बेर ई हमरा से एगो प्रश्न–पत्र तीन बेर बनववले रहले। इनकर लाडली त प्रेमलतावा हऽ। एहसे चिपकल रहेले। ओकर कवनो गलती ना निकाले। अब देखिह! हमरो प्रश्न–पत्र इहे ना बनावें, तब कहिह।

''अब जेतना हो गइल, ढेर बा। बुढ़उती में उनका के काहें पागल बनावत बानी? कहीं हार्ट–अटैक हो गइल त मर जइहें। जाई, अब उनके रिलीव क आई।'' विनोद ने कहा तो श्रीमती नंदा चाबियों का गुच्छा घुमाती चली गई।

विनोद कक्षा में आ के बइठ गइले।

ऊ रामेश्वर सिन्हा के बारे में सोचत रहले। उनके रिटायरमेंट के बाद के प्लानिंग करे के चाहीं। ऊ कहाँ उलझ गइल रहले। उनके जिनगी में का अभाव बा। मेहरारू बा, सुंदर बा, आकर्षको बा, बेटा–बेटी बिअहाइए गइल बाड़ें। एगो खाली छोटकी बेटी बिआहे खातिर रहि गइल बा, प्यार–व्यार करे के उमिर ओहके बा। पता ना ऊ काहें भटकत बाड़ें? स्वामी जी अइसने लोग के बारे में कहत रहनी। एह उमिर में पहुँचलो पर नारी–देह के आकर्षण से मुक्त ना हो पावे वाला आदमी पर दया कइले जा सकता। उनकर मानसिकते दूषित बा।

स्थापना–दिवस–समारोह के मीडिया–कवरेज खातिर रामेश्वर सिन्हा आ मिस वर्गीस के ड्यूटी लागल रहे। ऊ उनहूँ के साथे छेड़छाड़ क दिहले रहले। टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रेस–रिलीज दे के लौटत–लौटत साँझ हो गइल रहे। रामेश्वर सिन्हा मिस वर्गीस के कैब में उनका घरे छोड़े जात रहलें। ऊ कैबवे में छेड़छाड़ शुरू क दिहलें। मिस वर्गीस कनॉटे प्लेस में उतर गइली। जाड़ा के रात में अकेले घर पहुँचल रहली आ रोअत–रोअत प्रिंसिपल के सागरो घटना बतवले रहली। बेटी के उमिर के मिस वर्गीस के ओर कुदृष्टि डालत उनके लाज ना लागल! प्रिसिंपल उनके निलंबित करत रहलें। मिस वर्गीसे के दया आ गइल।

संस्कार के बात होला। पशुजइसन जिनगी जीए वाला से का आस लगावल जा सकता।

परीक्षा खतम भइल। ऊ उत्तर–पुस्तिका जमा करे गइलें। कृति ओहिजा मिल गइली। खाली हैलो भइल। ऊ उत्तर–पुस्तिका जमा क के कमरा से बाहर जाये लगले त कृति रोकि के कहली– ''गायत्री के बधाई दे दीं। ओकरा पति क पदोन्नति भइल बा। हमनी के लंच पर ले जा रहल बा। एहीजा से सीधे कनॉट–प्लेस जाए के बा। आपके का कार्यक्रम बा?''

''स्कूल से बोर्डिंग–हाउस। मुल्ला के दौड़ मस्जिद ले त रहेला।''

श्रीमती गायत्री आ गइली। विनोद उनुके बधाई दे के स्टाफ–रुम में आ गइले। परीक्षा के दिनन में स्टाफ –रुम अक्सरहाँ खालिए रहत रहे। उत्तर–पुस्तिका जाँचे में सुविधा होत रहे। ऊ लॉकर में से उत्तर– पुस्तिकाते रहले कि चपरासी आ के एगो स्लिप पकड़ा गइल। प्रिंसिपल बोलवले रहले। उत्तर–पुस्तिका लॉकरे में ध के ऊ प्रिंसिपल–कार्यालय के ओर चलि दिहले।

''आव, विनोद! का करत रहल हव? बइठ!'' उनके देखते प्रिंसिपल शुक्ला बोलले।

''सर! के तरे ईयाद कइनी हँ?''

''एगो सोमिनार बा। 'राष्ट्रीय शिक्षा–परिषद्' आयोजित क रहल बा। 'विद्यार्थियन पर किताबन के

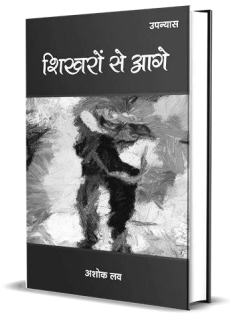

बोझ' विषय पर तीन दिन के सेमिनार बा। अपना स्कूल से दू टीचर्स के बोलावा बा। तूँ बोल लेब? एही खातिर बोलवले रहनी हँ। तहार नाँव भेज दी?''

''बड़ा बढ़िया विषय बा सर। जरूय जाए के चाहेब। ई सेमिनार कबसे बा?''

''सोमार से। ओही लोग के कांफ्रेंस–हॉल में बा। ई सर्कुलर ले लऽ। बढ़िया तइयारी क के जइहऽ। तहरा साथे मिसेज़ नीरजो जइहें। ठीक रही नू?''

''जी, सर! हमरा आपके लगे वइसहीं आवे के रहल हऽ। एक अनुरोध रहल हऽ। सर! आप हमरा के हाउस–मास्टरशिप से मुक्त क दीं त हम आभारी रहेब।''

प्रिंसिपल शुक्ला एकदम चौंक गइले।

''काहें? का हो गइल? हम त तहके सीनियर हाउसमास्टर बनावे के बारे में सोचत रहनी हँऽ। कवनो समस्या त ना आ गइल?''

''अइसन कवनो बात नइखे सर। कई बरीस हो गइल। अब तनी आराम करे के चाहत रहनी हँऽ।''

''बिआह त नइख करत?''

''सर, आपके सबसे पहिले बताएब।''

''रहब कहाँ?''

''ओकर व्यवस्था हो जाई।''

''नया हाउसमास्टर केकरा के बनावल जाव?''

''मिस्टर ललित किशोर जी ठीक रहीहें। उनकर पत्नी उनसे अलगा हो गइल बाड़ी। उनुके अकेले रहे में ढेर समस्या आवत बा। हमके बतावत रहलें। बोर्डिंग हाउस आ जइहें त उनकर समस्या दूर हो जाई। लइकनो के अच्छा हाउसमास्टर मिल जइहें। उनके आपहूँ से आछा बनेला।''

''बढ़िया ईयाद दिअवल। ऊ हमरा से बहुत पहिले बात कइले रहलें। उनसे बात क लेत बानी। ऊ हँ कहि दिहें त तहरा के रिलीव क देब। हँ, नीरजा से मिलते जइह। मैथ्स डिपार्टमेंट में होइहें।''

क्रमशः

❍ अनुवादक : केशव मोहन पाण्डेय

आपन लइकाई

तारकेश्वर राय 'तारक'

टीवी के खबरिया चौनल पर जब हम अरनब गोस्वामी नीयन एंकर के चिचियात देखिना आ कहत सुनिना ''पुछता है भारत'' त सोंची ना ए भाई जनाता जेकरा से ई बाबू सवाल पूछत बाण उनकरा इनकमिंग में कवनो दिक्कत बा। एहीसे तनी टांठ बोले के परता। आजकाल समइयो त अइसने न चलत बा टावर टुवर के दिक्कत त बटले बा। एक अनार सौ बीमार रहीहन त दिक्कत होखे से के रोक पाई। अब फोन खाली हाल चाल बोले बतियावे खातीर थोरे न बा। जेकर जेतना बुद्धि बा उ ओतने तरह से एकर उपयोग करता, केंहू पढ़त लिखत सी खता त केंहू गीत संगीत फिलिम भिडियो देखता, केंहू किसिम किसिम के मुहँ बना के सेल्फी लेवे में बाझल बा। केंहू सोशल मीडिया से देश दुनियाँ से बिचारन के आदान प्रदान कर रहल बा। दूर रहत सगा सम्बन्धी से वीडियो कॉल करी के जीवन्त बतिया रहल बा। जय हो बिज्ञान के। अरे हं बात खबरिया चौनल के एंकर के होत रहल ह हम मोबाइल के गुण गावे लगनी। त उ बाबू सवाल त पुछेलन लेकिन ओके बोलहुँ ना देलन जे उनकर मन माफिक नइखे उत्तर देत, कम बेशी कुल्हिये खबरिया चैनल के इहे हाल बा, झूठो के नाटक देखे के ढेर मिलेला खबर मनोरंजन के नाँव पर।

ई कुल्हिये देंखि के हमके हमार लइकाई इयाद आवता आ, इयाद आवतान मरखहवा माटसाब। मरखहवा माटसाब भी अइसही आँख लाल कई के छड़ी के हाथे जवना लइका ओर ताक देंस त हमनीके हालत पातर हो जात रहे। ओइसे त माटसाब लोग लइकन के नाँव ध के गोहरावेलन जा, लेकिन लोकतंत्र के इहे त खूबसूरती ह टाट पट्टी पर बइठे वाला भी सरकार में ऊँचकी कुरसी पर बइठल बाबू लोग के गरियावे आ उनकर मनमाफिक नामकरण के छूट पा जाला। केहु चोरवा त केंहू करियवा मटीलगना के उपाधि पा जाला अनायासे। हमनियो के गुरुजी के मरखहवा माटसाब के नाँव से ही गोहराई जा।

पाँचवा किलास के डड़ारी जइसहीं फननी जा छठवाँ में इस्कूल के झोरा में अंग्रेजी के किताब खातीर बेमन से जगहा बनावे के परल। एतने नाही परदादी सँस्कृत के साथे साथ अंतराष्ट्रीय माई के चिन्हे जाने के अतिरिक्त भार सुकुवार कान्ही पर लदा गइल। इस्कूल जाये वाला झोरा में जइसही अंग्रेजी के घुसपैठ भइल, हमनीके दिमाग टेंनसनिया गइल। ऊपर से घर वालन के दबाब की ये बाबू अंग्रेजी मन लगा के पढ़े के बा एही से नीक नोकरी भेटाई धाक जमी गाँव समाज में, देख त फलनवा पानी नीयन अंग्रेजी बुकेला, कोशीश कर ओइसने बने के। बाप रे बाप अंग्रेजी से पाला पर त गईल, बाकी ना हमनी के पल्ले पड़ल ना त हमनीके माटसाब के। कुंजीए सहारा रहे माटसाब के नइया पार लगावे खातिर हमनीके त नाय पर सवार रहबे कइनी जा।

ओह समय ''सब पढ़े, सब बढ़ें'' जइसन शिक्षा योजना ना रहे आ नाही ''रुक जाना नहीं तू कहीं हार के'' टाइप कवनों स्लोगन। अइसन कवनो बाध्यता भी ना रहे कि बिना पढले ही किलास डका दिहल जा। 100 में से 30 नम्बर लियावल जरूरी रहे पास होखे खातिर। बाकी बिषय में त काँख कुँख के आई जाव, बाकी अंग्रेजी में 100 में से 30 नम्बर आवे त आवे कइसे ? यक्ष प्रश्न सोझा खाड़ रहे पूरा किलास के सोझा। से माटसाब सब तजो एक भजो के तर्ज पर हमनीके अंग्रेजी में माई हॉबी फुटबॉल अउरी दू दिन के छुट्टी खातीर आवेदन पत्र के कण्ठस्थ करे के फरमान जारी कई दिहलन।

मरता क्या ना करता माटसाब के दुखहरन के आतंक के मारे हमनीके दुनो चीज अक्षरशः कंठस्थ क लीहनी जा। पूरा किलास के हॉबी फुटबॉल हो गइल आ सभकरे बोखार के चलते दू दिन के छुट्टी चाही। कवनो एसे बा एप्लिकेशन आवे इम्तिहान में एहि में जोर जार घटा बढ़ा के लिखे के जोगाड़ बतवलन माटसाब। कइसहूँ रटत सीखत ताकत देखत समाज के श्रमदान सहयोग से नइया पार लागल। डिग्री भेटात चल गइल। हमनी के भाग्य मेहनत करे के जज्बा हार ना माने वाली धुन आ ऊपर वाले के किरपा से जिये खाये आ परिवार के पाले खातीर नोकरी मिल गइल। जीनिगी के गाड़ी डगर रहल बा।

आजकाल के बालकन के नम्बर देखि के त अवाक रह जाये के परता। हेतना नम्बर लियावे के ह? एतनो नम्बर पवला के बादो ना लइका के ना गार्जियन के संतोष बा। हमनीके एह मामिला में बड़ा संतोषी रहनी जा। पास होखे भर नम्बर के ही अभिलाषा रहे। हमनीके दू तीन भाई मिलि के एह नम्बर के छू पइती जा। जाए दिहिं रात गइल बात गइल। ढँकल छुपल राज के राजे रहल दिहल जाव। फिरंगी के भाषा अंग्रेजी से भवह वाला नाता जीनिगी भर बनले रह गइल, आजुवो अपना गाँव देहात में ढेर लोग से भवह भसुर वाला नाता बनले बा। ढेर नइखे बदलल आपन गाँव रेणु जी के गाँव से अब तक, अंग्रेजी से दूरी कम नइखे होत आ हिन्दियो से नाता ढेर पोढ़ नइखे लउकत ढेर लोग के। भोजपुरी से त सौतिया डाह बटले बा कुछ लोग के। बोलते गवाँर के पदवी भेटाये के डर सतावता। कुछलोग लागल बा एह धरोहर के बचावे में। खुशी के बात बा, बात त होखे लागल। ना जाने कहिया बिकाश होइहन सोहर गवाई थरिया पीटाई ?

सोनहरिया,गाजीपुर, उत्तरप्रदेश

गीत

सन्नी भारद्वाज

लेहलस बरखा आज नेवनवा
भरल पोखर ताल सिवनवा ।
डाकल छटका में आजु पानी
डुबे पकड़ी तर गरदनवा।

देखी देखी के किसान गदराए लगले,
गोजी ठेहा पर लगा के मुस्काए लगले।

अइले अमरूख बतिया कहत,
बाहा दूनू आर बा बहत ।
उत्तर पलटल बा चऊबगला,
देखनी मोटका लाठ बा ढ़हत।

कहत कहत एडा मारी के धधाए लगले,
गोजी ठेहा पर लगा के मुस्काए लगले।

हर बेर आशा रहे कियारी,
अबरी दाबी उपरवारी।
देखब दर मन का होला,
पुरन बात कहे ललकारी।

हरिहर कक्का जागल देवता दोहाए लगले,
गोजी ठेहा पर लगा के मुस्काए लगले।

बिया फकिराना छिटवाइब,
असो हम बोदर बन्हवाइब।
बिम्मा ओह परिया में जायी,
पलिहर तब एहर फेकवाइब।

बाबा सीजन भर के गनना गनाए लगले,
गोजी ठेहा पर लगा के मुस्काए लगले।
गोजी ठेहा पर लगा के मुस्काए लगले।

भभुआ, कैमूर, बिहार

लतखिंचुअन के पँजरी..

आकाश महेशपुरी

लतखिंचुअन के पँजरी कबहूँ तू जइहऽ मति
मति मार दिहे सँ येकनी से बतिअइहऽ मति

बस लात पकड़ के खींचे के तइयारी बा
गाँव–नगर में पसरल ईहे बेमारी बा
मंजिल देखिहऽ तू बाती में अझुरइहऽ मति–
मति मार दिहे सँ येकनी से बतिअइहऽ मति

दोसरा के आगे बढ़त देखि दुख पावेला
दुख देबे खातिर पीछे पीछे धावेला
अइसन मनई के लासा में लसिअइहऽ मति–
मति मार दिहे सँ येकनी से बतिअइहऽ मति

काम करे जे मनवा के साहस तूरे के
ऊ नीक हवे ना मीत, लगे भा दूरे के
अइसन लोग के माथे कबो चढ़ऽइहऽ मति–
मति मार दिहे सँ येकनी से बतिअइहऽ मति

कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

कजरी कहीं इतिहास न बन जाओऽ

अखिलेश अरुण

सावन के पहिला फुहार से ही कजरी के लय फूट जाला, खेत–खरिहानी से लेके गाँव के चौपाल और नीम के गाँछ से झुलत झुलुहा पर कनिया और गाँव–घर के बहिन–बेटी लोग खूब कजरी गावेला. कजरी वर्षा ऋतु कऽ प्रसिद्ध लोकगीत हऽ और अर्धशास्त्रीय गायन कऽ एगो रूप हऽ. जवन वनारस –घराना में खूब फलल–फुलल, जवन सावन महिना के पहिलका फुहार से ही इऽ गीत खूब गावल और बजावल जाला. धीरे–धीरे कजरी विधा अब जन–सामान्य के जीवन से गायब हो रहल बाऽ. कजरी के विरह गीत में भक्तिरस कऽ भी पुट मिलेला जहाँ राधा –कृष्ण, शंकर–पार्वती आदि स्तुति कईल जाला. इऽ जनसामान्य के भी गीत हऽ जवना में कनिया के शिकायत रहेला की ओकर बालम बांहर कमाए बदे गईल बाऽ. उऽ आपन अकेलपन के दुःख गीत के रूप में गाके अपना सखी–सहेली से आपन मन हलुक कऽ लेले. कजरी के एगो आउर विधा जवना में मेहरारू लोग कजरी समूह में गवेला ओके धुनमुनिया कजरी कहल जाला. धुनमुनिया कजरी कहीं–कहीं आजो सुने केऽ मिल सकेला बाकिर आज के समय में कजरी भोजपुरी और हिंदी सिनेमा तक सिमट के रही गईल बा. जनसामान्य के जीवन से मने कजरी गायब हो रहल बाऽ. उ कजरी के दिन घुर के वापस आई की न बाकिर परयास कईल जा सकेला ओही परयास के कड़ी में एगो छोटहन परयास बाऽ. डर बा कजरी कहीं इतिहास न बन जाओऽ.

मिरजापुर कईलन गुलजार हो,
कचौड़ी गली सून कईलन बलमुऽ
एही मिर्जापुर से उड़ले जहजवाऽ,
सईयाँ चली गईले रंगून होऽ
कचौड़ी गली...

इ कजरी गीत आजो खूब सुनल जाला यह गीत में विरह बा. कहल जाला की वनारस के प्रसिद्द कजरी गायिका कऽ प्रेमी जंग–ए–आजादी में रंगून चली गईल ....फिर कबो लौट के ना आईल, आजो इऽ गीत के मन से सुन लऽ तऽ रोवां– रोवां सिहर जालाऽ .....गीत में जहाँ वनारस कऽ कचौड़ी गली, अजायब (एगो मुगल कालीन अधिकारी के निवास स्थान जवना जगह पर कचौड़ी, जिलेबी और बहुत कुछ खाए–पिए के सामान मिलत रहेऽ.) आज उऽ गली में आधुनिकता कऽ निवास हो गइल बाऽ आउर उ लोकसंकृति के एक झलक पावेल ला लोग तरसताऽ.

कजरी गीतन में मिरजापुर के कजरी के मिठास अलगे बा. मिर्जापुर बनारस से लागल बिंध्य क्षेत्र कऽ एगो जिला बा जहाँ के कजरी गीत खाली भारत देश में ही ना बलुक विदेश (मारीशस, सूरीनाम, जावा, सुमात्रा) में खूब गावल–बजावल अउर सुनल जाला.

मिर्जापुर कजरी कऽ जन्मस्थान कहाला. एगो जनश्रुति बा की राजा कान्तित कऽ लईकी कजरी अपनी प्रेमी से बहुत प्यार करत रहेऽ, लोग ओकरा प्यार कऽ दुश्मन हो गइल कजरी कऽ मिलल–जुलल सब बंद. उ विरह के जवन लय कजरी के गले से निकसल उहे कजरी विधा कहाइल. कजरी के याद में आजो लोग उहाँ कजरी महोत्सव मनावेला. कजरी गायकी से अलग दंगल कऽ एगो रूप बा जहाँ लोग दूर–दूर से अ खाड़ा में जोर –आजमायिस करे आवेलाऽ. जवनाऽ कजरी के चार गोऽ कऽ अखाड़ान कऽ नाव आव. ला, प. शिवदास मालविय अखाड़ा, जहाँगीर अखाड़ा, बैरागी अखाड़ा, आउर अक्खड़ अखाड़ा.

कजरी गीत क आपन बहुत पूरान इतिहास बा. आज से लगभग सैकड़ों वरिस पाहिले कजरी गीत कऽ उल्लेख इतिहास के पन्ना में मिलेला. सूफी कवि अमीर खुसरो, 'अम्मा मेरे बाबा को भेजो जी कि सावन आया,' अंतिम मुगल शासक बहादुर शाह जफर, 'झुला किन डारो रे अमरैया', से लेके भारतेंदु युग में, भारतेंदु जी कऽ भोजपुरी, बृज आउर संस्कृत में कजरी कऽ अपने अलगहीं रंग बाऽ, बिस्मिल्लाह खां के शहनाई से रचल–बसल, गिरजा देवी के स्वर में कजरी आगे बढ़त गईल आउर भोजपुरी संगीत–जगत में एगो नवका पहचान बना गईल. आज के गायकी में सुमार शारदा सिन्हा, विंध्यवासिनी देवी, मालिनी अवस्थी आदि, के संगे–संगे नवका गवनिहार लोग में संजोली पाण्डेय, सुनीता पाठक, अंशिका कुशवाहा, सरोज

पाण्डेय, सुनीता पाठक, अंशिका कुश्वहावा, सरोज सरगम, मनोहर सिंह सशक्त हस्ताक्षर बा लोग बा कि कजरी जन–जीवन में त न बाकिर नयका भोजपुरी संगीत के दुनिया में आपन नयका मुकाम हासिल करी.

पारम्परिक भोजपुरी कजरी गीत में एगो झलक देखीं जवना में ननद–भौजाई के हंसी–ठिठोलीका रस देखे के मिली–

कइसे खेले जाइबू सावन में कजरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी ।।
तू त चललू अकेली, केहू सँगे ना सहेली
गुंडा घेरि लीहें तोहरी डगरिया ।।
बदरिया घेरि आइल ननदी ।।

परम्परिक भोजपुरी गीत में एगो आउर रचना जवन खूब गावल जाला, नवका गायकी में संजोली पाण्डेय के स्वर से सजल ई गीत आउर नीमन हो गइल बा–

अरे रामा भादो रैन अंधियारी
बदरिया छाई रे हारी...
रामा शीतल बयरिया डोले
उ तो बैरन कोयलिया बोले हो रामा
की अरे रामा आये न कृष्ण मुरारी
बदरिया छाई रे हरी..

तृप्ति शाक्य के गायकी के आपना अलगे लहजा बा उनका स्वर में गीत देखीं–

हरे रामा कृष्णा बने मनिहारी पहिनी के साडी ए हरि....
राधा से मिले के बहाना ढूंढ लिहले कृष्ण छलिया.....
पिया से मनुहार करत एगो कनिया कहतिया–
पिया मेहदी माँगा दा मोतीझील से
जाके साईकिल से ना..

(बड़ा ही चर्चित गीत रहल बा आजो गाँव–घर के बहिन–बेटी लोग खूब मन से गवेला.

मेहरी अपने मरद से साड़ी ला मनुहार करत खा देंखी कजरी के रंग में रंगल उ गीत क बाते अलग बा–

1. धोतिय लायिदे बालम कलकतिया
जेमे हरि–हरि पाटिया ना...
2. सड़िया लाई दा बलम कलकतिया
जेमे झालर मोतिया ना...

थोर–बाहुत हेर–फेर से दुनों गीत अपने में बहुत सुघर बा.

ननद अपने भौजाई से घर–समाज के लोक–लाज से बचत–बचावत...ससुरा जाए के बात कहतिया–

कहिदा भउजी भइया से
कइदें मोर गवनवा.....
नाहीं चाही कंगनवां ना

नकचड़ी भौजाई प एगो देवर के उलाहना देखीं जवने के हास्य–गीत कहल जा सकेला–

पेहटा भरे कऽ भौजाई बा, बड़ी हरजाई बा ना
ओकर बड़ा–बड़ा दांत, खात काठी भरके भात
मालूम होता ओकरे जवाई क कमाई बा,
बड़ी हरजाई बा ना....

कनिया अपने पति क शिकायत करत क केतना सुन्दर ओरहना दे देत क सम्वाद बा उ नोक–झोक के देखल जाओ–

संइया बड़ा बेईमान हो हमरी कदर ना जाने
कमर पिराये मोरी देहियाँ पिराये हो
नखलऊ से डगडर बोलाई दा.....

कजरी के ई गीत आम जन–मानस के जीवन केऽ हर उ छटा के अपने में संजो के र खले बा जवना के लोग आजो जियल चाहता बाकिर आधुनिकता ओकरा पऽ हावी होखल जाता एसे कजरी विधा आपन आखिरी साँस के दिन गिनतियाऽ. कजरी विधा बा तऽ भोजपुरी के लोक–संस्कृति बा. तऽ आई बचावल जाओ अप. ने एह धरोहर के अपने आवेवाला भविष्य के सजावे आ सवाँरे ला.?

सन्दर्भ–सूची

1. अमर उजाला (२७ जून 2019
2. https://m-bharatdiscovery.org
3. अशोक भाटिया का लेख pravakta.com
4. दैनिक जागरण 25 जुलाई 2017

लखीमपुर खीरी , उत्तर प्रदेश

सावन भादो फेल भइल ह

रत्नेश चंचल

जेठ में अइसन खेल भइल ह
सावन भादो फेल भइल ह ।

नदी नहर फूफकरले बाटे
ताल पोखर भी भरले बाटे
धान क बिआ सांस ना लिहलस
अइसन इहां झमेल भइल ह
सावन भादो फेल भइल ह ।

केकर लगल ह उल्टा बानी
लूह के बदले बरसे पानी
ललका पानी भरल सिवनवां
पूरा रेलम रेल भइल ह
सावन भादो फेल भइल ह ।

तेलहंडा में गइल किसानी
कइसे रइहें पशु परानी
का खइबा का देहं लगइबा
महंगा सरसो तेल भइल ह
सावन भादो फेल भइल ह ।

सांचो में भठजुग बा आइल
तबो नाहीं बात बुझाइल
खाली कोरोनवें नइखे एगो
अउर भी ठेलम ठेल भइल ह
सावन भादो फेल भइल ह ।

भभुआ,कैमूर,बिहार

वीरपुत्र आजाद

विकास मिश्रा

एगो साहसी स्वतंत्रता सेनानी आ एगो निडर क्रांतिकारी चंदशेखर के जनम 23 जुलाई 1906 के मध्य प्रदेश के भाबरा में भइल रहे। चंदशेखर के पूरा नाम चंदशेखर तिवारी रहे, ई काकोरी ट्रेन डकैती, विधानसभा में बम फेकला से लेके लाला लाजपतराय जी के हत्या के बदला लेवे खातिर लाहौर में सॉन्डर्स के हत्या जइसन घटना में शामिल उ क्रांतिकारी भारत के चेहरा रहले।

पंडित सीताराम तिवारी और जगरानी देवी के लइका चंदशेखर आपन शुरूआती के पढ़ाई लिखाई भाबरा से ही कइले और आगे के पढ़ाई लिखाई खातिर उ उत्तर प्रदेश के वाराणसी में एगो संस्कृत पाठशाला में नाम लिखा गइल। चंदशेखर जी बहुत ही कम उमर में क्रांतिकारी गतिविधियन में समा गइले, और काचे उमर में उ महात्मा गांधी जी के शुरू कइल असहयोग आंदोलन में शामिल हो गइले। जब क्रांतिकारीयन काम धाम में पूरा तरह से सराबोर हो गइल रहले ओहि कारण से ब्रिटिश पुलिस उनका के पकड़ के 15 कोड़ा के सजा सुनवलस जवन उनकर शुरुआती के पहीला सजा रहल। ओ समय चंदशेखर के उमर महज 15 बरिस रहे, ये घटना के बाद चंदशेखर के नाम के साथे साथे जीवन में भी आजाद के पदवी जुड़ गइल। और अब चंदशेखर जी चंदशेखर तिवारी से चंद्रशेखर आजाद से जाने पहचाने लगलन।

चौरी चौरा घटना के कारण असहयोग आंदोलन के महात्मा गांधी के निलंबन से मोहभंग कर दिहले काहे की अब उ गरमदलीय प्रवृत्ति में बदल गइल रहले। चंदशेखर समाजवाद में विश्वास करत रहले बाकी के क्रांतिकारीयन के साथे मिलके उ ''हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एशोसिएशन'' के गठन कइले। उ भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव जइसन कई क्रांतिकारीयन खातिर एगो परामर्शदाता रहले। चाहे जईसे भी मिले उ सम्पूर्ण आजादी चाहत रहले ओकरा खातिर कउनो भी कीमत चुकावे के खातिर तैयार रहले। लाला लाजपतराय जी के हत्या के बदला लेवे खातिर चंद्रशेखर आजाद अंग्रेज सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन पायण्ट्स के गोली मार दिहले। अंग्रेजी सरकार खातिर चन्द्रशेखर आजाद एगो आतंक साबित होत रहले। उनका साथियन सभन में से एगो से धोखा के कारण 27 फरवरी 1931 में प्रयागराज के अल्फ्रेड पार्क में ब्रिटिश पुलिस उनका के घेर लिहले। चंद्रशेखर आजाद बहुते बहादुरी से मुकाबला कइले लेकिन दूसर कउनो रास्ता ना मिलला के कारण उ खुद के ही गोली मार लिहले और एगो 'आजाद' आदमी के तौर पर शहीद के संकल्प पूरा कइले। जवन अल्फ्रेड पार्क में उ शहीद भईले ओ पार्क के नाम अब शहीद चंद्रशेखर आजाद प्रयागराज कर दिहल बा।

चंद्रशेखर आजाद आज भी और आगे भी करोड़न भरतीयन के नायक रहीहें। चंद्रशेखर आजाद जी के द्वारा कहल बहुते बात जीवन के एगो सकारात्मक दिशा देवेला। शहीद चंदशेखर आजाद जी के साथे साथे राष्ट्र हित में सब जवान के बारम्बार नमन बा आ ओ लोग के माई बाबुजी के भी कोटि कोटि प्रणाम बा। भारत माता की जय।

सोनहुला ,गोपालगंज

तुलने नइखे

दिलीप पैनाली

माईं का बाँह से नीमन झूलने नइखे।
भाषा भोजपुरी के कवनो तुलने नइखे।।

मिसिरी के त बाते छोड़ी अमरितो तुछ बा,
एकरा से आगा कहाँ अँगुरो के गुछ बा?
समभाव सभे से केहू से जलने नइखे,
भाषा भोजपुरी के कवनो तुलने नइखे।।

ओकरे नाँव मति रटीं जे जे बिगड़ले बा,
उनुको के इयाद करीं जे जे सँवरले बा।
ऊ का जानी महिमा जे कुछ सुनले नइखे,
भाषा भोजपुरी के कवनो तुलने नइखे।।

गीत गवनई से इतर ग्रंथो रचाइल बा,

गीत गवनई से इतर ग्रंथो रचाइल बा,
अबहियों जहाँ तहाँ धरोहर लूकाइल बा।
कुछो उहो लिखता, जे तनिको गुनले नइखे,
भाषा भोजपुरी के कवनो तुलने नइखे।।

साँझा पराती पीरिया सोहर आ कजरी,
कबीर धुन गावे लोग बजा–बजा के खँजरी।
सत पर चले वाला सिर कबो धुनले नइखे,
भाषा भोजपुरी के कवनो तुलने नइखे।।

अपन माटी अपन बोली खूबे बा रसगर,
मंगल आ बीर कुँवर का तेगा जस धरगर।
भोजपुरिया से चोख दिलीप चमने नइखे
भाषा भोजपुरी के कवनो तुलने नइखे।।

तिनसुकिया, असम

समय नाही फिर दोहराई

डी.के सिंह गीतकार

पूत कपूत जे हो जाले त,
करेजा बाप के फाटेला ।
रही रही टिस उठेला भीतर,
अन धन नाही भावेला ।
सीख ल भीरी बईठ के उनका,
समय नाही फिर दोहराई..
तोहके आई तब रोआई ..
सपना देखलें बाबू जी की,
बबुआ नाम कमइहें
घर परिवार के इज्जत रखिहें,
आगे ई बढ़ जइहें

बनके ढाल रहेलें हरदम ,
देखब अगर परछाई..
समय नाही फिर दोहराई ..
तोहके आई तब रोआई....
ई ऊमिर ह कर तपस्या
मंजिल त मिल जाई,
कतनो बाधा आई बाकी,
तोहके हिला ना पाई
चेत ल आके होश मे''डीके''
मेहनत रंग ले आई...
समय नाही फिर दोहराई ..
तोहके आई तब रोआई...

भभुआ,कैमूर,बिहार

गीत

योगेन्द्र शर्मा "योगी"

घेरी घेरी बरसे बदरिया
बलम नौउकरिया से आई जा हो।
बदरा अंगे अंग करेला ठिठोली
मारे ला मुस्की बोलेला कुबोली
घड़कन जगावे बुजुरिया
बलम नौउकरिया से आई जा हो।
चुअ ता ओरवन बह ताटे खोरी
छुअत हवईया मोहै चोरी चोरी
झाँकत घटा अँगनईया
बलम नौउकरिया से आई जा हो।
देवरा सतावे ला कजरा निहारी
ननदी ठिठोली करै खींची सारी
भभक ता मन कै डिबरिया
बलम नौउकरिया से आई जा हो।
केतना कहीं साँच का का बताईं
हियरा बहै लोर कईसे देखाईं
"योगी" सतावै पिरितिया
बलम नौउकरिया से आई जा हो।
घेरी घेरी बरसै बदरिया
बलम नौउकरिया से आई जा हो।।

भीषमपुर,चकिया, चंदौली, उत्तर प्रदेश

गीत

कुमार जीवन सिंह

मुअल मछरी जियावे के पड़ी,
गिरल बा ओकरा के उठावे के पड़ी।
करेजा के खून गाढ़ भईल बाटे ढेर,
नाक में भेंटीलेटर लगावे के पड़ी।।

आदमी के लाश ह जरावे के पड़ी,
पिपर पर के भूत ह भगावे के पड़ी।
माड़ो में समधी पलथी मारके बैठल बा,
माँगता नेग तवन सधावे के पड़ी।।

सीमा के हाल चाल जाने के पड़ी,
भाई के बात अपना माने के पड़ी।
सबकोई से सबकुछ ना होला ठीक बा,
दुहे खातिर टंगरी बाकिर छाने के पड़ी।।

पढ़ल लिखल आदमी बुरबक हो जाला,
माँजले से बरतन झकझक हो जाला।
पछिलका रोटी काहे खाए के माना बाटे,
ओकरो से भाग लोगके चकचक हो जाला।

एह अंक के चित्रकार

सुमन पाण्डेय

उनतीस नवम्बर उन्नीस सो नवासी में गाँव रामेश्वर जिला बनारस में जनम। शुरुआती शिक्षा गाँव–देहात में ही भयल। इंटर क पढ़ाई सेंट्रल हिंदू गर्ल स्कूल से। स्नातक क शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से। बुंदेल खण्ड विश्वविद्यालय से परास्नातक पूरा भइल। 2013 में बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान में असिस्टेंट प्रफ़ेसर के पद पर नियुक्ति हो गयल। तब से अब तक उहें डिज़ाइन विभाग में अध्यापन करत हई अऊर वही से चित्रकला विभाग से पी. एच. डी भी। संगोष्ठी, कार्यशाला, चित्र प्रदर्शनी, व्याख्यान आदि के साथे कविता, कहानी, लिखना और राजस्थान–गुजरात के पारंपरिक लुग्गा–कपड़ा, कढ़ाई और कारीगरी पर निरंतर खोजबीन।

कुबेर के सराप

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

हमार बस 'बस स्टाप' के नीयरे पहुंचत रहे। बस के खिड़की से झांक के बेर–बेर हम बहरा देखत रहनी। जहवाँ तक देखात रहे, बस हरिअरिये देखात रहे। सगरी वातावरण हरियरी से खुस देखात रहे। हमहूँ मगन होके देखत रहनी–धरती के हुलास आ प्रकृति के उदारता। हमरा मन में सोच चलत रहे कि कइसन उलटा ब्योपार बाटे मनई अउर प्रकृति में। एक ओरी ई प्रकृति बिया जवन बेगर कवनों हो–हल्ला के खुलल आसमान में अपने आँखिन के नीलिमा करिया बदरन का बीच पंवरा दे तिया। हवा में सुन्नर सुगंध –घोर देतिया। अउर हियरा क राग –धरती के छाती पर बिछा देतिया। नीचे–उप्पर, अगल–बगल चारो ओरी मस्तिये–मस्ती,रसे रस आ कुल्हि हरियरे– हरियर। एकरे के नु समरपन कहल जाला–जवन अपना भीतरि के हरियरी के लुटा देता, हुलास का संगे, हुलास के खातिर सगरे संसार के। अउर एगो हमनी के बानी स, बेगर भाव के भाषणबाज, जे लोभ के भीतरि छिपवले समरपन के ढोंग करतानी स। रहीसी के चेला बनिके तेयाग करे के देखावा करत अउर बटोर के खलिहा हो–हल्ला मचावत बानी स। अउर मंगर के लोर लेखा लोर बहाके सभे के भरमावत बानी स। तबे नु हमनी के हरित क्रांति के घोषणा से खंडहर बन रहल बा आ हमनी हो–हल्ला से आपण दम जोगावत बानी सन।

अचके मोटर के घुर–घुराये के अवाज ढेर बढि के बन्न हो गइल। जब देह के एगो हलुक झटका लागल, त देखनी कि बस खाड़ हो गइल बिया। हमरा सोच के क्रम टूटल, आ देखतानी कि बस के सवारी उतर रहल बाड़ी। हमहूँ धीरे से आपन झोरा अपना कान्ही पर टाँग लेनी आ उतर के सड़क पर आ गइनी। सावन के नम हावा जब देह के छुवेले, त रोंआ – रोंआ भरभरा उठेला। उप्पर दे खतानी कि बदरी घुरिया रहल बिया। सड़क पर धूरा के चिन्हो ना रहे आ सड़क भींजल रहे।सड़क के दुन्नों ओरी झोपड़ी में बइठल दुकानदारन के चेहरा पर अचके चमक आ गइल। ढेर सवारी अपने रहते जा चुकल रहनी तबों झोपड़ियन से कप–पलेट आ शीशा के गिलासन के बाजे में तेजी आ गइल रहे।

हमरो डेग एक कगरी के झोपड़ी का ओर बढ़े लागल। अइसन कुल्हि दुकानन में जाये के मन त ना करे तबो कबों–कबों जहीं के पड़ि जाला। एकरा पाछे कारन ई बाटे कि हमरा जइते 70 बरीस के बूढ़ मनई मुड़ी नवाके पालागी बाबूजी कहेलन अउर हमरा मन के ई बाउर लागेला। मन बेर–बेर मना करे के करेला बाकि हमार संस्कार अइसन करे से हमरा के बरजि देला, आ हम मुस्कियाए लागेनी।

हम चाह पी के अउर पान घुलावत चल देनी, अपना गाँव चहुंपे का पहिले हमरा कई गो अउर गाँव पार करे के परेला। पहिलका गाँव का लगे चहुंपते हमरा के सावन के छिंटाइल भेंटाइल। कई गो पेंड़न में झुलुआ पड़ल लउकल। बादर अउर नियरा आवत बुझाइल, लागत रहे कि अब बरसबे करी। अइसना में झुलुआ न झूले खाति अपना मन के मनावल ढेर कठिन होखी। हमार इहे लगाव हमार मजबूरी बाटे, अइसना में हम अपना के ना रोक पाइले। अउर बरबस खिंचाइल गाँवे चहुंप जाइले। अउर अपना के झुलुआ के पटेंग आ फागुन के होरी ला अउर हर चिजुइयन से अलगा क लेइले । हमरे एही लइकई के देखि के हमार बुजुर्ग लो हमरा के अइसन करे से बरिजेलें अउर चेतावेलें। आ कहेलें लो कि अब हम लरिका ना रह गइल बानी बलुक एगो बबुआ के बाबूजी हो चुकल बानी आ पढ़ल–लिखल समुझदार बानी, अब अइसन चुहुल हमरा के ना करे के चाही । बाकिर ओह लोगिन के हम कइसे समुझाईं कि ई हमार मजबूरी बाटे, ई हमरे हिया के सोभाविक गुन बाटे, जवना के रोकल हमरा बस के बात नइखे। अगर अइसन कुछ कइला से हमरे समझदारी अउर वयस्कता के खतरा बाटे , तबों हम ओकरा के सवीकार क लेम। अगर रउवा लो चाहतानी त हमार शिक्षित–समझदार के विशेषण छीन सकेनी। बाकि हम अपना के अपने हिया के राग से अलगा ना कर सकेलीं। हमरा के पागल अउर सनकी कहवावलो मंजूर बाटे, अउर त अउर कुछ लो कहबो करेला। हमरा के अपने हिया से नेह बाटे। अगर शिक्षा हिया के राग के मुआ देवेले, त अइसन शिक्षा हमरा के ना चाही। हमरा के आपन जिनगी जिये के बा, हुलास के संगे जिये के बा, त हम ई कुल्हि करबे करेम। देखीं न, नान्ह–नान्ह लइकिन के आँखि में कतना हुलास भरल बा अउर उनुके हाथ अउर गोड़ में मेंहदी रचल बा। फेरु बताईं न कि लइकई के एह राग अउर प्रकृति के एह रंग में कतना सहज समानता बाटे? प्रकृति अउर मनई के न बंटे वाला हुलासे नु चेतना के संजीवनी शक्ति के सोत बाटे। हम सवीकार करत बानी कि हमरा भीतरि लइकई बाँचल बा। बाकि एकरा के हम आपन कमजोरी ना मान सकेनी, काहें से कि

ई हमरा शरीर अउर मानस से निकसे वाली तरंगन में घुल –मिल के एकदमे सहज रूप ले चुकल बा, जवान उचित समय पर व्यक्त होखेला। एही से हमरा एकर कवनो चिंता नइखे।

खैर...अब त कजरी के धुन हमरा कान में पड़े लागल बाटे। बुझाता अगिला कवनो बांड़ा में नीब के डाढ़ी पर लइकी लो झुलुआ झूल रहल बा, तबे नु देखाई नइखे पड़त। अब त अउर कजरी साफ सुनाये लगल बा। झुलुआ अपना पूरा वेग में चल रहल बा आ ओकरा संगे मनो बाटे, फेर हिया के भाव छलकले बेगर कइसे बाची–

''हरे हरे बाबा के सगरवा
मोरवा बोले हे हरी।
मोरवा के बोलिया सुनि,
बिहरेला हियरा रामा
बाबा से कहिदा कइदें
गवनवाँ हे हरी।
अबकी के सालो बेटी
खेलिला कजरिया, रामा
आवेदा न अगहन महिनवा, हे हरी।
• • •
अगिया लगइबो बाबा,
अगहन महिनवा, रामा
बीतल जाले सगरी उमिरिया , हे हरी। ''

हम कजरी के कड़ी सुने लगनी। सुनत–सुनत हमरा आँखि में दू–तरह के ढेरका ले चेहरा उपरियाए आ पँवरे लगलें। एक ओरी जवानी से मातल बाकि मरजाद के बोझ से झुकल हुलासित लइकिनी बानी बाकि उनुका चंचल पुतरियन पर बिना कवनो संकोच के लालसा पँवर रहल बा, त दूसरा ओर जिनगी के दुख–संताप से जूझत मलीन मुख अभागे किसान पिता लोगन के झुर्रियन से भरल अगहन के बाट जोहत बेयाकुल आँख बिया। ई दूनों तरह के चेहरा हमरा आँखिन में एक पर एक उपरिया रहल बाड़ें, हलिए हमार आँख चउधिया जाता। हमरा लागल कि सावन के एह उछाह आ अगहन के जोहाई में कबों पटरी न बइठ पाई। असल में ई ढेर टेंढ़ बाति बा।अजादी के कई दसक बीतला का बादो देश के भाग विधाता (मलिकार) लोगन के कई पीढ़ी इतिहास बनि गइल बाकिर किसानन के दरद जस के तस बा। हमरा त इहो लागेला कि सावन आ अगहन का बीच कुछे महिनन के अंतर नइखे बलुक ई अंतर एगो लमहर इतिहास के अंतराल बा, जवना के सबूत शिलालेख में नइखे बलुक लमहर आसमान पर कबों ना मिटे वाली लिपि में लिखल बा। एकरा के उहे पढ़ सकेला जे अमीरी के ऊँचाई आ गरीबी के भूख के तड़पत आँखिन के गहराई नाप सकत होखी। एह दूरी के मेटावे में कतने जवानी ढह गइल, सपना सूत गइल, जिनगी मेटा गइल , तबो ई दूरी...? कुछो ना। सावन में धीरज राखि के अगहन के जोहल, फेरु सावन के पावलकवनो बड़ बात नइखे, एकरा से लोक कवि परिचित बाड़ें। संगही उनुका के इहो मालूम बा कि अगहन के जोहाई में थथमल आँखिन में कबों सावन के बदरन के छाया , हावा के नमी आ हुलासित धरती के हरियरी लउट के ना आवेले। हमनी के किसानन के सरापित जिनगी में अगहन अइबे ना करेला भा अइबो करेला त कपूर ले खा।मने जबले डिबिया बन्न रहेले, तबले कवनो गन्ह ना, आ डिबिया खोलते कपूर लेखा गन्ह बिला जाले। लोककवि के एकर अनुभव बाटे, एहिला ओकरा ई कहत जरिको दरद ना होखेला कि– अगिया लगइबो बाबा अगहन महिनवा ... । अगर जोहे में जवानी बिला जाय, जिनगी में कवनो रसे ना बाचे, मस्ती मरि जाय, त उ बेकारे नु बा, ओकर कवनो जरूरत नइखे, ओ. करा आगि में जरा दा... ।

खैर..., ई गीत के गूँज हमरा भीतरि के एगो अउर परत के कुरेद के किनारे लगा दीहलस। अचके हमरा के लागेला कि हमनी के सभ्यता के खोली में कतना नकली बानी सन। जिनगी के साँच चाहे जतना कठोर होखे, कजरी त रसदार बाटे। अउर हमहूँ त एगो हाड़ मास के एगो नवहे नु बानी। एही से हमरा मन के बन्हन टूटि जाला। अउर सावन के खुमारी हमरा सिरे चढ़ि के बोले लागेले। हमार हिया बेयाकुल हो जाला, अपना जवार के रहे वाली पढ़निहार लइकी प्रिया खाति। इहवाँ एहनी लोगन के अतना छूट त हइए बा कि गीते से सही, अपना हिया के भाव के सुर दे रहल बानी लो। बाकि उ...? उहवाँ त सभ्यता के खोली अउर मोटहर बा। अब त हमार मन दुखी होखे लागेला अपना प्रिया के हियरा में ढूकि के। हम मन में गुनगुनाये लगनी – ''बाबा से कहिदा ...''

हम सोचे लगनी कि पढ़निहार अउर गिरहथ के दोहरी जिनगी के जिमवारी के। दूनों जिनगी के स्थिति, जरूरत अउर इच्छा कतना अलग आ विरोधी होला। तबो आजु के गाँव के ढेरे लइकन के जिनगी एह दोहरी जिमवारी के न सहे जोग दरद से घेराइल बा। एकरा पाछे का कारन बा? का मलिकार लो मूरख हवें?हमार मन कहेला, ना। उ लो त अपनही रंग में रंगाइल अपना के छोड़ सगरी दुनियाँ के मूरख बूझेला। एक ओर त ई एगो बेअरथ के घमंड बाटे अउर दोसरा ओर एगो मुरदाह बेबसी। ओह ! हजारन लइकिन के बाबूजी लो सरापित बाड़ें पढ़निहार लइका से अपने–अपने लइकिन के बियाहे खाति। काहें से कि उ लोग जानता कि नोकरी करे वाले लइकन से बियाह कइल संभव नइखे,काहें से कि तब उनुकर भाव ढेर ऊंच होखी। भाव के अतना ऊँचाई तहनी से ना भेंटाई। ई लचारी बा। इहे लचारी तहनी के अपना के बचावे आ भेंटा रहल सुविधा खाति

लालची बना देवेले, अउर तहनी के बेकारी जइसन करुआ साँचो के परदा डारि के देखेला सन। ''ओह लोभ न कुकरम काह करावा ।'' अउर लइकन के बाबूजी लो परेशान बा नवकी बयार से, काहें से कि उ लो के नीमन ना लागेले। उ लो के चिंता बा अपने लइकन के हाथ से निकर जाये के, जवन उ लो कबों ना चाहेला। अधिकार क सुख मनई के अहम के पोसेला, जवन मनई के आन्हर अउर बावला तक बना देवेला। अउर समान्य जिनगी में इहे ओह सुख के भोगे क इकलौता समय होखेला। एही से कवनो हाल में उ लो अपना लइकन के 'बेचे–खरीदे' क कापीराइट ना देही लो। एकरा चलते ई पीढ़ी दोहरा जिमवारी के ढोवे ला सरापित बा। अउर सरापित बा, हरियर सावन में पियासल रह जाये बदे, हरमेसा खातिर। बाबाजी लो के पतरा आ बुढ़वन के अपना अधिकार का सोझा ना त हिया के सासन चलेला आ ना त केकरो पियास के कवनो मतलब होला। तबो हम अपना मन के मारि के ई सोच लेहिले कि ई पियास खाली हमरा अकेल के नइखे। हम कलपना करे लागिलेअपना प्रिया का हाथ में अलग–अलग चित्रन के मेंहदी रचावे के। कलपने में हमार अंगुरी केकरो सुकोमल कमर के छुवेले अउर हमार शरीर आ मन रोमांचित हो उठेला। तबे हमरे कलपना के नीनि टूटेले। मन करुवाइन हो जाला। हमरा लागेला कि हम कवनो न करे जोग काम करे जा रहल बानी, जवना के मनाही बाटे। बाकि का ? एसे का? हमार मन हुलासित हो रहल बा– 'हम समाज के अइसन कवनो बन्हन के कब मानीले। हमार मलिकार त हमार हिया बाटे। गाँव वाला लो कुछो कहे, हमरा मूरख कहे, लुगाई बाज कहे, जवन कुछ सुगा लेखा रटले बा लो उ कहो, भा सभे कुछ कहे। बाकि ई हम जानीले सुघरई के, पूजा के,नेह–छोह के तपस्या के देख पावे क गुन तहरा लो में नइखे। अगर बाटे,त तहनी के डरपोक बाड़ा लो। तहनी के आपन हिया तूरेला आ चिचरी बचावे ला सन। हम चिचरी तूरीले आ हिया के बचाइले। हम अपना हिया से अनघा नेह करीले। सेंट कनफ्यूसियस कहले बाड़ें– ' बड़ मनई अपना हिया से नेह करेलें'। रउवा के ई माने के चाही कि हम बड़ बने के इच्छा में ना करीले, खाली मनई बने खाति हम ई सब कुछ करीले। बाकि हई देखीं, 'हमार बहकल कि हमरा लगे ना त प्रिया के हाथ बा आ ना त झोरा में मेंहदी। बाकि अतना सोचही में कजरी सुनाइल बन्न हो गइल। हम गाँव के लांघत फेरु सड़क पर आ गइनी।

एह अलकतरा के चितकाबर सड़क पर बारीस के करइली माटी फइल गइल रहे आ चप्पल में चिपके लागल रहे। हम आपन चप्पल हाथ में उठा लेनी आ आगु बढ़े लगनी। सड़क के इंकड़ी गोड़ में गड़े लागल आ खुबे दु खाए लागल। एन सड़क के इतिहास ईयाद परला पर अउर। साँचो ! एह सड़कियों के इतिहास बाटे। एह सड़क जब शुरुवात भइल रहे तब हम कक्षा 6 में पढ़त रहनी। एगो लमहर जलसा में ओह घरी के सिंचाई मंत्री जी एकर उदघाटन कइले रहनी। अउर स्काउट में रहला के कारन हमहूँ अपना स्काउट दल का संगे मंत्री जी के सलामी देवे खाति आइल रहनी। जोजना का हिसाब से सड़क तीन बरीस में बन के तइयार हो जाये के रहे। अब त इहो सुनात बा कि परिवहन विभाग के कागज पर 5 गो बसो चलेनी सन। बाकि आजु 12 बरीस का बादो जब हम विश्वविद्यालय से घरे आवेनी, डेगे–डेग चले के परेला। काहें से कि सड़क अधवे बनल बा। कुल्हि 14 किलोमीटर लम्मा सड़क एक ओर से शुरू हो के दोसरा ओर तक ना चहुंप पवलस आ पाछे से खराबो होखे लागल। मने अबले सड़क पूरा ना बन पवले बा, एही से एह पर बस ना चले।

अब हमार गाँव दिखे लागल बा। जइसही सड़क के मोड़ घुमनी, त देखतानी कि सड़क से सटले पंडीजी के खेत में रोपनी हो रहल बा। एगो रोपनी हमरा ओर देखलस अउर हाथ में कनई उठा लीहलस। जइसहीं ओकर सोख आँख ऊपर उठल, ओकरा बगल के बुढ़िया ओकर हाथ दबा के बरिज दीहलस आ उ फिरो खेत रोपे लागल।

हम ई जानतानी कि बहरा से आवे वाले गाँव के लोगन के ई रोपनी कनई लेके दउरावेली सन अउर ओकरा से बाचे खाति उ लो से 5–10 रूपिया पाके खुस हो जाली सन। हम सोचे लगनी कि पहिले से हम बदल गइल बानी का ? लगता कि अब हम गाँव के भा गाँव वालन लेखा ना लागिले , तबे नु उ बुढ़िया कनई उठवते बरिज दीहलस। हमरा बहुत दुख भइल, आपन पहिचान बदल गइला के वोजह से। हमार मन कहेला कि हम गँवई मनई बानी। हमरा खून में इहवें के हावा बा। शरीर इहवें के माटी में बड़ भइल बाटे। बाकि पहिरावा ? हाँ ! पहिरावा त जरूर बदलल–बदलल बाटे। ड्राईक्लीन भइला का वोजह से ढेर चमकतो बा, जवन गाँवे ना होखेला। त का ई पहिरावा जवना से हमार कवनो अपनइत नइखे, हमार पहिचान मेटा रहल बा। हम ए दोहरपने से दुखी हो जाइले। हमरा ना बुझाला कि हमरा का करे के चाही। अपनन के बीचे अपनइत पावे खाति पहिरावा उतारि दिहीं? बाकि ना ! हम इहो ना कर सकीले। मजबूरी बाटे कि हमरा बहरा के लोगन से मिले के पड़ेला। ओकरा बादो ई साँच बा कि ओहनियों लोगिन में मन नीमन से ना मिल पाइले। उहवों मिले खाति अपना भीतरि के संस्कार बदले के पड़ी, जवन हमरा बस में नइखे। त का दूनों जगहा अपनइत के नेह–छोह ना भेंटाई आ हम बहरिये बनल रहेम ? ''हाँ ...'' हमार

मन इहे उत्तर दीहलस।''इहे तहरा सरापित भाग में बा ।''

हम थोड़ा अउर आगु बढ़नी, पुरूआ हावा हमरा कान में कुछ कहत, शरीर में सिहरन भरतनिकरि गइल। बादर थोर अउर लटक गइल, अउर झम–झम बरीसे लाग. ल। किसान लो चउकस होके डाँड़ पर खाड़ हो गइल। बीया के अँटिया फेंके वाला लो खाति उमस बढ़ गइल आ रोपनी लो हाली–हाली रोपे लागल। गाल पर छितिराइल बुन्नी के पोंछे ला जब मुँह ऊपर करिके हाथ के हिलावेली त चूड़ी से भरल हाथ लुगा में लपेटाइल शरीर धरती के इन्नर के धनुही लेखा बनि जाला। हम देखनी ओहमे ढेर नवही लो रहे। अब ओह लो के अवजियो आवे लागल बा। कांपत अवाज पड़े लगल–

''कइसे खेलूँ कजरी मोरी सखिया
हरि मोर छाये विदेसवा ना।।''

गीत हमरा दिल के छू के ओहमे उतरि गइल, हमार कुल्हि रूमानियत आ सुघरई के समझ–बूझ एह गीत से टकराते बिला गइल। मन दुखी हो गइल। हम देखतानी कि कजरी के कड़ी पूरा करिके मुँह ऊपर उठावता लो , ओह लोगन के ओठ के खिंचाव मुस्किअइला के अभास दे रहल बा, बाकि पुतरी आँखि के भरल लोर में पँवर रहल बा। हमरा अइसन लागता कि उ लो बादर आ हमरा ओर देख रहल बा एगो अलगा नजर से। संगही हमरा इहो लागता कि कुल्हिए सुर अपना सबदन से प्रश्न कर रहल बा। हमार हालत बाउर हो जाता। बरबसे ओह –घरी हमरा कालीदास मन पर गइलन–

त्वमारूढ़म पवनपदवींमुद् गृहितालकान्ताः
पप्रेक्षिष्यंते पथिक वनिता प्रत्ययादाश्चसन्त्यः
कः सन्नद्धे विरह विधुरां त्वयुम्पेक्षेतजायां,
न स्यादन्योप्यहमिवजनो यः पराधीन वृत्ति।।

धन बाड़ें कालीदास ! तहरा पइसार आ गम्हिरई दूनों के कवनो सीमा नइखे। मेघदूत हम पहिलहूँ कई बेर पढ़ले बानी बाकि तहरे अलका वासिनी विरहिणीयक्ष प्रिया के आजु सोझा देख रहल बानी अउर तहरा गोड़ के धूर माथा पर लगावे खाति बेयाकुल हो रहल बानी।

कालीदास, तहार मन परल सोभाविक बाटे। बाउर दिनन में अपने नु काम आवेलन। हम जानतानी, जब इहवाँ केकरो अतमा दुखी होखे लागी त रउवा उनुका हाथ थाम लेम। जे ढेर हुलासित होखी ओकर कान फूँक देम। भारत के भारती के सुर साधक बानी नु , एही से अइसन भरोस बा। बाकि ... बाकि कालीदास हमरा के बतावा नु आजु हम का करीं? एह बिरहिनी नायिकन के कवन उपाय बतलाईं ? का सनेस दिहीं? एहनी के कजरी कइसे मनी ?

– आह, कालीदास, तोहूँ कुछो नइखे कहत। ना कह सकीले, हम जानतानी। तूँ झूठ आस ना नु देबे।

हाय रे हतभागिनी ! तहनी के हमरा जइसन एगो छोट मनई से पूछतानी सन, हम का बताईं । तहनी के सइयाँ परदेसी बाड़ें, सावन आ गइल बाकि उ ना अइलें। हम इहो जानतानी कि उ अइबो ना करिहें। कालीदास के मनो अइसने एगो विरह से दुखी यक्षिणी के देख के पघिल गइल रहे । उनुका लगे प्रतिभो अलगा रहे आ उ जमाना दोसर रहे। आजु दोसर हालत बाटे। यक्षिणी के साजनों भाग के मारल रहे, परदेसी रहे। न,न अतने ना, उ सरापितो रहे – कुबेर के सराप से। ओकरो सावन सूने बीत गइल। बाकिर ओकर एगो तय समय रहे, एक बरीस के। एही से कालीदास बादर के दूत बनाके यक्षिणी के सजना के सनेसा पठवा दीहलन।

हाय ! एगो लमहर पीड़ा बाटे कि ई बादर तहनी के सइयाँ क कवनो सनेस लेके नइखे आइल। ई तहनी के दिल जरावे आइल बाड़ें, दोसरा के नोकरी बा, उ चिन्ता के बात नइखे। चिंता के बात ई बा कि ओहनियों के सरापित बाड़ें– धनपति कुबेर से। अउर इहो सभे पता बा कि पलिवार नियोजन के तूफानो में आजु कुबेरन के पलिवार बढ़ी गइल बा। एही से सरापित लो बढ़बे करी अउर संगही बढ़त रही हमनी के गाँव के खँड़हर। सुनर कंठ वाली गवनहारियों! मजबूरी बाटे ! काहें से कि तहनी के सइयाँ लो के सराप एक –दू भा कुछ बरीस के नइखे, जिनगी भर खाति बा। मजबूरी बा, तहनी ले के गोहरवलो पर उ लो ना आई। सावन सून बीतल सहे जोग बा, बाकि पेट के आगि सहलो न सहाई। आ ना सहाई त सइयाँ के परदेस जहीं के पड़ी , झुलनी बचावे खाति भा झुलनी गढ़ावे खाति। अउर अगर पेट पाले के बा, त कुबेर के सराप झेलहीं के पड़ी। इहो मालूम बा कि उ लो न झुलनी बचा पाई, न झुलनी गढ़ा पाई । उ लो अइबो करी त कवनो काम के ना रही। अब तहनी के गोहरवला के हम का जबाब दिहीं? तहनी के गोहरावल एनिए कतों बिला जाई भा कहरों बहक के सिकुर जाई।

मूल रचना– कुबेर का अभिशाप
मूल रचनाकार– डॉ उमेश प्रसाद सिंह
भोजपुरी भावानुवाद – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी काव्य में सौन्दर्य-बोध के दिशा-विस्तार

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

विश्व–काव्य के धमनी में सौन्दर्य–के रक्त–धारा प्रवाहित बा। एकर कइगो रूप–रंग झलमलात नजर आवेला। मनुष्य के बहुरंगी–सौंन्दर्य, पल–पल, छन–छन बदलत सौन्दर्य मोहक प्रकृति के चुम्बक जइसन बरबस अपना ओरि खींचि लेबे वाला सौंन्दर्य, अलग–अलग वस्तुन के भीतर–बाहर के सलोना सौंन्दर्य–जवना के व्यक्तिगत पसन–नापसन के सतह प· देखल–परखल जाला, टूसा अस नाक, सूगा के ठोर अइसन नाक, सुबुक नाग, ओने दोसरका सतह प·, सूप जइसन नाक, चीलम जइसन नाक बगैरह कहल–सुनल आ देखल जाला। अनारदाना जइसन दाँत, मोती जइसन दाँत, कुन्द के कली जइसन दाँत जइसन उपमानन के प्रयोग लोक में आ काव्य में कइल गइल बा। आम के नवतुन पल्लो जइसन ओठ, तोंति के फल जइसन ओठ के बरनन विश्व–काव्य में भइल बा। आदमी–स्त्री–पुरूष के अंग–अंग के सौन्दर्य के' समझे–समझावे खातिर, सौन्दर्य के आत्मा तक पहुँच बनावे के यत्न में कवि पूरा प्रकृति के मनुष्य के मुँह, नाक–कान, आँख, गाल, भँहूँ, पपनी, भृकुटी–ओकर बाँकपन आ हर अंग के सौन्दर्य बढ़ावे के उपाय रूप में, उबटन (अबटन) आँजन, इंगुर–सेनुर, बिन्दी, टिकुली महावर–आलता आ गहननि के बखान करत आइल बा। एही प्रकार के ससल–सजावल सौन्दर्य के तनिकी शिष्ट भाषा में विचारक लोग 'वस्तुगत सौन्दर्य कहले बा। एकरा अलावे कवि के मोहक कल्पना से–भावना से सौन्दर्य के सजीव प्रतिमा गढ़ात जाला। संस्कृत के लक्षण ग्रन्थन के मोताबिक कवि के भावयित्री प्रज्ञा–प्रतिभा जब कल्पना के आधार प· काव्य में सौन्दर्य के भावना रोपेला तब कारयित्री प्रतिभा ओह भाव के अंकुर में सौन्दर्य के नेंव जाते ले। भावयित्री आ कारयित्री प्रतिभा के एह सौन्दर्य–स्थापन के व्यापार में बिम्ब आ प्रतीक कैनवस प गाढ़ लकीर आ चटक रंग चढ़ावे में सहचर के काम करेलेस। थोरे में कहल जा सकता कि बिम्ब आ प्रतीक के द्वारा सौन्दर्य के जवन मूर्त्त–चित्र उभरेला ऊ इन्द्रियन के अनुभव के सिवान लाँघिके आत्मा के अनुभूति के तल तक पहुँचा देला। सौन्दर्य के मूल आ मूल्य के आँके आ ओकर शेष निकाले खातिर विश्व–काव्य में–खास कके संस्कृत काव्य में भाव–सौन्दर्य के प्रतिष्ठा कइल बा। स्वाभाविक बा कि भाव–सौन्दर्य के प्रसार के इलाका, प्रेमभाव, दार्शनिक भाव, बिरह–भाव, वात्सल्य–भाव, इहाँ तक कि शत्रु आ मित्रो के भाव के भावगत–सौन्दर्य में उजागर कइल गइल बा।

यदि काव्य कला ह त ओकरा में भाव–सौन्दर्य के चेतना के बहुतायत रहबे करी, ई मानल–जाँचल बात बा। अइसने सौन्दर्य चेतना भषो के–भूल–चूक रहित भाषा के–चुनाव करेले आ भाव के ब्यक्त करे खातिर निर्दोष भाषा–पध्दति के सिरजेले। ओह में सौन्दर्य–छवियन के शब्द–चित्रो तइयार होत जाला। प्रकृति–के रूप रंग के विविधता के सौन्दर्य–छवि, नारी–सौन्दर्य के छवि, कहीं–कहीं कल्पना जनित उत्प्रेक्षा से सजल सौन्दर्य–छवि के रेखा–चित्र क्रियाशील भावगत सौन्दर्य–चेतना के निर्माणो होत जाला। भावगत सौन्दर्य–चेतना के सँगे एगो ईहो सचाई जूड़ल बा कि छन्दयोजना से एमें अधिक गझिन आ गसल बिनावट हो जाला। कवि प्रजापति कहाला–'कविरेव प्रजापतिः।।' ई उपाधि दुर्लभ होले –ईश्वर के कृपा से कवि के मिलेला। एही से कवि में समरथाइ होला कि ऊ भाव–गत सौन्दर्य के जरिए लौकिक जगत के सौंन्दर्य–चेतना के आंकत–आंकत अलौकिको जगत के सौन्दर्य–चेतना के सजीव मानचित्र गढ़ि देला। एही चित्र रचना के सिलसिला में उदात्त तत्वो के ऊ खोज बिन कइलेला। नतीजतन ओकरा सौन्दर्य–चेतना में वेदना के गाढ़ भाव के सँगे–सँगे आनन्दो के उदात्त सौन्दर्य के छवि उभरिजाला। अभिव्यक्तिगत–सौंन्दर्य–चेतना, भाषा–सौन्दर्य, छन्द–सौन्दर्य के बल से संगीत के प्रसाद गुण के आवाहन करे में कवि सफल हो जाला।

सौंन्दर्य, सुन्दर शब्द से बनल बा। कोशकार लोग एकर निवर्चन कके बतवले बा कि सुन्दर शब्द, विशेषण हउवे जवना के व्युत्पत्ति 'सुन्द+अर् धातु से होला। एकर अर्थ प्रिय, मनोज्ञ, आकर्षक होला। एही तरे सौन्दर्य के व्युत्पत्ति 'सुन्दर+यञं' पूर्वक होला। भोजपुरी में एकरा के सोहावन, मनोरम, सोभनउक, सुन्दर, सलोना, सुघर, सुन्दर, सुघर–साघर, रूपनउक, रूपवान, खूबसूरत कहल जाला आ सुन्दर के विशेषण भोजपुरी में सुघरई, सुघराई, निकाई, सुनरताई, सुन्दराई कहल जाला। हम दावा के साथ, चाटी बजा के कहल चाहबि कि 'सुन्दर' आ 'सौन्दर्य' शब्द खातिर जतना अधिक शब्दन के प्रयोग भोजपुरी में बा ओतना भारत के कवनो समृध्द भाषा में नइखे।

सौन्दर्य–चेतना, सौन्दर्य–बोध आभा सौन्दर्य–निरूपन के जतना रूप जतना कोन, जतना भंगिमा आ जतना तरह से भोजपुरी काव्य में भइल बा ऊ अचरज में डालेवाला बा। भोजपुरी काव्य के सौन्दर्य–बोध के काव्यात्मक प्रतिफलन–कबो–कबो बुझाला कि–कालिदास के सौन्दर्य–चेतना के रस–स्रोत से भइल बा। सौन्दर्य चेतना के उपजाऊ सांस्कृतिक आ सामाजिक लोक–प्रतीति के दियारा बहुत बड़हन रहल बा। भोजपुरी काव्य में भावनाशील सौन्दर्य उपासना के सहज उभार,

उपज 'हृदय–तल में संवाद करत नजर आ जाला–जदि केहू अँखिगर देखल चाहे तब। भोजपुरी काव्य के सौन्दर्यानुभूति में बदलत भावबोध के समकालीन चेतना आ इतिहास–बोध के अनुभव–संसार लभालभ भरल बा। एकरा सौन्दर्य–गन्धी काव्य में अतीतो वर्तमान में धड़केला। भोजपुरी काव्य सदईं से सौन्दर्य–चेतना के उपासक रहल बा। भोजपुरी काव्य के तासीर में बा कि सौन्दर्य के अमनियाँ आहलाद–हुलास पावे खातिर रचना के शब्दन में अर्थ के रस लभालभ भरल रहे के चाहीं। काहें कि पूर्ण रसे काव्य के साँच हउवे आ ओह साँच में सुन्दर आ शिव छिपल रहेला जवन समय पाइके कवि के भाव के सहन प उतरि जाला। भोजपुरी काव्य में ईहो स्वर मु खर बा कि सौन्दर्य से निकसल रूप आ गुन से सनाइल भाव आनन्द के हेतु बनि जाला। एही पगडंडी से भोजपुरिया समाज आ भोजपुरी काव्य सौन्दर्य के अर्थ आ परिभाषा दुनो रचे–गढ़ेला।

सौन्दर्य के बोध पच्छिम आ पूरब के अलग–अलग ढंग के रहल बा। इहे कारन बा कि सौन्दर्य के अर्थ आ परिभाषा के समझ के योरोपीय विद्वान लोग अलग–अलग तरीका से नेंव जतले बा। भारतीय मनीषी लोग अलग ढंग से अपना समझ के धरातल बनवले बा। एह दुनो पक्ष के विचार–दृष्टि जाने समुझे खातिर दूनों के परिभाषन्हि प गौर गइल सभसे पहिले जरूरी बा।

(1) सौन्दर्य–योरोपीय विद्वानन के दृष्टि में––सौन्दर्य–चेतना प· विचार करेवाला पछिमी विचारकन के तीन गो वर्ग बा–

(1) आत्मवादी विचारक
(2) रूपवादी विचारक।
(3) भाव–वादी विचारक।

(1) आत्मवादी विचारक के अगुवा सुकरात आ उनुकर शिष्य प्लेटो बाड़े। सुकरात आ प्लेटो दुनो जाना साफ–साफ मानिके चलल बा लोग कि एह सृष्टि के तल में एकरा जरि–मूसरा के होखे में असल कारन सुन्दरते बा–लावन्य आ सौन्दर्य बा। आ एकर खोज–बीन कइल, एकर सचलोपचाल (अतापता) कइल तत्वदर्शी कवि के उदेस होला ओकरा जीवन के लक्ष्य होला। ई दूनों विचारक लोग–सुकरात आ प्लेटो–सौन्दर्य के चारिगो खाना में बँटले बा लोग–––

(क) शरीर के सौन्दर्य।
(ख) मानस भा मानसिक सौन्दर्य।
(ग) नैतिकता सम्बन्धी सौन्दर्य।
(घ) बुध्दिजनित सौन्दर्य भा शुध्द बौद्धिक सौन्दर्य। एह चउथा सौन्दर्य के प्लेटो तनिक हेरफेर कके तय कइले बाड़े कि आत्म चेतना सरूप 'प्रज्ञात्मक सौन्दर्य' प्रकाश–रूप में पसरल बा।

आत्मा बुध्दि के जरिए शब्द आ अर्थ के एकत्र करेला आ ओह शब्दार्थ के व्यक्त करेके भावना से मन के एह काम में लगावेला। मन अभिव्यक्ति खातिर शरीर के ऊर्जा प असर डालि के प्राणशक्ति के पेरेले आ तब इहे प्राण स्वर के रूप –धारन करेला। भाव के अहथिर राखे खातिर काव्य के शुरूआत होला आ काव्य के शाश्वत बनावे खातिर सौन्दर्य–चेतना के जरूरत पड़ेला। इहे प्लेटो के 'प्रज्ञात्मक सौन्दर्य; ह जवन भारतीय काव्य–चिन्तन से बहुत नजदीकी रिश्ता बनावेला। दरअसल, पाश्चात्य दार्शनिकन में पहिलका काव्य–चिंतक अरस्तु रहन जे कला के आ सौन्दर्य के ऊपर गहराई से विचार कइले। प्लेटो अपना सौन्दर्य–चिन्तन आ परिभाषा में समाज के अधिका ध्यान रखले। इहे कारन बा कि ऊ काव्य में विचार आ नैतिक–अंश प ढेरि बल देले। सुकरात के कइल सौन्दर्य के चारों प्रकार के तनिक विस्तार से समझल आवश्यक बा–

(1) शरीर के सौन्दर्य–एगो गमगमात फूल अपना सुन्दरता से–लावण्य से व्यक्ति या समूह के हृदय के तृप्ति देला। ओकरा सौन्दर्य से, सुघराई से खिंचाइल मन ओकरा सुगन्ध आ सुन्दरता के असालतन राखे के जतन करे लागेला। एही स्थायी रूप देबे के सिलसिला में कवि अपना सौन्दर्यानुभूति के अंगुरी के माध्यम से कलम के नोंक प चुवाके कागज प· उतारेला आ काव्य के शक्ल में ढालि देला। प्रसंग बस एह संदर्भ में फारसी के शायर हाफिज के दू पाँति गौर करे लायक बा–

ज़ाहिरे ज़ाहिर परस्त अज़ हाले भा आगाह नेस्त।
दर हक़े भा हर चे गोयद जाए हेच अकराह नेस्त।।

शरीर के सुन्दरता–सौन्दर्य के ईशावास्योपनिषद के कथन के अनुसार विचार कइला प एगो नया तथ सामने आवेला। ईशावास्योपनिषद् दू शब्द के प्रयोग–संभूति आ असंभूति–के प्रयोग से कवि के द्वारा उद्घाटित सौन्दर्य के बतावे के यत्न कइले बा–

संभूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा संभूत्यामृतमश्नुते।।

एकर अर्थ ई बा कि 'संभूति' में आसक्ति के बीज रहेला, जवन नष्ट हो जायेवाला अवस्था आ भाव ह। 'असंभूति' के तात्विक जानकारी हो गइला प शाश्वत आनन्द मिल जाला। सौन्दर्य के निरूपन करेवाला सुकवि ए 'संभूति' आ 'असंभूति' दूनो के जब जानेला तब ठीक–ठाक शारीरिक सौन्दर्य के वरनन करे में प्रद्दत होला। जदि कवि 'संभूति में प्रवृन्त होके नग्न वासना के गीत गावे लागी–कविता रचे लागी त ऊ घोर अन्धकार में डूबि जाई। बाकी जब दूनों मे– 'संभूति' आ 'असंभूति' में तालमेल बइठाइ के तटस्थ भाव से शरीर के सुन्दरता के वर्णन करी त ओकरा काव्य में शरीर के रागात्मकता के समूचा सौन्दर्य मनुष्यता के ऊँच शिखर प प्रतिष्ठित करे में सफल हो जाई। आखिरकार मन के वृत्ति के शरीर से रागात्मक संतुलन भइला प सौन्दर्य कहा सकत बा।

शरीर के सुन्दरता भा सुघराई के ओर खिंचाइल मनुष्य के सहज सुभाव होला। ऊ शरीर के सुन्दरता से अपना हृदय के रागात्मक संबन्ध बनावे खातिर उत्सुक रहेला किन्तु बाहरी सुन्दरता से अधिक जदि ओकर

झुकाव भीतरी सौन्दर्य के ओर होखे त ऊ जादे उपकारी होई। प्लेटो एही सभ अर्थ में अपना 'प्रज्ञात्मक सौन्दर्य' के व्याख्या कइले बाड़े।

(ख) मानस भा मानसिक सौन्दर्यः– व्यक्ति के मानस प सौन्दर्य के अमिट छाप परेला। मनुष्ये के ना बलुक जीव मात्र के उत्पति के संगे–संगे सहज–स्वभाविक रूप से सौन्दर्य जुड़ल बा। सौन्दर्य में संम्मोहित करेके अकूत शक्ति होला–गुरूत्वाकर्षनो से अधिका बलसाली। इहे कारन बा कि सौन्दर्य में मन के समर्पण जरूरी हो जाला। सौन्दर्य के प्रतीति आ अनुभूति मानस के तल प आ सँवेदनात्मक स्तर पर हमेसा अहथिर जमल रहेले। सौन्दर्य प्रेम के टिकाव के प्रमुख घटक ह·। एही से आधुनिक मनोविज्ञानिको लोग सौन्दर्य के स्थायी आ दीर्घजीवी पियास कहले बा। प्रसिध्द विद्वान एवं नवगीत के न्यासी, समालोचक डॉ0 जगदीश गुप्त के कहनाम उचित बा–''जीवन का स्वस्थ और समरस मानवजाति की प्रेम–परंपरा एवं सौन्दर्य बोध में ही अभिव्यक्त होता रहा है। जीवन से संबन्धित होने के कारण कवि कर्म की संपूर्ण साधना अपने जन्म–काल से ही प्रेम और सौन्दर्य का नूतन विधान करती रही है। यही कारण है कि काव्य में प्रधानतः प्रेम और सौन्दर्य की ही अनुगूँज रहती है। मानवीय चेतना के अधिक अनुरूप होने के कारण प्रेम–साधना सर्वभाव–व्यापार को आवृत कर लेती है किन्तु इसकी उत्प्रेरणा सौन्दर्यानुभूति पर निर्भर करती है।'' सौन्दर्य के भाषा–मौन होले–गुप–चुप, गुमसुम। एकरा चलेफिरे के राह हृदय से हृदय के निकसार तक होला।

सौन्दर्य–बोध मनुष्य के मानसिक चेतना के तल से निकसल निचोड़ ह। ई प्रीति से प्रेम तक आ अनुभव से अनुभूति तक के मानसिक विकास के सवदगर मधु ह·। रससिध्द कवि के अर्थवान शब्द के गोमुख से मानसिक सौन्दर्य के फूटेला। एह सौन्दर्य–चेतना के मानसिक गतिशीलता से आनन्द आ तोष के भाव–बिन्दु प पहुँचि के सौन्दर्य चेतना सोगहग– पूर्ण–बनि जाला। मानसिक सौन्दर्य जीवन के स्वाद आ तोष से भरि देला। मानसिक सौन्दर्य के उपकरणन के द्वारा मनुष्य के अन्तर राग के बंटवारा होला जवना के तीन गो नतीजा निकस. ला–प्रिय, अप्रिय आ हित। बढ़िया से एह बात के समझे खातिर कुछ उदाहरन के सहारा लिहल ठीक होई। सेब के फल दे खते–देखत ओकर सुघर, सुन्दर रूप आकर्षित करेला। ओह आकर्षण के बल से सेव के पावल जाला तब ऊ सेव बड़ा प्रिय लागेल, ओक स्वाद आछा लागेला। खइला के बाद तोष मिलेला तृप्ति मिलेला। नीम पूरा के पूरा कड़वी होले एकरा बावजूद ओकरा प्रति बैद्य लोग के लगाव रहेला, ओकरा कड़वापन के अनुपात से अधिका। वैद्यक ग्रन्थन में कड़वी गुरूचि के अमृता कहल गइल बा। इहे आन्तरिक भा मानसिक सौन्दर्य–चेतना आ बोध कहाला। ई तीनों काल में साँच मानल गइल बा कि इन्द्रियन के चहुँप बाहरी छुअन तक सीमित रहेला। एह छुअन से इन्द्रि सभ नया अँजोर, नया ढंग के सुकुमारता में नहा के नया ताजगी महसूस करेलीस·। जदि एही ताजगी तक मन के लगाव बनल रही तब सौन्दर्य साधारन सीमा में बन्हा जाई आ जब छुअन के प्रक्रिया इन्द्रियन के सिवान के पार कइके अन्तःकरण के अँजोर करेलागेले तब मानसिक सौन्दर्य के दिव्य रूप के सृजन संभव होला। दरअसल, सौन्दर्य लयात्मक चेतना के मानसिक अभिव्यक्ति हउवे।

(3) नैतिकता–संबन्धी सौन्दर्य––नैतिकता–संबन्धी सौन्दर्य सृजन के सहज प्राकृतिक हिस्सा होला। ईहे कारन बा कि सौन्दर्य आ सौन्दर्यशील चित्र के अन्तर्व्याख्या तनिक जटिल होला। एही से साधारन कवि के समझ से ऊ सदईं छटकल–छूटल रहेला। एही छूट के खाली सतह प 'अश्लीलता के दुधिया' तितिकी आ हिंगुवा के जहरीली जजाति पनके ले–फइले ले। जवन नैतिकता के अणु–कण से रचाइल समाज के रोंआँ–रोंआँ में, नस–नस में आ करेज में चूभेला। इहे कारन बा कि प्रतिक्रिया में, भा अमनख–अभिमान में गीत/कविता में अश्लील शब्दन के मदारी–खेल शुरू हो जाला, नतीजतन शब्दन के आशय में दबल–दुबकल अर्थ–चेतना के चुम्बकीय कूबति मिटिकरि जाले। अइसन गीत/कविता से श्रोता–पाठक के चित्र में जवन घटे लागेला ऊ चित्र समाज में स्त्रैण–चित्र के निर्माण करेला–अनैतिकता के हानिकारक फंगस के फयला देला। ठीक एकरा उलुटा कविता–गीत में उतरल तरल नैतिकता से सींचल गीत/कविता एह गदूस परिधि के लांघि के–अश्लीलता के भटकाव से ऊबरि के शब्दार्थ के शब्द के भीतर गुनगुन अर्थ–स्वर सुनाये लागेला आ कवि–प्रज्ञा ओकरा के ओह सौन्दर्य के चित्र गीत/कविता में उतारेला। ऊ काव्य, गीत कविता नैतिक खिंचाव उत्पन्न करेला जवना में बन्हा के व्यक्ति, परिवार, समाज आ राष्ट्र गर्व महसूस करेला। नैतिकता से सराबोर सौन्दर्य अपना पारस–वर्तुल में समाज के समेटि के कायाकल्प कइ देला।

(घ) बुध्दिजनित सौन्दर्य भा शुध्द बौद्धिक सौन्दर्य–: बौद्धिक सौन्दर्य मानव–जीवन में ओकरा अन्तःकरण के स्मरण चेतना में बहुत गहरा बोध के जन्म देला। ई सौन्दर्य–बोध सीमाहीन प्रकृति के सौन्दर्य के संगे एकाकार करेके कोशिश करे ला। एही बात के श्रीमद्भगवत गीता के शब्दन से समुझल आसान होई– यद्यार्ि भूतिमत्सवं श्रीमदूर्जितमेव वा।

तत्रदेवांवगच्छ त्वं मम तेजों·शसंभवम्।।

तात्पर्य बा कि ए जगत में, जीवन में जहाँ–जहाँ, जवना–जवना वस्तु, व्यक्ति, चर–अचर में सौन्दर्य लउकता ऊ ब्रह्मतेज के व्यक्त सरूप हउवे। एही से मानल गइल बा कि बौध्दिक सौन्दर्य के परत के उधेरल दर्शन के बूता के बात हउवे जवना के

के सारतत्व ई बा कि गोचर सौन्दर्य ब्रह्म के प्रतिरूप हउवे।

(2) रूपवादी विचारकः—रूपवादी सौन्दर्य मानेवाला पछाहीं विचारकन में कांट, हींगल, प्लेटिनस, सेन्ट अगस्टीन जइसन विद्वान लोगन के बहुत बड़ कतार बा। एह लोग के विचार में सौन्दर्य भा सुन्दरता के भाव अथवा भावना अध्यात्म के उपज होला—आने कि सौन्दर्य के चेतना भा बोध एगो अध्यात्म के बहुत गहिड़ अनुभूति हउवे जवना के पइसार आ पसार सृष्टि के अणु—अणु आ कण—कण में बा। एकर संचार सृष्टि के अन्तर्नाद में, छन—छन के थिरकन में, अध्यात्म—द्रष्टा के तीव्र अनुभूति में संभव होला। सौन्दर्य के अनुभूति सत्य आ आनन्द के यात्रा करेले। एह बात के कवि हण्टो सँकरले बाड़े——

'Becase beauty ia nothing but the lovelist form of pleasur.' मतलब ई बा कि हण्टों 'सौन्दर्य के ब्रह्मानन्द सहोदर बनले बाड़े। संसार में उलझल व्यक्ति—मन जागतिक अनुभूतियन से थोक के थोक संस्कार ग्रहण करेला। ओ. करा द्वारा ग्रहण कइल संस्कार चेतना के केन्द्र में चहूँपि के ओकरा समूचा परिधि के घेरिलेला। चेतना के ई केन्द्र उपचेतना के धुंधला (अस्पष्ट) चित्रनि से निरंतर प्रभावित होत रहेला। एही एकट्ठा भइल प्रभाव से मुख्य चेतना के स्थायी भाव के निर्माण होला। इहे स्थायीभाव मुख्य चेतना के गति के—हलचल के नियन्ता बनि जाला, जवन जूड़ि के मानव—मन के समूचा व्यापार रूपात्मक सौन्दर्य के शाश्वत दिशा में कदम बढ़ावेला। एही बात के समुझे—समुझावे खातिर ई विचारक समूह—कांट, हिंगल, प्लेटिनस आ सेन्ट अगस्तिन अनुपात, अ खण्डता, समानुपात आ दीप्ति—के निर्माण कके सौन्दर्य चेतना आ सौन्दर्य—बोध के व्याख्या विस्तार से कइले बा लोग।

(3) भाववादी विचारकः——सृष्टि के बीज—वपन काम के कामना के साथ भइल—'सकामये' 'स ऐक्षत'। एह काम के तीनिगो गति होला—(1)गमन(2)दमन(3)नमन। काम आ अध्यात्म के जटिल आ झड़ीदार संघर्ष—सृष्टि—रचना के संगे—संगे हो गइल रहे। इहे कारन बा कि काम के सिवान लँघला के बाद अध्यात्म के—आनन्द के राज्य में प्रवेश——संभव होला। काम देह के सागर के उफनत ज्वार प· सवार होके ऐन्द्रिक संवाद के पूरा कइके आध्यात्मिक सौंदर्य के ध रातल पर पाँव देबे के जोग होला। भाववादी विचारकन में जर्मन के चिन्तक आ सौन्दर्य—के विश्लेषक पैखनर आ उनुका विचार से एक राय राखेवाला रिचड्र्स आ ग्रान्ट ऐलन के समिलात मत बा कि सौन्दर्य एगो 'जैवियक अभिवृत्ति, हउवे, जबन रागात्मक अनुभूति के अपना अस्तित्व के धरातल बना के कायम रहेले। एकरा अलावे काम—विज्ञान के विश्व विख्यात विचारक फ्रायड के दो टूक कहनाम आ स्थापना बा कि सौन्दर्य स्त्री—पुरूष के कामेच्छा से नाता राखेवाला रति भाव ह·। एह सभ निरूपन, परिभाषा आ विवेचना के सारतत्व निकालल जाउ त कहल जा सकेला कि सौन्दर्य सम्मोहित आ सहज जीवन के एगो स्वभावजन्य वृत्ति ह जवना से परस्पर लगाव, मधुर भावना, राग—अनुराग के कामना आ काम—भावना के जनम संभव होला।

इहाँ—सुन्दरता भा सौन्दर्य के सिलसिला में सहज रूप से जिज्ञासा आ सवाल खड़ा हो जाला कि सौन्दर्य के निवास कहाँ होला? मतलब कि सौन्दर्य कवनो वस्तु में रहेला कि देखेवाला व्यक्ति में। एह विषय में पाश्चात्य विचार आ भारतीय दृष्टि में बहुत बारीक अन्तर रहलो प· मोटा मोटी दूनो के निर्णय एके बिन्दु प ठहरेला। भारतीय विद्वान लोग के निश्चित मत बा कि सौन्दर्य मनुष्य के मानसिक चेतना—जवन—प्रमाता भा द्रष्टा के चेतना होले—के विस्तार कके ओकर भावलोक के संवहन करत हृदय से हृदय के राग के तंतु में बान्धेला आ हृदय के प्रतिबिम्ब बनि जाला। ई निर्विवाद बा कि मनुष्य के अवचेतन अनुभूतियन के कोष ह·। सौन्दर्य एह कोष के अमोल निधि ह·। एह निधि के ओर मनुष्य—मन के खिंचाव स्वाभाविक होला। सौन्दर्य कहाँ होला—वस्तु में कि व्यक्ति में? एकर उत्तर भारतीय दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दन से आँकल—कूतल उचित होई—''सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है। वीर कर्म से पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नहीं वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक कोई पदार्थ नहीं।

पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नहीं वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक कोई पदार्थ नहीं। कुछ रूप—रंग की वस्तुएँ ऐसी होती हैं जो हमारे मन में आते ही थोड़ी देर के लिए हमारी सत्ता पर ऐसा अधिकार कर लेती हैं कि उसका ज्ञान ही हवा हो जाता है और हम उन वस्तुओं की भावना के रूप में परिणत हो जाते हैं। हमारी अंतस्सत्ता की यही तदाकार परिणति सौन्दर्य की अनुभूति है।....हमें तो केवल यही कहना है कि हमें अपने मन का और अपनी सत्ता का बोध रूपात्मक ही होता है।..... किसी वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना से हमारी सत्ता के बोध का जितना ही अधिक तिरोभाव और हमारे मन की उस वस्तु के रूप में जितनी ही पूर्ण परिणति होगी उतनी ही बढ़ी हुई हमारी सौन्दर्य की अनुभूति कही जायेगी। मनुष्यता की सामान्य भूमि पर पहुँची हुई संसार की सभी सभ्य जातियों में सौन्दर्य के सामान्य आदर्श प्रतिष्ठित हैं। सौन्दर्य का दर्शन मनुष्य मनुष्य में ही नहीं करता है; प्रत्युत पल्लव गुंफित पुष्पहास में, पक्षियों के प क्षजाल में, सिन्दुराभ सान्ध्य दिगंचल हिरण्यमे खलामंडित घनखण्ड में, तुषारावृत्त तुंग गिरिशिखर में, चन्द्रकिरण से झलझलाते निर्झर में और न जाने कितनी वस्तुओं में वह सौन्दर्य की झलक पाता है।.....कवि की दृष्टि तो सौन्दर्य की ओर जाती है, चाहे वह जहाँ हो—वस्तुओं के रूपरंग में अथवा मनुष्यों के मन, वचन और कर्म में।''[1] विश्व के प्रत्येक समाज के आदर्श पुरूष अथवा प्रवर्त्तक पुरूष के प्रतिमान मानल जा सक ता। ओह लोग में समय, स्वस्थ, सर्वागपूर्ण सुन्दरता शरीर के सुघराई बाह्य सौन्दर्य के अतिरिक्त आन्तरिक सौन्दर्य में

आन्तरिक सौन्दर्य में दृष्टि रहेले विश्व के हर मानव समाज के आदर्श पुरूष भा प्रवर्तक पुरूष लोग के सौन्दर्य के उदाहरन के रूप में राखल जा सकत बा। संजम, सुडौल शरीर के सुघराई शान्त आ मीठ आवाज आ बाहर के आभामण्डल के अलावे ओह लोग में भीतरी सुघराई –सौन्दर्य–के उदात्त चिन्ह करूणा, शान्ति, दया, पर दुख–कातरता, शील, सुजनता, समता, अहिंसा जइसन सुन्दरता के हीरक–रत्न जगमगात रहेला। असहीं प्रकृति के अवदानन में बाहरी आ भीतरी सौन्दर्य से भरल वस्तु के दिशाईं मानव–चिन्ह में ललक सहज रूप से पैदा हो ला। एगो फूल में–पलाश के आ चंपक–पुष्प में–बाहरी सौन्दर्य त खूब रहेला बाकिर अन्दर के गन्ध रूपी सुन्दरता एकदम ना होखे। बिना गन्ध के फूल देवतो लोग ना ग्रहण करे–''निर्गन्धा इव किंशुका' एही से एह दूनो फूल के देव–पूजन में सामिल ना कइल जाला। खाली उपरी सुघराई–लुनाई देखिके भँवरा फूल प ना मँडराला, ओ फूल के सुगन्ध ओकरा के अपना ओरि खींचेला। सुगन्ध पता देला कि एह फूल में पराग बा। पराग से सौन्दर्य के जनम होला। एह तरीका के शतप्रतिशत–भीतरी आ बाहरी सौन्दर्य के भावसाधना ज्ञान आ विराग–साधना से तनिको ओनइस ना होखे। एह नजर से देखे वाला–द्रष्टा–समूचा सृष्टि में सुन्दरता के फैलाव के अचंभा से देखेला। सौन्दर्य के अइसन भाव–साधना बहुत कोमल आ पाताल–खिल होला।

अब तक सौन्दर्य के विषय में पाश्चात्य विचारक विद्वानन के अवधारणा आ परिभाषा के ऊहापोह आ छानबीन कइल गइल। अब एह प्रसंग में भारतीय मनीषी आ आचार्य लोग के सौन्दर्य के प्रति नजरियो के फटक–पँइच आ जाँच–पड़ताल कइल जरूरी बा जवना से तुलनात्मक नतीजा के जरिए भोजपुरी काव्य में सौन्दर्य–दृष्टि बोध आ दिशा–विस्तार प· गुनन–मंथन करे में सुविधा होई।

जीव मात्र के हृदय के विषय में दावा त ना कइल जा सके बाकी पूरा ताकत से कहल जा सकेला कि मनुष्य के मानस आठो पहर हजारों हजार भावन के हलचल के केन्द्र बिन्दु बनल रहेला। सुन्दर तो ओकरा हृदय के अतिशय कोमल आ राग–रंजित अनुभूति ह· जवना में एकतान तन्मयता के सेतु से आनन्द तक पहुँचल जाला। भारत के चिन्तन में सौन्दर्य आनन्द से ब्रहम तक के परिक्रमा करेला–'लीयते परमानन्दे' के राजमार्ग से। वेद वाङ्मय में सौन्दर्य शब्द के प्रयोग भले नइखे भइल लेकिन एकरा बीज शब्दन के प्रयोग खूब भइल बा। ऋग्वेद में 'रोचषे' शब्द के प्रयोग सुन्दर लागे के अर्थ में भइल बा। 'सामवेदे सहó–गीतेरूपायाः' कहिके प्रकृति के सौन्दर्य के हृदयहारी वर्णन कइल गइल बा। 'प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्'' आ 'अयमग्निः सुवीर्यस्येशे–सौभगस्य' आदि सामवेद वेदन के बाद उपनिषदनो में सुन्दरता के एगो आध्यात्मिक फलक के ओर इशारा कइल गइल बा जवना में पूरा ब्रह्माण्ड के रूपक के द्वारा परमात्मा के रूप–सौन्दर्य के वर्णन बा–'आकाश शरीरं ब्रहम, प्राणारामं, मनानन्दं, शान्तिसमृध्दं इति प्राचीनयोग्योपास्य।' इहाँ ब्रह्म के रूप आ सुन्दरता के समूचा अन्तरिक्ष के रूप में सर्वव्यापकता के रूप में वर्णन करत सौन्दर्य के सृष्टिव्यापी संचरण के वर्णन भइल बा। वेदन से लेके उपनिषद, कल्पसूत्र, गृह्य सूत्रन तक में सुन्दरता के प्रतिपादक आ उत्पादक शब्दन के प्रयोग भइल बा।'' सुन्दर, मनोज्ञ, मंजु, मंजुल, रूचिर, कान्त, शोभन, शोभा, कान्ति–रमणीय, कमनीय, मनोरंजक आदि शब्दन के प्रयोग सौन्दर्य खातिर प्रयोग में आइल बा। संस्कृत के लक्षण ग्रन्थन में आचार्य लोग सौन्दर्य के समान अर्थ वाला शब्दन से सुन्दरता के वर्णन कइले बा। 'वक्रोकि जीवितम्' के रचनाकार आचार्य 'शोभा' के द्वारा सौन्दर्य के ओरि संकेत कइले बाड़े–

साहित्य मनयोः शोभाशालिनां प्रतिकाण्यसौ।/
अन्यूनानतिरिकृत्वमनोहारिण्यवस्थितः ।।17।।

भारतीय काव्य–चिन्तन में अपना उदात्त आभा उँचाई के चोटी प सौन्दर्य अमूर्त्त आ निराकार के प्रतिनिधित्व करेला आ निचला तल प मूर्त्त से उँचाई के यात्रा करत–करत अमूर्त्त रूप में फलदाई बनि जाला। संक्षेप में कहल जा सकत बा कि सौन्दर्य अपना तुरीयावस्था में पूरा खिल जाला–सोगहग बनि जाला। भारतीय चिन्तन में सुन्दरता के स्थूल अंश मनुष्य के मन–चिन्ह के जवना स्तर प, तृप्त करेला ओकरा से जादा तरलता आ संवेदन के गहराई आ–कोमलता के अंश सूक्ष्म सौन्दर्य में तृप्तिकारक होला। एह संदर्भ में सौन्दर्य के दिशाई भारतीय काव्य–दृष्टि के संक्षेप में कहल जा सकता कि सवँसे सृष्टि में ऊ विभु ब्रहम अपना समूचा सौन्दर्य के साथ निवास करत बा। ओकरे सुन्दरता के अणु–कण प्रकृति के अंग प्रत्यंग में घुलमिल गइल बा। काव्य आ काव्यकार अपना अनुभव आ अनुभूति के बल से ओही सौन्दर्य के वर्णन करेला। सुन्दरता के देहजन्य अनादर के जोग सुन्दरता के कँपकँपियो एह सीमा में वन्दनीय बनि जालीस·। सौन्दर्य के जरिए जीवन के सत्य के समझ आ ओह सत्य के आत्मसात् करेके ताकत मिल जाला।

• स्वाध्याय, न्यू एरिया, मोराबादी, राँची (झारखण्ड)

गीत

निर्भय नीर

रहिया निहारत, अंखिया पीराइल।।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।
चइत में चिंता बड़ी,चितवा सतावे।
कवनो संदेशा नाहीं,पतिया पेठावे।।
जोहत–जोहत नैना आस छितराइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।1।।
बइसाख फूले फरे, खूबे फुलवरिया।
बेली चमेली जूही चम्पा चमेलिया।।
गम – गम गमकत बगिया मताइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।2।।
जेठ के गरमिया ई देहिया जरावे।
सांझे फजीरे दुपहरिया सतावे।।
टप–टप चूएला पसेना लसिआइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।3।।
आइल आषाढ़ ऋतु, घेरे घन करिया।
बदरा डेरावे खूबे, चमके बिजुरिया।।
विरही नगिनिया, डंसे बिखिआइल।।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।4।।
सावन पावन बड़ा, होला महिनवा।
झूलुआ लगावे पिया,मन के अंगनवा।।
बरिसत अंखियां से, कजरा धोआइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।5।।
भकसावन भादो बड़ा, लागे संवरिया।
झिंगुरा झनकि बोले, बेंगवा दुअरिया।।
रतिया अंधरिया से, मनवा डेराइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।6।।
चढ़ते कुआरे होला, देवी पूजनवा।
सांझे–फजीरे बाजे, खूबे बजनवा।।
भगति भजनिया में, दियना बराइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।7।।
कातिक मासे खासे होला महिनवा।
छठी पूजा दियरी आ गोधन कुटनवा।।
असहूँ बहिनि–यन के, बजड़ी धराइल।
अइलें ना बालम नेहिया लोराइल।।8।।
अगहन मासे सभे, करेला नहनवा।
डुबूकी लगावे जालें, गंगा जमुनवा।।
असरा के पेन्हल, चुनरी खोलाइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।9।।
पिया बिनु सेजिया ना हमसे डसाला।
तोसक तकियवा भी, पाला बूझाला।।
पूष के सरदिया में, देह कठुआइल।।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।10।।
गछिया रसाई पात, गइलें ललाई।
रितु बसंत माघ, मास बनी आई।
अंग अंग दमकेला देहिया सोंहाइल।।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।11।।
फगुआ में सभकर, तन मन रंगाइल।
चढ़ली जवनिया से, मन बउराइल।।
नीर फिचकारी देवरा, मारि अगराइल।
अइलें ना बालम, नेहिया लोराइल।।12।।

❑❑

❍ एकमा सारण बिहार

बंगड गुरु के मिलली नानी

डॉ. सुमन सिंह

"का बंगड़ भइया,काहें सोकतायिल हउवा।एतरे त एतना चहकेला कि चिरई–चुरुंग फेल।आज काहें उदासल हउवा भाय ?" मिंटू बंगड़ गुरु के आगे–पीछे चलत परिकरमा करत रहलन बाकिर बंगड़ चुप।

"आजकल लगन क दिन ह भइया। एतना सादी–बियाह होत ह कि पापा नेवता–हँकारी करत हलकान– परेसान हो जात हउवन..त ऊ का ह कि जयिसहीं हम दस–बीस गो रुपैया मांगत हईं कि अगियाबैताल नियन सोंटा लेके मारे धउरा लेत हउवन।उधारी एतना चढ़ गईल ह कपारे प कि सोचते घुमटा आवे लगत ह।तनी चाह–पान क मन रहल ह.....।का बतायीं भइया नसा छूटत ना ह अउर नोकरी –चाकरी मिलत ना ह।" मिंटू क सुर में चाशनी भरपूर रहल बाकिर बंगड़ विरक्त।मिंटू के पान–तमाखू क एतना तलब होत रहल कि बंगड़ क चुप्पी उनके बरदास्त के बाहर रहल।

"हऊ नीलुवा कुछो कह देलस हे का भइया?" मिंटू बंगड़ के मन क थाह लिहल चहलन बाकिर बंगड़ मौन–मूक होके चलल चल जात रहलन।

"अच्छा त हमके पहिलहीं अंज़ाद हो गईल रहल ह कि ऊ तोहरे लायक ना हे।जाए दा भइया अइसन कुल आवल–जायल करीहन, मन थोर नत करा।चला तनी चौरसिया के दूकान ओरी...जंहवा मुंह में बीड़ा घुलल कि तहवाँ पीड़ा भुलल..।" मिंटू चौरसिया के दूकान ओरी दू डेग बढ़वलहीं रहलन कि बंगड़ उनकर कालर पकड़ के चार डेग पीछे खींच लियइलन।

"का बे ! हम चुप का हैं कि तुमको सुतार हो गया है। तब ले बकर–बकर किये पड़े हो...आंय।" मिंटू जान गयिलन कि बंगड़ क्रोध में हउवन काहें कि जब बंगड़ क्रोध में रहेलन त खड़ी बोले लगेलन।

"अच्छा जाएदा बंगड़ भइया अब ना बोलब... हमके कुछ काम इयाद आ गईल ह।" मिंटू कालर में कसायिल जात कंठ से मिनमिनात रहलन।

"आछा! तो अब तुमको काम इयाद आ गया ...आंय।जब मुफुत में पान कचरने के फिराक में थे तो काम नहीं आया.. जाओ ससुर हम जानते हैं कि हमहीं केहू के काम आ जाँय त आ जायँ अउरी केहू हमरे काम नहीं आने वाला।देख लिए सबका सेवा–टहल करके... ससुर दू कौड़ी की इज्जत नहीं है घरे –बहरे।" बंगड़ मिंटू क कालर छोड़ के एगो पेड़ के नीचे भुँइयां आलथी–पालथी मार के आसन जमा लिहलन।अब मिंटू फिरो पान–गुटखा के तलब से परेसान बंगड़ के फिकिर में बूड़त–उतरात कहलन– "का भईल भइया... केहू कुछ कह दिहलस ह का?" मिंटू बंगड़ के कान्ही प हाथ ध के दुलार देखावत कहलन।बाकिर बंगड़ चुप आसमान निहारत रहलन।

"भइया हम का कहत हईं कि हमहन के ई इंटर–बीए क पढ़ाई से त नोकरी–चाकरी मिली ना।चला कवनो काम–धंधा खोजल जाय।

"कवन काम करबे बे...।झाड़ू–बुहारू करबे कि तरकारी क ठेला ठेलबे..आंय..।" ओतना देरी में पहिली बेर बंगड़ ठठा के हसलन अउर मिंटू मगन होके स्वास–स्वास में पान–गुटखा क आस धरे लगलन।

"भइया हम का कहत हईं कि चला चलल जाय चौरसिया भइया के दूकान ओरी।चाह –वाह पी के अराम से उंहवे कुछ पलानिंग करेके।" बंगड़ मिंटू क तलब जानत रहलन एहि से ऊ जेतना बार चौरसिया क नाम ले ई टाल जायँ– "उँहा कवन पलानिंग करबे बे ,इंहवे कर।आज हमार मन ना ह ओह ओरी जाये क। सबेरे–सबेरे अइसन काण्ड हो

गईल ह कि दीमाग अबहीं ले ख़राब ह।" बंगड़ माथ प हाथ फेरत कहलन।
"का भयल भइया ?" मिंटू केहू तरे भइया के पटा के पान खायल चाहत रहलन।एहि से उनके झेले खातिर तैयार बइठल रहलन।
"अइसन आज एगो बुढ़िया उल्लू बनवलस हे कि नत पूछ।"
"बुढ़िया ...आंय केकर मजाल ह कि तोहके उल्लू बना दिही।उहो बूढ़ –ठूढ़।"
"अरे का बतायीं रे..।" बंगड़ अफ़सोस करत कहलन
"बतावा न ?" मिंटू क जिग्यासा अब गगन छुवे लगल रहल।
"सबेरे–सबेरे टहरत चौकाघटवा ओरी गईल रहलीं।हऊ जवन ठेकवा ह न सरबवा क ओकरे लग्गे चहुँपलीं त का देखत हईं कि एगो सराबी नसा में धुत्त दुकनिया के समने लोटल रहल।"
"त का ऊ बुढ़िया के तंग करत रहल ?"
"नाही।"
"तब ?"
"हम कुल नौटंकी उंहवे निमिया क पेड़वा तरे ठाढ़ होके देखत रहलीं।"
"त का भयल ?
"चौरहवा किहाँ जवने टेम्पू रुके ओही में बइठल लइकियन के उ सरबिया हाथ में बोतल लहरावत इसारा करे कि आवा पी ला।"
"तब?"
"तब का हमार मन करत रहल कि जायीं दू डंटा मारी ससुर के कुल्ह नसा हिरन हो जाय।"
"त मरला का ?...कहीं ओही बुढ़िया क बेटवा त ना रहल ऊ ?"
"ना "
"काहें, अइसन कुल नसेड़िन के त लोटा–लोटा के कूटे के चाही।" मिंटू हाथ घुमा–घुमा के मारे के मुद्रा आ गईल रहलन।
"अरे हम कुछ करीं–कहीं कि ऊ बुढ़िया अटुववा में से निकल के बहरे आईल अउर सरबिया ओरी जाए लगल।हमके लगल कि सरबिया के मारे जात हमहूँ पाछे –पाछे धउर अयिलीं।"
"फिर?"
"फिर का,ऊ काण्ड भईल कि अबहीं ले हमार रोवां खड़ा हो जात ह।"
"अइसन का भईल ?" मिंटू मुँह फड़ले बंगड़ ओरी से कवनो धमाका क इंतज़ार करत रहलन।
"अरे का बतायीं।जब बुढ़िया सरबिया के लग्गे चहुँपल त सरबियो चिहा के ओके ताके लगल।हमहूँ क्रोध में रहलीं।बुढ़िया कुछ बोले ऐसे पहिले हमही सरबिया के गारी–फक्कड़ देवे लगलीं।"
"ठीके त कइला।बुढ़िया खुस हो गईल होई ? "
"ना यार।कुल उलटा हो गयल?"
"अइसन का भयल भइया ?"
"अरे जयिसहीं हम सरबिया के मारे खातिर थपरा तनलीं कि बुढ़िया तड़ से मारत त बा एहि गाल प।" बंगड़ आपन दायाँ गाल आगे बढ़ा के मिंटू के देखवलन।
"ओह ..बाकिर मरलस काहें ? "
"थपरा मार के कहलस कि जब दू घोंट पिए के फीरी (फ्री) में मिलत रहल ह त तू काहें लंगड़ी मरले ह मुंहफुकना।"
"आंय.. का बात भइया गज़ब... अरे कास कि हमहूँ रहल रहतीं उँहा।मज़ा आ जात गुरु ,एक बंगड़ के संगे दोसर बंगड़ क बंगड़ई देखे के मिलत।हम का कहत हईं भइया कि जरूर ऊ कवनो जमाने में तोहार नानी रहल होइहन।एके कविता में अइसे कहल जा सकता ह , बंगड़ गुरु के मिललीं नानी , कुल बंगड़ई हरलीं नानी।' मिंटू ठठा के हँसत रहलन।एह आनंद के आगे ऊ पान–तमाखू क तलब भुलाय गयल रहलन।

❑❑

❍ वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

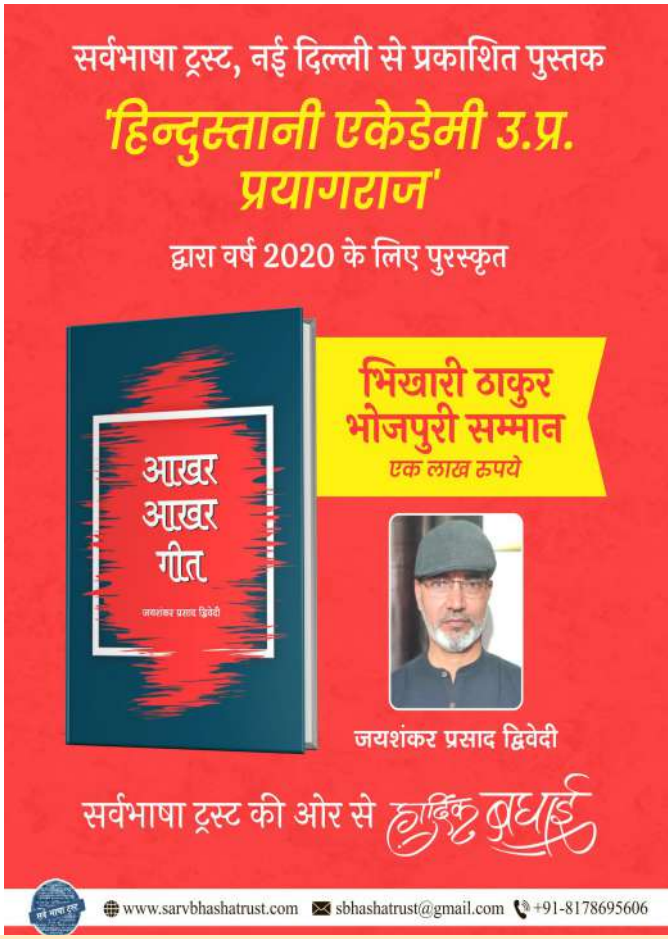
सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक
'हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज'
द्वारा वर्ष 2020 के लिए पुरस्कृत
आखर आखर गीत
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
भिखारी ठाकुर भोजपुरी सम्मान
एक लाख रुपये
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सर्वभाषा ट्रस्ट की ओर से हार्दिक बधाई
www.sarvbhashatrust.com
sbhashatrust@gmail.com
+91-8178695606

S.R Group
Shri Ram Associates
बुकिंग मात्र 11000 में
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के श्रेष्ठ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600 | चार बरिस : 2100 | आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।